॥ श्री ॥

20
6-19

# लावनी ब्रह्मज्ञान

जिसको

श्री १०८ काशीगिरि बनारसी परमहंस आरके हक्कानी ने बनाया जिसमें इश्क मार्फत मतलब तौहीद की लावनी ऐसी ऐसी हैं कि जिनके पढ़ने से ज्ञान व भक्ति दोनों प्राप्त होती हैं।

वैश्नव शैव शाक्तादिक भक्तों के प्रिय होने के कारण

गोवर्द्धन पुस्तकालय ने

बम्बई अक्षरों में

छपाकर

प्रकाशित किया।

तृतीयबार | सन् १९५० | मूल्य ४)

# ❀ भूमिका ❀



कोई इसको लावनी कहते हैं और कोई मरहटी वा ख्याल कहते हैं असल में इसका बनाना और गाना दक्षिण से उत्पन्न है और इसके दो कर्त्ता हुये एक का नाम तुकनगिर और दूसरे का नाम शाहअली था। उन्होंने दो मत खड़े किये तुर्रा और कलंगी। तुकनगिर तुर्रे को बड़ा कहते हैं और शाहअली कलंगी को बड़ा रखते थे, आपस में विवाद किया करते थे और अपना पंथ उन्होंने चलाया यहां तक कि आज-ताईं उनके मतवाले बहुत से लोग इस देश में भी बनाते गाते हैं उनमें पढे लिखे भी हैं परन्तु बड़ा अफसोस है कि गाली गुफ्ता बकते हैं, इस कदर से कि आपस में लड़ भी पड़ते हैं। इसी सबब से इसको कोई भला आदमी पसन्द नहीं करता है और मैं भी इसी विषय में बाल अवस्था से मशगूल था जब ईश्वर ने मेरे ऊपर अपनी कृपा करी तो इस पाप से मुझको छुड़ाया और फकीर बनाया, अपना जलवा मुझको दिखलाया उसको देखते ही वह मस्ती का आलम हुआ कि आली आली मजमून नजर आने लगे तो मैंने अपने दिलमें यह विचारा कि तू इसी लावनी से भगवत् आराधना कर तो उर्दू बोली में मैंने इश्कमारफत मतलब तौहीद और हिन्दी में उपासना ब्रह्मज्ञान को कहा इस वास्ते कि जो कोई इसके असल मतालिब

को पायेगा वह जीते ही जी उसमें मिल जायेगा और वही ईश्वर मेरे दिलमें बैठ के ये सब बातें बनाता है मैं कुछ पढ़ा लिखा नहीं परन्तु जो कोई इसके मजमून को सुनते हैं वह जाय तअज्जुब समझते हैं और पसन्द करते हैं। इसी सबब से मैंने थोडी सी लावनी छपवाई हैं कि जिसमें सब अमीर व गरीब पढ़ें और इसको समझें और जो कोई इसको अपनी तबीअत लगा के पढ़ेंगे तो उनका भला होगा।

❀ दो पदी ❀

जो कहता हम करते वो दुःख भरता है।
जो करता जगके कार वही करता है॥
श्रीमत्काशीगिरि बनारसी परमहंस आशाके हक्कानी॥



शिव धारें भस्मी माथे पर श्री कृष्ण के केसर भाल ।।
रमा को सोहैं वह भूषण दिव्य गवर के लपटे व्याल ।
चार वेद चारों की अस्तुति करें न पावें पार रती ।।
एक अंग में रूप हैं चार ये वर्णन करैं यती ।
श्रीकृष्ण के शंख हाथ में शिवजी करमें लिये कपाल ।।
रमा बजावें वो चुटकी गौरी दो करसे दें ताल ।
मन मोहन की मुरली बाजे शिवका डमरू बजे धमाल ।।
गौरके माथे पै चन्दन रक्त रमा के बिन्दी लाल ।
शिव योगी हरि ब्रह्मचारी लक्ष्मी कुँवरी और गौर सती ।।
एक अंग में रूप हैं चार ये वर्णन करें यती ।
श्री कृष्ण के चक्र सुदर्शन शिवजी करमें लिये त्रिशूल ।।
पार्वती के हाथ में खड्ग रमाके कमल का फूल ।
देवीसिंह ने कहा ख्याल यह वेद पुराणों के अनुकूल ।।
बनारसी के छन्द में कभी न हरगिज निकले भूल ।
जो इस पदको सुने औ गावें उसकी हो जाय तुर्त गती ।।
एक अङ्ग में रूप हैं चार ये वर्णन करैं यती ।

## हरिहरात्मक मूर्ति–बहेर जीकी

श्रीकृष्ण शिव एक रूपहैं रहते एकी संग, हरि हर दोनों हैं अर्द्धंग भला । आधा अंगहै श्रीकृष्ण का आधा शिवका जान, कहा ये परम पुरातन ज्ञान भला ।। कृष्ण करैं शिवका स्मरण शिव धरें कृष्णका ध्यान, आत्मा एक, एक स्थान भला ।

दोहा–शिवजी साधें योग, कृष्णजी करते भोग विलास । योग भोग दोनों एकी दोनोंका ब्रह्म में वास ।। वह पहिने भूषण वह रहेंनंग भला । कृष्ण पढ़ें गीता और शिवजी पढ़ें आप

वेदाँत, वो करते क्रोध वो रहते शांत भला।। कृष्ण करैं क्रीड़ा ब्रज में शिव रहैं सदा एकान्त, दोनों की सुन्दर शोभा कान्ति भला ।।

दोहा—शिव का सुमिरण करते करते कृष्णजी होगये श्याम ।। शिवजी होगये श्वेत जपा करते हैं कृष्ण का नाम ।। ऐसा नहीं कोई का सत्संग भला ।। कृष्ण बजावें मुरली मुखधर शिवजी गाते गान । निकले दोनों में एकी तान भला ।। कृष्ण भरैं भंडार जगत के शिव देते वरदान, करैं दोनों जिनका कल्याण भला ।।

दोहा—कृष्ण करैं वैराग तीव्र और शिव धारैं सन्यास । वो उनके सेवक हैं और वो हैंगे उनके दास ।। करैं राक्षसोंका दोनों ढंग भला ।। कृष्ण सोवतं शेष की सेज्या पर करके आराम, करें शिव मशान में विश्राम भला । कृष्ण करैं शिवकी सेवा शिवकरैं कृष्णका काम ।। रटो दोनों थाम भला।।

दोहा—शिव पूजें विष्णु के चरण करैं कृष्ण लिंग पूजा । हरी हरातम है यक मुरती और नहीं दूजा । उनके शिर मुकुट उनके शिर गंग भला ।। त्रयी गुण से शिव रहित कृष्ण हैं तीन लोक से परे, भजो चाहे हरि भजो चाहे हरे भला। शिव ने त्रिपुरासुरको मारा कृष्ण ने कौरव मारे, ये दोनों काऊ से नहीं डरें भला ।।

दोहा—शिवके संग रहैं सदा योगिनी और भूत बैताल ।। कृष्ण लिये ग्वालनी संग में ब्रज के सारे ग्वाल वो पीते दूध वो पीते भंग भला । कृष्ण बने गौरीजी शिवजी बने लक्ष्मी आप । न उनको पुण्य न उनको पाप भला । कृष्ण हरैं बाधा तनकी शिव दूर करैं संताप, मेरा मनदोनोंमें रहा व्याप भला ।।

दोहा—कृष्ण बने नन्दीगण शिवजी गरुड़ रूप लें धार ।।

वो उन पर बैठे और औ होते उन पर असवार ॥ ये दोनों एक हैं और बहु रङ्ग भला ॥ कृष्ण पारथी पूजैं शिवजी पूजैं शालिग्राम । बना दोनों का सुन्दर धाम भला । शिव की काशी बनी बना श्रीकृष्ण का गोकुलग्राम । देवीसिंह दोनों का ले नाम भला ॥

दोहा—शिव का शिवाला बना कृष्ण का है ठाकुरद्वारा । बनारसी ये कहैं मुझे दोनों का नाम प्यारा । उठैं हैं मनमें यही तरंग भला ।

## लक्ष्मी गौरा का—अभेद छन्द ।

वोही लक्ष्मी वही गौरा जो चार वेद में देखा । शक्ति है एक जुदे दो वेष भला ॥ विष्णु के संग रहै सदा लक्ष्मी शिव के सङ्ग पार्वती । लखी नहिं जाय दोनों की गती भला ॥ लक्ष्मी के पति इन्द्रजीत हैं गौरा के पति यती । लक्ष्मी कुँवारा गौरा सती भला ॥

दोहा—लक्ष्मी को चढ़ैं पुष्प और गौरा को चढ़ैं बेलपती । उनकी बुद्धि निर्मल है और है उनकी मती सुमती ॥ रूप दोनों का अलख अलेखा भला । लक्ष्मी के मस्तक पर सोहै सुन्दर बेंदी भाल । गौरी के मस्तक चन्द्र विशाल भला ॥ लक्ष्मी के उर पड़ा हार है जिसमें मोती लाल । गौरी के कंठ मुंड की माल भला ।

दोहा—लक्ष्मी के दोनों करमें हैं कड़े जड़ाऊ पड़े । गौरी के कर सोहैं कंगन दोनों के भाग हैं बड़े ॥ लिखी विधना ने ऐसी रेख भला लक्ष्मी सेवक हैं सो सब करत सुन्दर भोग ॥

गौरी के सेवक साधें योग भला ॥ लक्ष्मी को जो सुमरे उसको कभी न व्यापे सोग । गौरि को भजे सो रहे निरोग भला ॥

दोहा–क्षीरसिंधु में बसे लक्ष्मी नारायण के पास ॥ गौरि बसे शिव सङ्ग जहाँ सुन्दर पर्वत कैलाश । भक्तजन लेते उन्हें परखैं भला ॥ लक्ष्मी का शीतल स्वभाव है जल और चन्द्रमा जान । गौरि को समझोअग्नि भानु भला ॥ लक्ष्मी के हैं पास में हीरे लालमोतिन की खान । गौरि की विभूती है धनवान भला ॥

दोहा–लक्ष्मीमेंबसें गवर,गवरमेंकरैं लक्ष्मी वास । सुनो इधर धर ध्यान तुम हमसे इनकी उनकी रास ॥ है उनकी कुंभ और उनकी मेष भला । श्रीलक्ष्मी पहने तनुके ऊपर बस्तर लाल ॥ गवरजा ओढ़ रहीं मृगछाल भला । कहीं भार्या बनी कहीं जननी हो करैं प्रतिपाल ॥ बनी कहीं अन्त काल का काल भला ॥

दोहा–ब्रह्मा लिखते थके शेषजी ने नहिं पाया पार । बनारसी ये कहैं कहूं मैं कहाँतलक विस्तार,मुझे दोनोंकी भक्ति विशेष भला

## ख्याल अद्भुत—बहेर जी की

जो चाहे सो करै प्रभु उसकी गति लखी न जाय । कर्म के लिखे को देय,मिटाय जी ॥ कितने ही मरगये तो उनको पलमें दिया जलाय । कालको देखै कालैखायजी॥लूला चढै पहाड़के ऊपर बिना पौरुष से धाय । एक तृणामें त्रैलोक समायजी ॥ सेतु बांधके समुद्रमें हरि पत्थर दिये तराय । कर्म के लिखे को देय मिटाय जी ॥ मूरख चातुर को देता एक पलमें वेद पढ़ाय, जिये औ सदा जोविष को खाय जी । मीन धूप में मगन रहे नहीं पानी उसे सुहाय ॥ कहो कोई इसके अर्थ लगाय जी । लोहा कंचन बने जो उसको पारस देव छुवाय.कर्म के लिखेको

देय मिटाय जी ॥ विधवा होय सुहागिन उपजे पुत्र तो करै सहाय । आग को पानी देय जलायजी ॥ भूखा भोजन नहीं करे और पेट भरा सब खाय। शेर को भेड़ी देय भगायजी ॥ भृंगी कीड़े को अपने सम लेना आप बनाय ॥ कर्म के लिखेको देय मिटाय जी । मार्कंडेयजी बारा बरसकी आपे उमर लिखाय । लिखी विधना ने बहुत चितलायजी । सो तो होगये चिरंजीव मैं सत्य सत्य कहूं गाय ॥ प्रभूके आगे कर्म लजायजी । बनारसी कहै नर से प्राणी नारायण होजाय । कर्म के लिखेको० ॥

## सिद्धान्त-बहेर जीकी

चार फरिस्ते हुकम में हाजिर रहैं मेरे दरबार । लिये वो चार चार तलवार जी ॥ जिधर इसारा करूँ उधर दल डारें मार । करें वो दुष्टों को मिसमारजी ॥ आंख उनकी लाल बनी रहैं उतरे नहिं खुमार । है ताकत उनमें बिना सुमारजी ॥ कोई न पापी बचैं जड़ें जिस वक्त वो कालिलवार, लिये वो चार चार तलवार जी । कोई अमर छेड़े औ करै कुछ मुझ से दारोमदार ॥ दिखावें उसीको वोः फिर दार जी । हत्यारों का तन से शिर करदें दम्में नादार ॥ हुकुम ये है दावरदादारजी । मशरिक से मगरिब तक घुमें चारों तरफ वो चार लिये वो चार चार तलवारजी । कोई नहीं जीते उनसे जो लड़े सो जावै हार। करै वो चारों तरफ गोहारजी ॥ जिस जिसको वो मारें उसका कर डालें आहार । चोट उनकी क्या सके सहारजी ॥ एक हाथ से काटैं वह काफिर की लाख तरवार ॥ लिये वो चार चार तल-वारजी । नाम एक का सुनो शनिश्चर दूजे मङ्गलाचार॥तीसरेको समझे एतवार जी । एक बृहस्पत सदा सुखी रहैं मेरे चार यार ।

उतारें कुल पृथ्वी का भार जी। मेरे कहे से दुर्बुद्धि का कर डालें संहार। लिए वो चार चार तलवारजी ॥ कांप उठें आसमां जिस घड़ी मारें वह किलकार। मरें सब दुनियाँ के मक्कारजी॥ बनारसी कहैं तीनलोक में मचै वह जयजयकार। बचै नहिं कोई भी बदकार जी ॥ सत युग को दे राज और कलयुग को डारे फटकार। लिए वह चार चार तलवार जी।

## श्रीकृष्ण के लट की स्तुति।

श्री गिरिधर ने लट काली लटकाली आनन पर आला। अति विचित्र लटकी लटक लटक कर अमृतरस को चाखें। ज्यों सर्प ओस जिह्वा से चाट के प्राण को अपने राखें ॥ शशि मंडल की सी शोभा उपमा वेद भी ऐसी भाखें। राधे सखियन से कहै घूमकर मन को मेरे सुलाखें।

तोड़ा—मोहनी अलकन में बसी-छवि भाँति-भाँति की फँसी। मानो बने कृष्ण महेश पहनकर नागन की सी माला। श्री गिरिधर ने०॥ कोई बांबी में से लपक चलें कोई गिड़ली मार के बैठे। कोई उगल के मन को खड़े और कोई संगनारके बैठे कोई फन से फुफकारें और कैंचली उतार के बैठे। मानों विष भरे भुजङ्ग वह मलयागिरि विचार के बैठे॥

तोड़ा—कोई श्वेत लाल कोई पीले रङ्ग रङ्ग के सर्प रंगीले। रोली केशर चंदन से चर्च के अद्भुत रंग निकाला। श्रीगिरिधर॥ उपमा एक और कहूं जो सुनो कोउ कवि से कही न जावै। मानों कजली वन से सुगन्ध नाना प्रकार की आवै॥ एक तो मन उलझा काव्य में दूजे कृष्ण की लट उलझावै। जो कुञ्ज कुञ्ज में परदेशी भूला नहिं रस्ता पावै।

मोड़ा--हरिकी लट भूलना वीरा-भूले ब्रजके नरनारी। जो प्रेमजाल में फँसा वहीं वह बसा न गया निकाला। श्रीगिरिधर ने०॥ अति उत्तम छवि अलकन की सुन्दर श्याम घटा दरसे। जब कृष्ण करें स्नान तो मोती झूम झूमकर बरसें॥ वो घूंघरवारे केश छाये चहुं देश बसे अम्बर से। स्तुति कर करके थके शेष और महिमा को जी तरसे॥

तोड़ा—जो इस पद को कोई गावै॥ वह मुक्ति सब पावै॥ कहै बनारसी भज राम कृष्ण गोविन्द और श्री गोपाला। श्री गिरिधर ने लटकाली लट काली आनन पर आला॥

## ख्याल—अधर।

कान्हा ने लट लटका के लटका लटका नया निकाला। श्रीकृष्ण की अलकें अलख केश से शेष लजत धरणीधर। घन घटा देखकर घटत निशा अति छकत कहत धरणीधर॥ काली काली लट कला करैं चित हरत तकत धरणीधर। रसना सहस्र से रटन रटन दिन रात थकत धरणीधर॥

तोड़ा—करसे गहकर छिटकाई-नागि देख लहराई। काली ने शंका-खाई-लेखना लिखना लिखत अलख जद दिखत कृष्ण की आला। कान्हाने०॥ दृग चञ्चल चतुर हरीके, नेत्र लागत खंजनते नीके। करें लहर लकीरें लाल लगत कारे अंजनते नीके॥ गड़ गये कलेजे आय धायके चन्द्रकिरण तैं नीके। रस सागर ते अति सरस हरन चित लगत हरिन ते नीके॥

तोड़ा—शैर चलत नेत्रते तीखे जद लड़त दृगनते दीखे। हरि चरित्र कैसे सीखे॥ कसकत हिरदे दिन रैन नयनते ऐन कलेजे शाला। कान्हा ने०॥ आनन का षटदश केला छिनते हीरे

लाल लजाये । दर्शन कारण षट् दर्शन आसन त्याग त्यागकर आये ॥ शङ्कर इन्द्रादिक सहित चरण नङ्ग कर करके धाये । श्रीकृष्ण की लीला देख छन्द आनन्द से कथ कथ गाये ॥

तोड़ा—तन चन्दन हार चढ़ाये—अक्षत ले शीश लगाये । हिरदे चरणन चित लाये ॥ नन्दलाल कंस के काल काट दिया अन्धकार का ताला । कान्हा ने० ॥ हर निरधार चार कर त्रयी ताल के करता । षट् राग तीस रागिनी नारायण तीन तालके करता ॥ हैं सच्चिदानन्द आनन्द काल कालके करता । है आदि अनादि अगाध कृष्ण अक्षय अकाल के करता ॥

तोड़ा—कहे काशीगिरि हरि हर हर—दिन रैन ध्यान हिरदय धर । रज चरणन की अंजन कर ॥ कहा अधर छन्द धर ध्यान ज्ञान दे दान नन्द के लाला । कान्हा ने० ॥

## श्रीकृष्ण के विश्वरूप की मूर्ति ।

नन्दनंदन ब्रजराज की छवि अब कोटिन भानु प्रकाश करें । उदित करें चन्द्र कोटिन और कोटिन तम का नाश करें ॥ कोटिन शीश नेत्र कोटिन अरु कोटिन कर्ण हरी के हैं । कोटिन हैं नासिका हरी की कोटिन वर्ण हरी के हैं ॥ कोटिन मुख कोटिन जिह्वा कोटिन गति शरण हरी के हैं । कोटिन भुजा उदर कोटिन अरु कोटिन चरण हरी के हैं ॥

शैर—कोटिन हरी के मुकुट हैं कोटिन हैं तिलक भाल । कोटिन हरी के कण्ठ हैं कोटिन हैं मुक्तामाल ॥ कोटिन मणी हरी की हैं कोटिन हरी के लाल । कोटिन हरी के भाव हैं कोटिन हरी की चाल ॥ कोटिन पग पाताल छुवे अरु कोटिन आश अकाश करें । उदित करें० ॥ कोटिन नाम हरी के हैं

और कोटिन गाम हरी के हैं। कोटिन कर्म हरी के हैं और कोटिन काम हरी के हैं ॥ कोटिन ग्राम हरी के हैं और कोटिन धाम हरीके हैं। कोटिन शैव हरीके हैं और कोटिन बाम हरीके हैं ॥

शैर-कोटिन हरी के वेद हैं कोटिन हरी के मन्त्र। कोटिन हरी के शास्त्र हैं कोटिन हरी के तन्त्र ॥ कोटिन हरी की पूजा हैं कोटिन हरी के यन्त्र। कोटिन से हरी अन्त्र हैं कोटिन से हैं निरन्त्र। कोटिन को सुख देंय हरी कोटिन के मन में भास करें। उद्दित करें० ॥ कोटिन इन्द्र हरी के हैं और कोटिन राज्य हरी के हैं। कोटिन हैं गन्धर्व हरी के कोटिन साज हरी के हैं ॥ कोटिन माया हरी की हैं कोटिन समाज हरी के हैं। कोटिन मित्र हरी के हैं कोटिन सुहजात हरी के हैं।

शैर—कोटिन हरी के गज हैं और कोटिन खड़े तुरङ्ग। कोटन हरी के रथ हैं और कोटिन हैं रथ के संग ॥ कोटिन हरी के वेष हैं कोटिन हरी के रंग। कोटिन हरी की लहर हैं कोटिन उठैं तरङ्ग ॥ कोटिन हरी वैकुण्ठ करैं चाहै कोटिन कैलास करें। उद्दित करें० ॥ कोटिन हैं गोपिका हरी की कोटिन ग्वाल हरी के हैं। कोटिन धेनु हरी की हैं कोटिन गोपाल हरी के हैं। कोटिन सिन्धु हरी के हैं और कोटिन ताल हरी के हैं। कोटिन रत्न हरी के हैं और कोटिन थाल हरी के हैं ॥

शैर—कोटिन हरी के दैत्य हैं कोटिन हैं देवते। कोटिन हरी के नाम को मुख से लेवते ॥ हरी की नाव हैं कोटिन कोटिन हैं खेवते। कोटिन हरी के चरण को हैं करसे सेवते ॥ देवीसिंह कहै बनारसी के घट में हरी निवास करें। उद्दित० ॥

## श्रीसीताजी के वियोग में—बहेर लंगड़ी।

श्रीसीताजी के वियोग में भये राम दुर्बल तन छीन। निर्बल होयकें लड़े रावण से प्रेम के प्रभु आधीन ॥ उठें तौ काँपें चरण खड़े होवें तौ लरजै सकल शरीर। धनुष वह तानें तौ छुटै चुटकी से धीरज में तीर ॥ क्रोध से काँपें तीनलोक और जरे राक्षसन की सब भीर। रावण मन में डरै देखै जो क्रोधित श्री रघुवीर ॥

शैर—प्रथम तो उनका राज पाट योग में छूटा। औ खानो पान सिया के वियोग में छूटा ॥ अवध का वास गया तात स्वर्ग को पहुँचे। भरत का साथ भी देखो वो शोग में छूटा ॥ शरीर तौ पींजर सब बन गया मन रह सीता में लवलीन। निर्बल० ॥ दिवस को होय संग्राम निशा को करे कहौ किस विधि हरि शैन। मुख ढांपें तौ झरें झरना से प्रभु के वह दोउ नैन ॥ करें जो मुख से बात तौ निकलें जिह्वा से कुछ के कुछ बैन। लषण सुनें तौ लख प्रभु वियोग में हैं अति बेचैन ॥

शैर—यह कष्ट देखके लक्ष्मण ने वो विचार किया। मरैगा कल वह रावण मिलेगी आन सिया ॥ काल के वश है वोही जो कि प्रभु से झगड़ा। हमारे राम से लड़कर ये जग में कौन जिया ॥ दुर्बल भये तो मन नाहिं हारा याहीते देह सब छीन। निर्बल० ॥ भोर होत मुख धोय किया जब रामचन्द्रजी ने स्नान। पूजन विधि से करी फिर उठा लिया वह धनुष औ बान ॥ चले साथ देखने युद्ध लछमन भ्राता और श्रीहनुमान। पहुँचे रण में जहाँ रथपर बैठा रावण बलवान ॥

शैर—राम को देखके रावण ने धनुष को ताना। औ मारे पांच बाण तब ये राम ने जाना ॥ है इसकी आज मौत ...

ने इनको घेरा। रामजी ने भी अपना धनुष संधाना ॥ अङ्ग तो दुर्बल थाई पर सीता की शक्ति थी परवीन। निर्बल० आसौज का था मास और वह शुक्लपक्ष दशमी का दिन। राम औ रावण के उस दिन चले बाण कोटिन गिन गिन ॥ रावण के बाणों को राम काटें तृण वत पल पल छिन छिन। रावण के शिर कटें उपजें इतने में छिप गया दिन ॥

शैर—हृदय में अपने वह रखता था ध्यान सीता का। सो उसके मन से गया पल में ज्ञान सीता का ॥ उसी समय में वह मारे जो बाण दश प्रभु ने। रहा इस जगत में देखो वह मान सीता का ॥ काट के उसके दशों शीश फिर अपने ही में कर लिया लीन ॥ निर्बल० ॥ गिरा वह रथ से पृथ्वी पर तो कहा कहाँ है कहाँ है राम। इस कारण से मिला वह अन्त समय में उत्तम धाम ॥ किसी बहाने अन्त समय में राम राम का कहै जो नाम। कहै देवीसिंह मिले वह राम में और पावे आराम ॥

शैर—यह छन्द राम का अपने जो मुख से गावैगा। तरैगा वह भी इसे जो सुनै सुनावैगा ॥ यह पूरी होगई रावण के मारने की कथा। वोही समझैगा इसे जो कि लव लगावैगा ॥ रामचन्द्र ने लेकर सीता लङ्क विभीषण को देदीनी। निर्बल०॥

## स्तुति शिवजी के त्यागकी-बहेर खड़ी।

धन धन भोलानाथ तुम्हारे कौड़ी नहीं खजाने में। तीन लोक बस्ती में बसाये आप बसे वीराने में ॥ जटा जूट का मुकुट शीश पर गले में मुण्डों की माला। माथे पर छूटासा चन्द्रमा कपाल का कर में प्याला ॥ जिसे देखकर भय व्यापै

सो गले बीच लिपटा काला । और तीसरे नेत्र में तुह्मारे महा प्रलय की हैं ज्वाला ॥ पीने को हरवक्त भांग और आक धतूरा खाने में । तीन लोक० ॥ चर्म शेर का वस्त्र पुराना बूढ़ा बैल सवारी को । तिस पर तुह्मरी सेवा करती धन धन गौर विचारी को ॥ वह तो राजा की व्याही गई भिखारी को । क्या जानें क्या देखा उसने नाथ तेरी सर्दारी को ॥ सुनी तुह्मारे व्याह की लीला भिखमङ्गों के गाने में । तीन लोक० ॥ नाम तुह्मारे अनेक हैं पर सबसे उत्तम है नङ्गा । याही ते शोभा पाई जो विराजती शिर पर गंगा ॥ भूत प्रेत बैताल साथ में यह लश्कर सब चंगा । तीन लोक के दाता होकर आप बने क्यों भिखमंगा । अलख मुझे बतलाओ मिलै क्या तुमको अलख जगाने में । तीनलोक० ॥ यह तो सगुण का स्वरूप है निर्गुण में निर्गुण हो आप । पल में प्रलय करौ छिन में रचना तुम्हें नहीं कुछ पुण्य न पाप ॥ किसी का सुमिरन ध्यान न तुमको अपना ही करते हो जाप । अपने बीच में आप समाये आपी आप में रहे हो व्याप ॥ हुआ मेरा मन मगन यह सिठनी ऐसी नाथ बनाने में । तीन लोक० ॥ कुबेर को धन दिया और तुमने दिया इन्द्र को इन्द्रासन । अपने तनपर खाक रमाई नागों के पहने भूषण । मुक्ति कि भुक्ते दाता हो मुक्ति भी तुह्मारे गहे चरन । देवीसिंह कहै दास तुह्मारा हित चित से नित करे भजन ॥ बनारसी को सब कुछ बख्शा अपनी जबां हिलाने में । तीनलोक० ॥

## ख्याल शिवजी का निर्गुण-बहेर खड़ी ।

शिवजी तो कुछ सूम नहीं जो धन को धरें खजाने में ।

सारी वसुधा बाँट दई मशहूर है यही जमाने में ॥ राई भर चाँदी नहिं सोना हीरे मोती लाल नहीं । जिह्वा से सब कुछ देदें जिसको वह हो कंगाल नहीं ॥ बिभूति में जो कुछ उन के वह कुवेर घर माल नहीं । दीन के ऊपर दया करें कोई ऐसा दीन दयालु नहीं ॥ भागीरथ को गंगा देदी मुक्ति मिली नहाने में । सारी वसुधा० ॥ १ ॥ बेद न जाने भेद कुछ उनका पुरान पावे पार नहीं । शास्त्र न जाने गति कुछ उनकी शिवसा कोई अपार नहीं । जहँ पर है उनका आसन्न वहाँ किसी का विस्तार नहीं । रवि शशि अग्नि पवन भी तो कोई उनके पहुंचे द्वार नहीं ॥ निर्गुण में तो ब्रह्म वोही हैं सगुण हैं लिंग पुजाने में । सारी वसुधा० ॥ २ ॥ तीन लोक के बीच में कोई नहीं है ऐसा वरदानी ॥ कोई नहीं योगी ऐसा औ कोई नहिं ऐसा ध्यानी ॥ भिक्षुक वेष न देखो उनका वह स्वरूप है निरवानी ॥ सर्प न लिपटे जानो तन में यह तो भक्त सब है ज्ञानी ॥ खुले आंख जब भीतर की तब आवे दरशन पाने में ॥ सारी वसुधा बांट दई मशहूर है यही जमाने में ॥ ३ ॥ निन्दा में स्तुती करे तो इसी में वह होते हैं मगन ॥ रूप अमंगल मंगलदायक उनका तो उलटा है चलन ॥ प्रेम से उसको गाली दो तो उसी को समझे हैं भजन ॥ जो कोई उनको जहर चढावे उसीको वह देते अन धन ॥ और कुछ उनको ख्वाहिश नहिं वह मगन हों गाल बजाने में ॥ सारी वसुधा बांट दई मशहूर है यही जमाने में ॥ ४ ॥ शीश न उनके लिंग न उनके चरण न उनके औ सब है । ऐसा कोई विरला जन जान उसे नहीं व्यापे फिर भय ॥ देवीसिंह यह

कहै अरे नर कहु तू मुख से शिव जय ॥ बनारसी जय जय करने से शिवस्वरूप में होगया लय ॥ राजा हिमाचल दंग होगये पारबती व्याहने में ॥ सारी वसुधा बांट दई० ॥

## शिवजी का बाँटना—बहेर खड़ी ।

धन धन भोलानाथ बाँट दिये तीन लोक इक पलभर में ॥ ऐसे दीन दयालु हो दाता कौड़ी नहीं रखी घर में ॥ प्रथम दिया ब्रह्मा को वेद वो बना वेद का अधिकारी । विष्णु को देदिया चक्र सुदर्शन लक्ष्मी सी सुन्दर नारी ॥ इन्द्र को देदी कामधेनु और ऐरावत सा बलकारी । कुबेर को सारी वसुधा का कर दिया तुमने भंडारी ॥ अपने पास पत्र नहीं रक्खा रक्खा तो खप्पर करमें । ऐसे दीन दयालु हो दाता कौड़ी नहीं रखी घरमें । अमृत तो देवतों को दिया और आप हलाहल पान किया ॥ ब्रह्मज्ञान देदिया उसे जिसने कुछ तुम्हारा ध्यान किया । भागीरथ को गंगा देदी सब जगने स्नान किया ॥ बड़े बड़े पापियों का तुमने एक पल में कल्यान किया ॥ आप नशेमें चूर रहो और पियो भांग नित खप्पर में । ऐसे दीन-दयालु हो दाता कौड़ी नहीं रखी घर में ॥ रावण को लंका देदी और बीस भुजा दश शीश दिये । रामचन्द्र को धनुष बाण वो तुमहीं जगदीश दिये ॥ मन मोहन को मोहनी देदी और मुकुट तुम ईश दिये । मुक्ति हेतु काशी में बास भक्तों को बिस्वा बीस दिये ॥ अपने तनुपर वस्त्र न राखो मगनरहो बाघम्बर में । ऐसे दीनदयालु हो दाता कौड़ी नहीं रखी घरमें ॥ नारद को दई बीन और गन्धर्वोंको रागदिया । ब्राह्मणको दिया कर्मकाण्ड और सन्यासी को त्याग दिया ॥ जिस पर

तुम्हरी कृपा हुई उसको तुमने अनुराग दिया ॥ देवीसिंह कहे बनारसी को सबसे उत्तम भाग दिया ॥ जिसने पाया उसी ने दिया महादेव तुम्हरे वर में ॥ ऐसे दीनदयाल हो दाता कौड़ी नहीं रखी घर में ॥

ख्याल श्रीहनूमानजी का पंचमुखी कवच का माहात्म्य इसके पढ़ने से होगा ।

## बहेर खड़ी-तीन तीन मिसरेका चौक ।

## प्रथम मुख की स्तुति ॥ १ ॥

महावीर मस्तकम् ललित सेंदूरम् कुमकुम् अगरम् ॥
ज्ञानवान अभिमान रहित निर अहँकार हर योगी ।
इन्द्री जीत कामना त्यागी नच कामी नच भोगी ॥
रूप आनन्दम् परमानन्दम् महावीर मस्तकम् ॥

## द्वितीय मुख की स्तुति ॥ २ ॥

दशकन्धर अभिमान हनन् लङ्का दाहन बजरङ्गी ॥
पूरण ब्रह्म अखंड सच्चिदानन्द साध सत्सङ्गी ॥
नाम उचारत नित गोविन्दम् ।
महावीर मस्तकम् ललित सेंदूरम् कुमकुम् अगरम् ॥

## तृतीय मुख की स्तुति ॥ ३ ॥

रक्तम् चीर गदा कर शोभित पुष्पमाल उर धारन ।
दैत्यन दलन हनन दुष्टन दल सकल शत्रु संहारन ॥
शब्द ध्वनि गर्जत हरि हरि बम् बम् बम् बम् ।
महावीर मस्तकम् ललित सेंदूरम् । कुमकुम् अगरम् ॥

## चतुर्थ मुख की स्तुति ॥ ४ ॥

शिव शङ्कर सर्वज्ञ स्वरूपम विश्वेश्वरम् विशालम् ॥

परम वैष्णव शुद्ध आतमा कालांकाल अकालम् ।
बहु विस्तारम् मम किम् वर्णम् ।
महावीर मस्तकम् ललित सेंदूरम् कुमुकुम् अगरम् ॥

## पंचमुख की स्तुति ।

जटाजूट मकराकृत कुण्डल रत्न जड़ित तनु भूषण ।
पंचमुख सुखदायक दाता देखौ पति निर्दूषण ॥
छन्द काशीगिरि शास्तर थकितम् ।
महावीर मस्तकम् ललित सेन्दूरम् कुमुकुम् अगरम् ॥

* इति पांचों मुख की स्तुति सम्पूर्ण *

## विश्व रूपी बाग ।

विश्व रूप खिल रहा बाग जिसमें आदम की गुलजारी । रङ्ग रङ्ग के फूल हैं तरह २ की फुलवारी ॥ पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण ये चारों दीवार बनी । हर एक तरफ से नदियों की हैं छूटी नहर घनी ॥ सात सिंधु सोइ तालाब सातों सबका मालिक वही धनी । चाहे बनावे चाहे एक पल में करदे फनाफनी ॥ विश्व बाग के भीतर कुदरतकी फैली क्यारी । रंग रंग के० ॥ नवखंडों के महल बनाये दशों दिशा के दश द्वारे । त्याग किये हैं बाग में चौदा भुवन न्यारे न्यारे ॥ आसमान की छत लगाई जिसमें जड़ दिये हैं तारे । गरज गरज घन करैं छिड़काव छोड़ते फौवारे ॥ चांद और सूर्य चारों तरफ की करते हैं चौकीदारी ॥ रङ्ग रङ्ग के० ॥ चमत्कार का चमन लगाया पारब्रह्म के आपो आप । हरजरे में झलकता हरशय में वो रहा है व्याप ॥ इसी बाग के भीतर बैठे ऋषी मुनी सब करते जाप । कोई गावते भजन और कोई रहे पच

अग्नि ताप ॥ साधु सन्त करें सैर बागमें परमहँस या ब्रह्मचारी ॥ रङ्ग रङ्ग के० ॥ कल्पवृक्ष औ मलियागिरि वो फले हैं उसमें अमृत फल । कभी न सूखे कि जिसमें ज्ञान रूप है गंगाजल ॥ देवीसिंह कहैं हरि कृपा से जिसकी हो बुद्धि निर्मल । ऐसे बाग में अमर वो होय न आवे उसे अजल ॥ विश्व बाग का मालिक है वोही श्रीकृष्ण गिरवरधारी । रङ्ग रङ्ग के० ॥

## भक्तियोग-बहेरजीकी ।

भजन हरिके प्यारे वो तो होवैंगे कालके काल,काल को क्या समझैं मालजी । निरंकार को भजे उसे नाहिं व्यापे भव जंजाल उसीकी रचना तीनौं कालजी॥आठ याम ले नाम उसीका शेष नाग पाताल, चतुरपद पक्षी जपते व्याल जी । भीड़ पड़ी जहँ जहँ सन्तों पर हुए आप रछपाल,बचाये ब्रजमें गोपी ग्वालजी ॥

दोहा–सदा भक्त के काज को, उठ धाये तत्काल ।
ग्राह से गज को छुटादिया, ऐसे नन्द के लाल ॥
जो कोई उनको सुमरे उनका होय न बांका बाल ।
काल को क्या समझे वो मालजी ॥

पूछा तेरा राम कहाँ जब गिर्द अग्नि दो बाल, दिखाया त्रास वो खड्ग निकालजी । उसने कहा है मुझमें तुझमें सब श्रीगोपाल, करे वो सब जग का प्रतिपालजी ॥

दोहा–खम्भ फाड़ प्रकटे ऐसे, और धारा रूप विकाल ।
हरिणाकश्यपु दैत्य को, मार किया पैमाल ॥
उसकी याद में जो रहते वो सदा बजावें गाल ।
काल को क्या समझें वो मालजी ॥

श्रीकृष्ण के मित्र सुदामा ज्ञानी द्विज कंगाल, पढ़े थे दोनौं

एकी साथजी। शरण गये वो हरिके होगये एक पल में निहाल। मिले निर्धन को वो धनमालजी ॥ उसकी याद बिन प्राणी जैसे सूखा जल बिन ताल, नाम जप साईं का रहु लालजी।
दोहा-बिना भक्ति नहिं मुक्ति है, कहाँ तक कहूँ अहवाल ॥
नाम लिये से तरगये, कई पापी चण्डाल।
लाख चाट ले रोज जो रक्खे उनके नाम की ढाल ॥
काल को क्या समझे वो मालजी ॥

उसकी याद में मीरा नाचीं देदे दोऊ ताल, गावता फिर प्रभू के ख्यालजी। उसकी याद में वह ताकत है कोटि व्याधि दे टाल, कभी नहिं आवे उसे बवालजी॥ देवीसिंह कहै बनारसी को उसका हुआ विशाल, देखता दिल में वही जमालजी।
दोहा-निहुरके चलना जहाके अन्दर,यह है बड़ा कमाल ॥
जिस दरख्त पर मेवा होवे झुकै उसीकी डाल।
नाम प्रभू को प्यारा भक्तों को नहीं होय जवाल ॥
कालको क्या समझे वो मालजी।

## परमेश्वर मिलने का मार्ग—बहेर खड़ी।

नरतन पाय जतन कर ऐसे जिसमें वो करतार मिलै। ऐसी उत्तम योनि पदारथ फिर नहिं बारंबार मिलै ॥ बने हैं पूरब कर्म कुछ ऐसे उसीकी है यह प्रभुताई। जो तूने संसार में है यह सुन्दर नरदेही पाई॥ पाय के ऐसी कंचन काया भजन करो हरि को भाई। जन्म जन्म की बिगड़ी बात सब इसी जन्म में बनजाई॥ सुख दुख भोग पिता औ माता और सकल संसार मिले। ऐसी उत्तम० ॥ मिला मुझे अनमोल रत्न ये अब उपाय तू ऐसा कर। त्याग सकल कामना जगत की हित

चित से हरि नाम सुमरि॥ वासुदेव भज नारायण तू कृष्ण कृष्ण और कहो हर हर। जीते ये भवसिंधु जगत से क्षण में जाते पार उतर॥ जन्म मरण नहिं हो तेरा नहिं जग में फिर अवतार मिलै। ऐसी उत्तम०॥ कर विचार मन में अपने तू किस कारण जग में आया। किस कारण संसार में तुझको मिली है यह कंचन काया॥ जिसने कुछ नहिं भजन कियो नहिं मुख से गुण गोविन्द गाया। सुन्दर जन्म गंवाय वृथा वो अन्तकाल फिर पछताया॥ लख चौरासी पड़े भरमता यम दूतों की मार मिले। ऐसी उत्तम०॥ दुर्लभ ये जामा नरका है मिला बड़े संयोगों से। देवीसिंह कहता है सदा समझायके ये सब लोगों से॥ भजन करो आनन्द रहो और छुटो दुःख सुख भोगों से। हर्ष सदा मन में व्यापे और शुद्ध चित्त रहो सोगों से॥ बनारसी कहै और जन्म में नहिं उसका दीदार मिलै। ऐसी उत्तम०॥

## ज्ञाननौका-बहेर खड़ी।

भवसागर है कठिन कि इसमें और नाहिं कोई खेवैया। दीन-दयालु जो कृपा करें तो पार लगे मेरी नैया॥ गहरी नदिया थाह मिलै नहिं चारों तरफ से उठे बयार। माया मोहका जाल पड़ा उसमें किस विधि से उतरे पार॥ चारों तरफ जो देखा तो कुछ नजर न आये वारापार। कितने ही गये डूब इसी में ग़ोते खाखा के मँझधार। भवसागर के पार उतरै कोई नहीं ऐसा भैया। दीनदयाल जो०॥ चलै जो आंधी भवसागर में तब उसमें बोह उठे तरङ्ग। लोग कुटुम्बके सब रोवें और कोई न देवे उसका सङ्ग। कालबली जब आकर घेरे कोई न जीतै उससे जंग। जो कोई

हरि का भजन करे तो मौत भी उससे होजा दंग । सब कोई हैं अपने स्वारथी क्या बाबा और क्या भैया ॥ दीनदयाल जो० ॥ भयके इसमें भंवर पड़े और चिन्ता की चादर न्यारी । काम क्रोध और लोभ मोह के मगर मच्छ करते स्वारी ॥ सातों समुद्र जरासे हैं औ भवसागर सबसे भारी । उससे पार वोही उतरै जो नाम जपै गिरवर धारी । अंतकाल में पापी रोवैं दीनदयालु जो कृपा करैं तो पार लगे मेरा नैया । सौ होवे तो हजार मांगें हजार हो तो ढूंढैं लाख ॥ लाख होय तो करोड़ चाहें कहैं बढ़ैं कछु उसमें साख । दया धरम नहिं हिरदे में तो अन्त में जलके होजा राख ॥ बनारसी कहै खुन्नीलाल तू नाम सुधारक मनमें चाख । राम नाम को सुमिरण कर मन मुख से कह तू कन्हैया । दीनदयालु जो० ॥

## शरीर का भेद-बहेर लंगड़ी ।

आज कल नहिं कहा किसीने और न कोई कह सकेगा अब । आसमान हो तले जमीं ऊपर इसका कहो क्या मतलब ॥ अगर तुम्हें मालूम होय तो कहो मायने इसके सब । आइने में शकल नजर नहिं आये इसका कौन सबब ॥ और बात मैं कहूँ आपसे इसके तईं सुनना साहब । उलटा दरिया चलै कहां पर इसका ज्वाब दीजियेगा कब ॥ अचरज ये मैं रोज देखता हूं इन आखों से बेढब । आसमान हो० ॥ ऐसी बात बतलाये ओही जिसको दिखलाई देहै रब । अव्वल माया माया में जोरू जोरू में माको छब ॥ आगे इसके एक बात है यही सुझे है बड़ा अजब । है आज़ुरदा औ कभी न होवे जिसके ऊपर पड़े गजब ॥ इमानसे देखा मैंने तो मुझे नजर आया जब तब ।

आसमान हो० ॥ नीचे को ऊंचा समझे औ जीसे इल्मका होंगे कसब । आदम हो के याद न भूले आपकी पहिचाने तब ॥ आपको जो पहचाने औ आपी आप है अब औ जब । अल्ला अकबर आदम ईदम मशरिक मगरिब अरब खरब ॥ अन्दर दिल के देख अरे नादान तुझे गर हो कुछ दब । आसमान हो०॥अगरचे जो तुम सुनो तो मैं सब कहता हूं उसका करतब । आदि कुंवारी बनी रहें और कुल जहान से करें कसब । आनके अपने खसमको मारा बनी सुहागिन लाल औ लब ॥ उसे नहीं कोई कहै रांड सुन बनारसी औ बड़ी चरब । इसके माय ने वही बतावे जो कोइ प्रभु का करे अदब ॥ आसमान हो० ॥

## होली निर्गुण--बहर छोटी ।

होली में इज्जत रहे तो खेलो होली । औ होली मत खेलो जो होय ठठोली ॥ पाँचों भूतों को मार के तू पिचकारी । रङ्ग हरी के रङ्ग में इन्हें तो हो हुसियारी ॥ सरबोर उसी में करदे काया सारी । हरवक्त नाच और गाव तू गुण गिरधारी । तू ज्ञान गुलाल से भरले अपनी झोली । औ होली० ॥ तुम काम क्रोध कुमकुम को अपने मारो । वोह लड़ो लड़ाई काल से भी नहिं हारो ॥ दो प्रेम की गाली प्रभु को उसे पुकारो । औ कबीर के सङ्ग आत्मज्ञान विचारो । जो ज्ञानी हो तो पहिचानो ये खेली । औ होली० ॥ तुम ज्ञान अग्नि में लोभ औ मोह जलावो । लव उस मालिक से अपनी आप लगावो ॥ तुम तत्व तालदे मृदंग बीन बजाओ । अनहद बाजे को सुनो तो उसको पाओ । मत कीचड़ में तुम गिरो जो आवे डोली ॥ औ होली० ॥ जल गई होलिका [illegible] आँच न आई । ऐसी

होली खेलो तो होय बड़ाई ॥ कहैं देवीसिंह तुम सुनो हमारे भाई । है बनारसी की अद्भुत कविताई ॥ सुन मिनौचेहर की बात रङ्गीली भोली । श्रो होली० ॥

## लावनी वाल्मीकिजी की बहेर जी की ।

चाहे जपो तुम मरा मरा चाहे तुम भजलो राम । उलटा सीधा राम नाम हर विधसे आता कामजी ॥ त्रेतायुग में एक पुरुष करता था बटमारी। कितने हूं को मारा उसने पाप किये भारीजी ॥ हत्या करते उसकी सूरत होगई हत्यारी । बहुत किये अपराध बोझ से पृथ्वी तक हारी । तोड़ा धर्म रायभीजीमें डरे ॥ यह पातक कोई कहाँ धरे । अब यह पापी कैसे तरे ॥

तोहरा कभी न सुमिरा राम को ना दया करी नहिं दान । कितनों ही का धन हरा मारी कितनों की जान ॥ कौन पुण्य से होगा इसका बाल्मीक सा नाम । उलटा सीधा राम नाम हर विधि से आता कामजी ॥ १ ॥ एक समय नारदमुनिजी ने किया उधर फेरा । बाल्मीक ने आकर नारद मुनि को भी घेराजी ॥ नारदमुनि ने कहा वचन सुनले तू यह मेरा क्यों मुझको मारेहै ॥ क्यों मुझको मारेहै मैंने किया है क्या तेराजी ॥

तोडा–जब पापी बोला ललकार । मेरा तो है एही कार ॥ कितनो ही को डाला मार ।

दोहरा–नहीं मेरी को वृत है करता मैं खेती । कुटुम्ब अपना पालता हूं लूटमार सेती । क्या जाने कितनों से मैंने किया यहां संग्राम ॥ उलटा सीधा रामनाम हर विधिसे आता कामजी ॥२॥ बाल्मीकि को फिर नारदमुनि ने यह समझाया । तैंने धन लूटा सो तेरे कुटुम्ब ने खायाजी । दौलतका हिस्सा तेरे सब घरने

पाया । पाप जो तैंने किया उसे नहीं किसीने बटवायाजी । दारा सुत भगिनी भाई ॥ सबसे कहो यह जाई । पाप यह मेरा लो बटवाई ॥

दोहरा–जो वो तेरे पाप को लेवें सब बटवाई । तो तू मुझको मारियो अपने गृहसे आई ॥ इतना सुनके बाल्मीकि उठ धाया अपने धाम । उलटा सीधा रामनाम हर विधि से आता कामजी ॥ ३ ॥ चलते चलते बाल्मीकि पहुँचा अपने डेरा । भाई बन्धु अरु लोग वहांके सब को उसने टेराजी ॥ सुन२ के सब उठ ठाढे भये औ बैठे चौफेरे । बाल्मीकिने कहा वचन यह सुनलो सब मेराजी ॥ जो जो धन मैं हर लाया । सो सो सब तुमने खाया । पाप मेरा नहिं बटवाया ॥

दोहरा–अब तुम मेरे पाप को सब कोइ बटवाओ । मैं लाऊँ धन लूट के तुम घर बैठे खाओ ॥ जितनी दौलत हरूंगा मैं सब तुम्हीं को दूंगा दाम । उलटा सीधा रामनाम हर विधि से आता कामजी ॥ ४ ॥ बाल्मीकिका सुना वचन सब बोले नर नारी । क्या जाने हम तैंने है कितनों की जान मारीजी ॥ हमें पाप से काम नहीं है तुही पाप धारी । किये से अन्त समय में होती है ख्वारीजी ॥ बाल्मीकि होके लाचार । छोड़ दिया अपना घरवार । मन में करता शोच विचारजी ॥

दोहरा–भाई बिरादर त्यागके, अब चलूँ गुरू के पास । वो चाहे तो पाप का, एक पल में करदे नाश ॥ अब घर से कुछ काम नहीं बसूंगा मैं इस ग्राम । उलटा सीधा० ॥५ ॥ नारायण ने करी कृपा जब हुआ उसे वैराग । जितने खोटे कर्म थे उनको छिन में दीना त्यागजी ॥ नारदमुनि के पास आया

और जागे उसके भाग । दिया शीश उनके चरणों में किया बहुत अनुरागजी ॥ कहा गुरूजी सुनो वचन ॥

दोहरा–भाई बिरादर कुटुम्ब के कोइ नहीं बांटे पाप । तुम अपनी कृपा करो काटो मेरे संताप ॥ तुम हो गुरू मैं हूं चेला शिर झुका किया परणाम । उलटा सीधा रामनाम हर विधिसे आता कामजी॥६॥ फिर नारद मुनी ने देखा अब हुआ इसे कुछ ज्ञान । रामनाम रटनेसे होवेगा इसका कल्यान जी ॥ वोही मंत्र उपदेश दिया और बताया उसको ध्यान । इसी नामसे पाप तेरे होवेंगे पुराय समानजी ॥ अब तेरा हो गया भला । किसीका मत काटियो गला॥ पाप तेरे सब दिये जला ॥

दोहरा–बाल्मीकिने रामनामका मनमें जाप करा । राम रामके नाम से निकले मरामरा । बड़े शोचमें वह आया पग लिये गुरूके धाम ॥ उलटा सीधा० ॥ ७ ॥ बाल्मीकिने कहा गुरूजी रामराम गया खोय । मैं कहता हूं राम राम जी तो मरामरा मुख होयजी ॥ नारदमुनिने कहा जपैं हैं यही नाम सब कोय । मरा मरा कहनेसे रामजी सब दुख डाले धोयजी ॥ बाल्मीकि निश्चय करके । बैठ गया आसन भरके ॥ उलटा नाम हिरदे धरके ।

दोहरा—नारदमुनि तो चलदिये, बैठा ध्यान लगाय । मरा मरा रटने लगा गई भूख प्यास बिसराय ॥ वर्षाऋतु जाड़ा झेल गरमीमें सही अति घाम । उलटा सीधा० ॥ ८ ॥ शरीरकी सुधि नहीं रही और तनुपै जमगई घास । और आश सब छोड़ लगाई मरामराकी आशजी ॥ जब तो रामने करी कृपा आ पहुंचे उसके पास । बाल्मीकिके घटमें अपना किया

रामने बासजी । ब्रह्मज्ञान दे दिया उसे ॥ अपनी आत्मा किया उसे । लगा कंठ से लिया उसे ॥

दोहरा—जब तो ताली खुल गई भये बाल्मीकि चेतन । कंचन सा तनु बन गया पायो निर्गुण दर्शन ॥ बाल्मीकि के घटमें रामने किया आप विश्राम । उलटा सीधा० ॥ ९ ॥ मरा मरा कहने से होगये बाल्मीकि ज्ञानी । रामनाम रामायणकी कथा कही हैगई सिद्ध बानी ॥ दश हजार बरसों की बात आगे सब पहचानी । भूत भविष्यत् वर्तमान ये तीनों राह जानी । उलटा नाम जपा भाई ॥ तिसपर यह पदवी पाई । बाल्मीकि की कविताई ॥

दोहरा--विष्णुसहस्रनाममें श्रीरामनाम में सार । जो कोई सुमिरे रामको उनका होता उद्धार ॥ सकल कामना मिले उसे जो जपे नाम निष्काम । उलटा सीधा० ॥ १० ॥ मरा मरा कहने से ही ऐसे पापी तरते । राम नाम जो रटे हैं वो क्या जानै क्या करतेजी ॥ रामनामते समुद्रमें अब तक पहाड़ तरते । वोभी होजाय रामनामको जो हिरदे धरतेजी । रामनामकी सब माया ॥ पार किसीने नहिं पाया । ये ही नाम चहुँ दिश छाया ॥

दोहरा--जो कोई ऐसे छन्दको गावे सुने दे कान । भुक्ति मुक्ति पावे वहीं और हो उसका कल्यान ॥ कहै देवीसिंह बनारसी है रामनाम सरनाम । उलटा सी० ॥ ११ ॥

## लावनी अहंकारनाशिनी ।

जो कहता हम करते वो दुःख भरता है । जो करता जगके कार वही करता है ॥ जो कहता हमने वेद पढ़े हैं चारी । उसको कहते हरी इसकी मति है मारी ॥ कोई कहता हम

दानी हैं हम [illegible]धारी। सब अहंकार में फंसे हुए नर नारी। जो अहं बुद्धि को तजै करै ना चारी॥ उसको मिलते इक पलभर में गिरधारी। जो निष्फल पूजा करे वही तरता है॥ जो करता०॥ १॥ जो कहता हम तो नित्य दान करते हैं उसका परमेश्वर नहीं मान करते हैं॥ जो देत वस्तु मन में गुमान करते हैं। वो स्वर्ग छोड़ फिर नरक पान करते हैं॥ जो अहंकार तजि हरिका ध्यान करते हैं। उसका स्वामी आदर अरु मान करते हैं। जो करता है सो नहीं वही धरता है। जो करता० ॥२॥ जो कहता हम हैं बड़े कवीश्वर ज्ञानी। उसको हरि कहते इसकी मिथ्यावानी॥ कोइ कहता हम हैं बड़े वीर बलवानी। उसको हम कहते यह तो है दहकानी॥ कोई बनके बैठे राजा और कोई रानी। इस पृथ्वी पर हैं बड़े २ अभिमानी॥ इस अहंकार से अपना दिल-डरता है। जो करता०॥ ३॥ जो कहता मैंने बड़ा जङ्ग जीता है। वह मरता है फिर कभी नहीं जीता है॥ जिस जिसने मन में अहंकार जीता है। वह दो दिन में दुनियां से हो बीता है अब देवीसिंह दिल फटा हुआ सीता है। जो कर्म किया प्रभु के अर्पण कर देता है॥ कहै बनारसी हरिभक्त नहीं मरता है॥ जो करता०॥ ४॥

## वचन पलटनेवालेका जोहाल होता है यह सही लिखा बहेर छोटी।

जो जबां से कहिके सखुन पलट जाते हैं। शिर दगाबाज के अक्सर कट जाते हैं॥ जो कहते हैं वो करते हैं पूरे नर। चाहे इसमें हो जाय कलम [illegible] सर॥ मैं कहूं तु [illegible] कौल

किसीसे मतकर। जो कहिके सखुन को नहीं करैं वो हैं खर॥ जो झूँठ बोलते हैं वो फिरते दरदर। कह सत्य बचन बलि विक्रम राजा गये तर॥ जो कायर हैं वो रनते हट जाते हैं। शिर दगाबाजके० ॥ १ ॥ जो कलाम पै अपने रहते हैं साकर। तौ लाकलाम वोह खालक मिलता आकर॥ मत झूँठ किसी से बोल यह नरतन पाकर॥ सब बुरा कहैंगे कहूं तुझे समझा कर। जो करै दगा अपने घर में बुलवाकर॥ तौ उसका बदला साईं उससे आकर। नहिं मिलै हशरत का जब दिल फट जाते हैं॥ शिर दगाबाजके० ॥ २ ॥ पूरों का सखुन नहिं लाखों में टलता है। सर सखुन के आगे शूरों का चलता है॥ जो सच्चा है वह कुटुम्ब से फलता है। उसका चिराग उसके आगे बलता है॥ जो करके दगा यारों के तईं छलता है। वो नरक कुण्ड की आतिश में जलता है॥ सच्चों के आगे झूठे घट जाते हैं। शिर दगाबाजके०॥ ३ ॥ जो कलाम को झूँठा मुख से फरमाते। वो अन्त समय दोजखमें डाले जाते॥ कहैं देवीसिंह जो साईंसे लव लाते। वह भवसागर यक लहजा में तर जाते ॥ छंद बनायके तो सच्चा मिसरा गाते। हरनाम सुमिरके सभा में चंग बजाते ॥ कहैं बनारसी हम सखुन में डट जाते हैं। शिर दगाबाज के० ॥ ४ ॥

## भगवान से विनय-बहर छोटी।

कर दया दास के कष्ट हरो गिरिधारी। करुणानिधि करुणा करो मैं शरण तुम्हारी ॥ सब संकट मेरे दूर करो अब स्वामी। ऋद्धि सिद्धि से मुझे भरपूर करो अब स्वामी ॥ अपने अब मुझे हुजूर करो तुम स्वामी। चरणों की मुझे तुम धूर करो अब

स्वामी । यह काम तो मेरा जरूर करो अब स्वामी । भक्तों में मुझे मशहूर करो अब स्वामी ॥ हो निर्भय पूरणब्रह्म आप अवतारी । करुणानिधि करुणा० ॥१॥ सब संतों को आपी तुमने तारा है । ग्राह से यह गजको तुम्हींने उबारा है ॥ प्रह्लाद की खातिर नरसिंह तनु धारा है । नखसे नाभी को चीर असुर मारा है । मुझको वो नाम श्रीनारायण प्यारा है ॥ प्रभु तेरे बिन अब कोई न हमारा है । क्यों मेरे वास्ते करी देर बन-वारी । करुणानिधि करुणा० ॥ २ ॥ पाँचों पांडवों का साथ किया है तुमने । ब्रजमें सखियन से रंग किया है तुमने । काली को नाथके तंग किया है तुमने । कंसा से जाय फिर जंग किया है तुमने ॥ हर एक राक्षसको तंग किया है तुमने । सब असुरों को चौरंग किया है तुमने । अब मेरे पांच भूतों को मार मुरारी । करुणानिधि करुणा० ॥ ३ ॥ सब कसूर मेरा माफ आप अब कीजै । शिर चरणों में अपने मेरा नाथ लीजै ॥ यह उम्र सदा दिन रात घड़ी छीजै । कर मेहर प्रभू कछु भक्ति में अपनी दीजै ॥ एक अरजी मेरी गरीबकी सुनलीजै । दिल भक्तिमें तुमरी सदा हमारा भीजै ॥ हरि हरलो तनुकी पीर हुआ दुःख भारी । करुणा करो० ॥ ४ ॥ तुम जो चाहो सो करो आप यदुराई । से राई से गिरि कर देते गिरि से राई ॥ है सत्य सत्य साँची तेरी प्रभुताई । तरगये वहीं जिसने तुमसे लव लाई ॥ कहैं देवीसिंह जिन तुम्हारीमहिमा गाई । वहभवसागर के पार उतर गया भाई ॥ कहैं बनारसी यह राखो लाज हमारी । करुणानिधि करुणा० ॥ ५ ॥

## ख्याल निर्गुण चौकड़—बहेर शिकस्ता ।

बहुत दिनों पर बिछी है चौसर सम्हल के खेलो ये चाल क्या है । जो फेंकूं पासे तो छूटैं छक्के नलोदमन की मजाल क्या है ॥ मैं हूं जुआरी सुघड़ खिलाड़ी हमेशह जीतूं कभी न हारूँ । सदा पड़े पोडुइ दूर हो चौरासी ॥ यों घर घर की नरद मारूँ । पड़े अगरचे जो तीन काने तो अपने दिल में मैं यह विचारूँ ॥ ये तीन गुण हैं सभी के तन में मैं इनसे चलके अलग सिधारूँ । हैं चार काने वो चौथा पद है मिला अब हम को मजाल क्या है । जो फेंकू ० ॥ १॥ है इसमें पंजड़ी सो पाँच तत्त्व हैं मैं इनसे गोटी चला बचाके । और फेंकूं छकड़ी ले आऊँ सत्ता सत को सद्गुरु के पास जाके ॥ है दाँव अट्ठा सो आठ सिद्धी नव ऋद्धी मैं रखूं मना के । पड़े अगर छः चहार दश तो दशो द्वार देखूं दिल लगा के ॥ न रंग अपना मेरे किसी से मैं अब समझता हूं काल क्या है । जो फेंकूं ॥ २ ॥ आये हमारे वो दशपौ ग्यारा तो ग्यारहो रुद्र हैं बदन में । और बारह राशें सो दोनों बारह समझ सोच कुछ तू अपने तन में ॥ बड़े हैं इनमें वो दोनों तेरा मैं तेरा तेरा कहूं हूँ मनमें । तू चौधरी है जहाँ का मालिक नजर पड़े चौदहों भुवन में ॥ करूँ भजन मैं ये पन्द्रहों दिन माया मोह का वो जाल क्या है । जो फेंकूं ॥ ३ ॥ है आत्मा सोलहों कलाये । सो पाँसे मैं सोलहों बनाये ॥ वो आये सत्रह ये सतरहा अब हरी हरी के गुण गाये । पढ़े अठारह पुराण हमने और अर्थ उसके ये दिल में पाये ॥ उठे रंग बदरंग भी उठ गये वो सारी माया को जीत लाये । बनारसी को सदा बनारस बना

हुआ है बावला क्या हैं। जो फँकूं ॥ ४ ॥

## ख्याल जी की लयका।

नहीं मेरे ये शरीर है नहिं है मुझको दुःख द्वन्द। मेरा है रूप सच्चिदानन्दजी ॥ नहीं लोभ नहिं मोह नहिं बुद्धि नहीं अहँकार। नहिं आचार औ नहीं विचारजी ॥ नहीं रात नहीं दिन नहीं तिथि घड़ी लग्न नहिं वार। नहीं है अपना पारावारजी ॥ नहीं ऊजड़ नहीं जंगल बस्ती नहीं कुटुम्ब घरवार। नहीं दारा सुत नहीं परिवारजी ॥

दोहरा—नहीं शीश नहिं मुख नहिं जिह्वा नहिं वाणी नहिं हाथ। नहीं उदर नहिं लिंग चरण नहिं नहीं वर्ण नहिं जात ॥ नहीं वेद नहिं शास्त्र नहीं श्लोक नहीं पद छन्द। मेरा है० ॥ १ ॥ नहीं काम नहिं क्रोध नहीं कुछ ज्ञान नहीं अज्ञान। नहीं कोई मंत्र तंत्र नहीं ध्यानजी ॥ नहीं नेम नहीं संयम पूजा नहिं तीरथ अस्थान। नहिं व्रत होम यज्ञ नहिं दानजी ॥ नहीं योग नहीं भोग नहीं संयोग मान अपमान। नहिं बनवासी नहिं स्थानजी ॥

दोहरा—नहिं सीधा नहिं गोल नहीं दुबला औ नहि मोटा। नहिं टेढ़ा नहिं बेडा बहुत नहिं बड़ा नहिं छोटा ॥ नहीं तुर्श नहीं लोन अलोना नहीं कड़वा नहीं कंद। मेरा है० ॥ २ ॥ नहीं सुखी नहीं दुखी नहीं धनवान नहीं कंगाल। नहीं मन्त्री और नहीं भूपालजी ॥ नहीं सिन्धु नहीं नदी नहीं है कूप बावड़ी ताल। नहीं आकाश नहीं पातालजी ॥ नहीं श्वेत नहीं पीत नहीं है कपोत नीला लाल। नहीं है वृक्ष फूल फल डालजी ॥

दोहरा—नहिं हीरा नहिं मोती माणिक नहिं रत्न की खान। नहीं खड़ग नहीं चक्र नहीं त्रिशूल धनुष नहीं बान ॥ नहीं जाग्रत नहीं स्वप्न सुषुप्ति नहीं खुला नहीं बन्द। मेरा है० ॥ ३ ॥ नहीं त्रिदंड नही बनखंडी नहीं ब्रह्मचारी। नहीं मुण्डित न जटाधारी जी ॥ नहीं अग्नि नहीं पवन न पानी नहीं मीठा खारी। पशु नहीं पुरुष नहीं नारी जी ॥ नहीं शाक्ति नहीं वैष्णवी नहीं आचारी। नहीं हलका और नहीं भारीजी ॥

दोहरा—नहीं मिमांसक नहीं जैनी नहीं उदासीन मतवाद। नहीं देव गंधर्व यक्ष नहीं नहीं विघ्न विख्याद ॥ नहीं बिजली नहीं घना नहीं तारे नहीं सूरज नहीं चन्द। मेरा है० ॥४॥ नहीं शिष्य नहीं गुरू न माता पिता नहीं भ्राता। नहीं रिस्ता और नहीं नाताजी ॥ नहीं बैठा नहीं खड़ा नहीं आता है नहिं जाता। नहिं भूखा है नहिं खाताजी ॥ नहिं लेय नहिं धरे नहीं देता नहिं दिलवाता। सखी नहीं सूम नहीं दाताजी ॥

दोहरा—नहीं कर्म की रेख लेख नहिं नहिं पढ़ा जाता। नहिं मौन हो रहे हरि बोले नहिं बुलवाता ॥ नहिं पक्षी नहिं फन्द कहै नहिं जाल नहिं फरफन्द। मेरा है० ॥ ५ ॥ नहिं हिन्दू नहिं मुसलमान याहूदी नहिं फिरङ्ग। नहिं कोई रूप नहीं को रंगजी। नहीं बीन बांसुरी नहीं करताल मृदंग नहीं जल तरंग नहिं उपंगजी। नहिं कलंगी नहिं तुर्री नहीं अनघड़ डुंडा नहिं चंग ॥ नहिं कोई संग है नहीं असंगजी।

दोहरा—आपी आपमें आप है रहा आप में व्याप। नहीं स्वर्ग नहिं नरक है नहीं पुण्य नहिं पाप ॥ बनारसी कहैं रूप हमारा अखंड परमानन्द। मेरा है० । ६ ।

## मथनी श्रीकृष्णके खेलकी-बहेर छोटी ।

यह नन्दलाल यशोदा का दुलारौ कनिया । लै गयो सखीरी मेरी दधिकी मथनियां ॥ सुन सखी एक दिन कान्ह मेरे घर आया । दधि गोरस दी ढलकाय औ माखन खाया । दधिकी मथनियां हाथ में लेकर धाया ॥ मैं देखा चोरी करत पकड़ बिठलाया ॥ उन फाडो मेरी चीर में तोरी तनिया । लै गयो० वो कुस्तंकुस्ता मुस्ती करने लागा । मथनी भी ले गया हाथ छुड़ा कर भागा । इतने में हो गया भोर ससुर घर जागा । पति ने मुझको यह कलंक लगाकर त्यागा ॥ डर सास ननद का हमसे लड़े जिठानियां । लै गयो० ॥ सुन सखी श्याम से मथनी क्योंकर पाऊं । मोहि मांगत आवे लाज बहुत सकुचाऊँ ॥ है नया नेह शर्माते सन्मुख जाऊँ । दूरी से नटवर वेष देख ललचाऊँ ॥ मुख धर बांसुरी बजावे तान रसभिनियां । लै गयौ० ॥ वोह सुन्दर सांवरा मेरी नजर जब आवे । पलकों से मारे सैन नैन मटकावे । बंशी में मोहिनी डाल मुझे बिलमावे ॥ एक नजर दिखाकर तन मन हर लेजावे । है ब्रज में भकटो बड़ो वो छैल चिकिनियां ॥ लै गयौ० ॥ मांथे पर चंदन मोर मुकुट शिर साजै । कानों में कुण्डल कर मुरली बीराजे ॥ एक पड़ी वो नाके बुलाके अधिक छबि साजे । सांवरी सूरत पर पीतांवर राजे ॥ कटि किंकिणी बाजे पग स्याने पैंजनियां । लै गयो० ॥ भोला मुख भोली बतियाँ लगतीं प्यारी । मन चाहे चित से प्रेम राह रस न्यारी ॥ ग्वालिन की लगनसे मगन हुये गिरधारी । कहै देवीसिंह मैं कृष्ण तेरी बलिहारी ॥ दिन रात तुम्हारा ध्यान धरै दुनियां । लै गयो० ॥

## ख्याल तबहीर-बहेर तवीर ।

मैं देखूं हूं सबके हैं सरपर वही पर अपना तो रखता वो सर ही नहीं । ये सितम है कि उसके हैं चश्म कहां पर ऐसी किसी की नजर ही नहीं ॥ है दैरो हरम में वो जलवे कुना पर अपना तो रखता वो घर ही नहीं । वो मकीं है अजब के मकांही नहीं वो मक्का है अजीब के दरही नहीं ॥ है उसका वह मसकन पाक जहाँ वहाँ वह मोगुमां का गुजरही नहीं । न तो दिन है वहाँ न तो शब है वहाँ वहाँ देखो तो शम्शोकमर ही नहीं ॥ है नूर का उसके जहूर खिला पर है वो कहाँ ये खबरही नहीं। ये सितम है० ॥ वह जलवा है उसका तमाम जगह कोई और तो जलवागरही नहीं । कही मिस्ले नूर अयां है वोही कहीं मफी है सुजहर ही नहीं ॥ से जमीनो फलक का है उसके सिवा कोई मालक जेरो जबरही नहीं । सरदार है कुल आलम का वही कोई उसपै तो है अफसर ही नहीं ॥ जो चाहे सो करता है आप वही कुछ उसको किसी का खतर ही नहीं । ये सितम० ॥ वोः अजीब है नखले मुरादे चमन कहीं हस्ती में ऐसा शजर ही नहीं । तरोताज निहाल लतीफ है वह कोई उससे तो है बेहतर ही नहीं । कहीं नखल में शाख हैं बर्ग नहीं कहीं गुल में तो लगता समरही नहीं । उसे जाके चमन में जो ढूंढे अगर तो औ पाये नसीमो सहरही नही ॥ वोः सहज है बहार है जिसे है सदा कभी बादे खिजां से नजरही नहीं । ये सितम०॥ जिसे इश्क खदान जहाँ में हुआ कोई उससे तो है वरही नहीं । वालिद ही हुये कुछ अकलो कहे मगर ये भी नहीं तो वशरही नहीं ॥ कहै काशीगिरि लापरवा है वोः कुछ ख्वाहिशे

सोमोजर ही नहीं। वो रुतवा है उसका के शाहों का भी कुछ आगे तो उसके बकरही नहीं॥ जो फकीरों के फैजे सखुन में हैं वो जवां में किसी के असर ही नहीं। ये सितम है कि० ॥

## ख्याल तौहीद बंदा खुदाया-बहेर तवील।

जिसे जिस्म का अपने गुरूर नहीं उसे मौतका खौफो खतरही नहीं। न तो ख्वाहिश उसको बिहिश्त की है कुछ दोजख का भी तो डरही नहीं॥ वो मकाँ है मेरा तनकाई जहाँ शम्शो कमर का गुजरही नहीं। न आबो हवा न तो आतिशबां कोई मेरे सिवा तो बशर ही नहीं॥ जिसके परदा दुई का वो दूर हुआ तो फिर उसमें खुदा में कसरही नहीं। जहाँ देखे वहाँ पै है नूरे खुदा कोई और तो आता नजरही नहीं॥ कोई लाख तरे से जो मारे उसे पर उसका तो कटता वो सरही नहीं। न तो० ॥१॥ जिसकी एक निगाह है तमाम जगह उसके आगे तो जेरो जबरही नहीं। जिसे अक्ल फैहम में है दखल बड़ा उसके आगे तो इल्म हुनरही नहीं॥ जिसके कबजे में गंज है वहदका कोई उस्सा दौलतवर ही नहीं। जो कुछ आया वह उसने लुटा ही दिया कुछ पास में रखता वो जरही नहीं॥ हरहाल में जो के खुशी है वशर ऐसी होती किसी की गुजर ही नहीं न तो० ॥ २ ॥ उसके जेरे से नूर हजार बने आगे तो शम्शो कमरही नहीं। जिसने देखा उसे वह उसी में मिला कोई और तो उसका है घरही नहीं॥ मैंने दोनों जहाँ में जो देखा तो क्या कोई और तो मेरा जिगर ही नहीं। सिवा उसके न कोई रफीक मेरा मुझे और किसी की फिकर ही नहीं। जो है बंदा उसी का न गन्दा हुआ कोई और का उस पै असर ही नहीं॥

न तो० ॥ ३ ॥ मुझे ख्याल उसीका है आठों पहर मैंने याद किसी को तो करी ही नहीं। जबसे देखा उसे तो मैं भूला सभी पर भूला मैं उसका तो डरही नहीं ॥ वो दिल ही में मुझको दिखाई दिया कहीं करना पड़ा कुछ सफर ही नहीं । दरिया है ये देवीसिंह का सखुन कहीं ऐसी तो लहरो बहरही नहीं ॥ है नाम वो तेरा काशीगिरि कोई और तो ऐसा बसरही नहीं। न तो ख्वाहिश० ॥ ४ ॥

## फ़कीरके चारहु रूप ही दुरुस्त हैं चहार दर्वेश गलत बहेर खड़ी।

ऐसे फख्र और काफ से कुदरत रेसे रहम और येसे याद। चार हर्फ हैं फकीरों के जो पढ़े तो हो दिल शाद ॥ फकीर होना बहुत कठिन है जिसमें फख्र की हो नहिं बू। और तो कुदरत भी न हो तो ऐसे फकीरी पर है थू ॥ रहम न हो दिल में तो दुनिया छोड़ न होना फकीर तू। याद इलाही जो कोई करे तू उसके कदम को छू ॥

शैर—यह चारों बात हो जिसमें वह फकीरी को करे। नहिं क्या जटा बढ़ाके बोझ शिर पै धरे ॥ इससे बेहतर है कि दुनिया में तू रह और कुछ दे। मैं यह करता हूं फकीरी तो है परसे परे ॥ ऐसी फकीरी मत करना जो चारों बात होवे बरबाद। चार हर्फ० ॥ १ ॥ फख्र वह कुदरत रहम और यादे इलाही भी है बहुत कठिन। वह फकीरी है कि जिसकी आठ पहर उससे है लगन ॥ फिर उसको क्या ख्वाहिश है दुनिया की और क्या करना धन। फकत गुजारा यहाँ करना है इसी में रहै मगन ॥

शैर—आगया माल तो दम में लुटा दिया उसने । किसी को देदिया कोई से लेलिया उसने ॥ न तो लेने की खुशी कुछ भी न गम देने का । काम नेकी का जो कुछ बन पड़ा किया उसने ॥ इसके मायने वह समझें जिसके दिल में पूरा इतकाद । चार हर्फ० ॥ २ ॥ फकीर है कि जो कोई जीते जी समझे मरना । जीते जी जा मरै तो मौतसे भी नहिं हो डरना । अगर मरैं तो खुदा में मिलै नहिं हो दुःख भरना ॥

शैर-खौफ दोजख का न कुछ और न खुशी जन्नत की । किया दोनों को तर्क वश ये उनकी मन्नत की ॥ दोनों दुनियां को छोड़कर मैं न मैंने सुन्नत की । चार हर्फ ये पढ़े और गुने तो वह कहलाये आजाद ॥ चार हर्फ० ॥ ३ ॥ चार किताबें पढ़े तो क्या और सुने अगरचे चारों वेद । पर नहिं उसको गुनै तो कभी न हो पूरी उम्मेद ॥ और इल्म कितने सीखे इस दिल पर आपने उठाके खेद । पर मुशकिल है जहांमें सुनो फकीरी का कुछ भेद ॥

शैर-मैंने देखा कि फकीरों के हैं मौताज सभी । फकीरी मुझको मिलै और न मिलै राज कभी । खुदा ने अपनी जुबां फख से मिलाई । हुक्म में उसके है वो साज और समाज सभी॥ बनारसी भी फकीर है और देवीसिंह मेरे उस्ताद । चार हर्फ० । ४ ॥

## लावनी तौहीद बहेर-लंगड़ी ।

खुदा से जो कोई मिला तो वह फिर खुदा हुआ नहिं जुदा हुआ । नक्की उसको मिली और दुई का तो हर गया दुआ ॥ यकताई के आलिम में हर वक्त चूर रहता हूं मैं । दुई वालों से तो लाखों कोस दूर रहता हूँ मैं । अन अल हक जो कहै तो

उसके संग जरूर रहता हूँ मैं। पेशानी में जो उसकी बनके नूर रहता हूं मैं ॥

शैर–अगर वह खाक में लोटें तो गिल अकसीर बनजावे। करे जिसको तिला उस गिलकी वह तासीर बनजावे ॥ जबां से जिसको कुछ कहदे तो वह फिर पीर बनजावे। खुदा से गर कहैं तू बन तो वह तसवीर बनजावे ॥ कभी नाहिं हारे दुनियां में उन्होंने वह जीता है जुवा। नक्की उसको०॥ १ ॥ आबका कतरा मिले जो दरिया में तो वह दरिया बनजाय। खुदा से जो कोई मिले तो बेशक वह माला बनजाय ॥ नूरमें जिसको मिले नूर कुल जहाँ का यह जलवा बनजाय। दुईको करदे दूर तो आलम में यकता बनजाय ॥

शैर–मिला चाहे तो उससे मिल तूं अब अपनी ही हस्ती में। हमेशा मस्त झूमाकर सदा रहो अपनी मस्ती में ॥ कभी शहरा में घूमाकर कभी जा बैठे बस्ती में। कभी रहो बुत परस्ती में कभी रहो हक परस्ती में॥ जिसने समझा एक वह तो फिर मौत को जीता नहीं मुवा। नक्की उसको० ॥ २ ॥ हम दम अव्वल खानम बाहेद यकता उसमें दुई नहीं। बारे मेरे दिलके इसमें दुई तो मुतलक हुई नहीं ॥ जो के जिनसे मैंने पकड़ी वह चीज किसी की हुई नहीं। बात खुदा से तो मेरे सिवा किसी की हुई नहीं ॥

शैर–कलामे मारफत मेरी जबाँ से हर घड़ी निकले। कि जैसे सिफ्त मौला की कुरआं से हर घड़ी निकले ॥ गिरेबां फाड़कर हम इस जहाँ से हर घड़ी निकले। बयां तौहीद तो मेरे बयां से हरघड़ी निकले ॥ जिसने खेल खेला है खुदा से

जुवा फिर उसने कहाँ छुवा। नक्की उसको० ॥ ३ ॥ नेक जो है यह एक समझता एक नाम से काम मुझे। मुफ्त मिला वह खर्च नहीं करनी पड़ी छदाम मुझे ॥ उस मालिकका नाम लिए से मिला बहुत आराम मुझे। अब तो यही लौ लगी रहती है आठों याम मुझे ॥

शैर—दुई का उठगया परदा तो यकताई नजर आई। न फिर बाबा नजर आया न वह माई नजर आई ॥ अगर रुसवा हुए हम तो न रुसवाई नजर आई। जब अपने आपको देखा तो जेबाई नजर आई ॥ बनारसी नहिं कथा अब उसके कांधे का उठगया जुवा। नक्की उसको० ॥ ४ ॥

## लावनी तौहीद-बहेर लंगड़ी।

पास न कौड़ी रही तो मैंने मुफ्त खुदा को मोल लिया। ऐसा सौदा किया अनमोल और मैंने कुछ न दिया ॥ पाया खजाना गयेब का मैंने कभी नहीं घटने का है। चाहे जितने मैं बाहूं कभी नहीं बटने का है ॥ खर्च न कौड़ी होय फक्त ये जबां हीसे रटनेका है। ऐसा सौदा तो कोई फकीरसे पटनेका है ॥

शैर—न रही पास में मेरे जो एक लङ्गोटी। मुँडाया उसको भी शिर पर मेरे जो थी चोटी ॥ किया सवाल तो सबकी सही खरी खोटी। लगी जो भूख तो खाई वह माँगकर रोटी ॥ पियास लगी तो पानी भी जैसा ही मिला वैसा ही पिया। ऐसा० ॥१॥ यह बाजार निरगुन का है मैं खरीददार मालिक का हूँ। मालिक भी हूं और मैं तावेदार मालिक का हूँ ॥ वह मेरा है दोस्त और मैं भी तो यार मालिक का हूं। जो चाहै सो करूं मैं मुखतियार मालिक का हूं ॥

शैर—यह हाट में जो गया उसका वह हुआ सौदा। न खर्च कुछभी पड़ा मुफ्तमें मिला सौदा॥ हम हाथ उसके बिके जिसे यह किया सौदा॥ न कोई देख सके है मेरा छुपा सौदा। कभी नहीं घाटा होवेगा अब मेरा खुल गया हिया॥ ऐसा०॥ २॥ रोजगार करना होवे तो ऐसा रोजगारी तू बन। खर्च न जिस-में पड़े तो ऐसा व्योपारी तू बन॥ लूट खजाना खुदा के घर कार ऐसा बटमारी तू बन। तू भी लुटादे जहाँ में कुछ तो उप-कारी तू बन॥

शैर—यह हाथ जिसके लगा माल वह निहाल हुआ। निहाल वह भी हुआ इसमें जो पामाल हुआ॥ खुदा की राह है गरके कोई कंगाल हुआ। तो आखिरश को फिर वो कोठी वाला हुआ॥ हिन्दू मुसलमाँ से मैं कहता क्या सुनी या होवे शिया। ऐसा सौदा०॥ ३॥ यह रंज फकीरों की इस सौदे का कुछ मोल नहीं। छिपाले इसको हर एक के आगे यह तो खोल नहीं॥ खामोशी का आलम है इस जांपर निकले बोल नहीं। कहे देवीसिंह अरे तू अमृत में विष घोल नहीं॥

शैर—बुरा न मान मेरी बात सुन भला होगा। इसे खरीद करै वह जो दिल जला होगा॥ यह राह सख्त है इसमें जो कोई चला होगा। तो उसका पाके हर एक हूरने मला होगा। बनारसी ने सबको छोड़ लिया वासुदेव और राम सिया। ऐसा सौदा किया अनमोल और मैंने कुछ न दिया॥ ४॥

## पंथ प्रेम का—बहेर लंगड़ी।

दुनिया में लाखोंई पंथ को हमने देखा भाला है। पर जो देखा तो कुछ आशकों का पंथ निराला है॥ कोई बदन पर

लाक मिले और सेली कफनी डाले हैं। कोई रँगवे वस्त्र को अपना वेष सँभाले हैं ॥ कोई मौन होकर बैठे नहीं किसी से बोले चाले हैं। कोई फड़ाये कान को पिये वो मद के प्याले हैं ॥ कोई ने लम्बा तिलक दिया और पहने तुलसीमाला हैं। पर जो० ॥ कोई रात दिन खड़े रहैं और कोई हाथ उठाये हैं। किसी को देखा तो वह बैठे और ध्यान लगाये हैं ॥ किसी ने अपने बदन को दागा तनु पर छापे खाये हैं। किसीने अपने शीश पर लंबे बाल बढाये हैं ॥ किसी के तन पर वस्त्र नहीं ओढे मृग छाला है। पर जो० ॥ कोई सेवड़ा बना और कोई कहै कि हमतो दंडी हैं। कोई तपस्या करैं और कोई बने वनखंडी हैं। किसी के मठपर ध्वजा उडै और कहीं फरकती झंडी हैं। बिना इश्क के हुवे जो फकीर वो पाखंडी हैं ॥ किसी ने मसजिद बनवाई और कोई ने रचा शिवाला है। पर जो० ॥ कोई कहै हम यती हैं और कोई बना जगत में वैरागी। बिना इश्क के किसी की लव नहिं सद्गुरु से लागी ॥ बनारसी ने इश्क में अपनी जीते जी काया त्यागी। हुई न मुतलक रही और दुबिधा भी सुनके भागी ॥ रामकृष्ण का सखुन यही समझो तुम सब पर बाला है। पर जो देखा० ॥

## तथा

दुनियाँ में कहते हैं सभी आशिक का दरजा आला है। पर जो देखा तो कुछ माशूक का रुतवा वाला है। आशक था मजनू पर वह लैला का ताबेदार रहा ॥ गमें इश्क में हमेशा लैला के बीमार रहा। गया तन बदन सूख पर अपने दिल से ताकत दार रहा। दिल ही में अपने वह करता लहला का दीदार रहा ॥

शैर-ज़बां पर हर घड़ी उसके कला में विर्द लैला था । छुरा था हाथ में तिस पर भी वह लैला पर शैदा था ॥ बताओ इश्क क्या है इसकी सूरत किसने देखी है । बलाये नागहानी थी हुआ जिस दिन यह पैदा था ॥ आशक भी है मस्त वही जो वहदत में मतवाला है । पर जो० ॥ तख्त सल्तनत तर्क किया आशक रांझा हीर हुआ । खाक बदन पर मली और शाह से बड़ा फ़कीर हुआ ॥ काली कामर ओढ चराई गाय नहीं दिलगीर हुआ । हुकुम हरिका जो माना तो वोः ओलिया पीर हुआ ॥

शैर-पकड़ कर शेर को जङ्गल में क्याही घात से मारा । वह ताकत हीरकी उसमें थी जिसकी जातसेमारा ॥ सुनो दुनियां में माशूको चरचका तुम जरा मुझसे । जिसे मारा उसी की यक जरा सी बात से मारा ॥ वोः आशिक पक्का है जिसने अपना ही घरघाला है । पर जो० ॥ शीरा के ऊपर आशक फरहाद एक मजदूर हुआ । गजब इश्क है जिसे यह लगा वोः चकनाचूर हुआ ॥ शीरीके रुतबेसे कुछ फरहादका भी मखदूर हुआ । बाद मार्ग के वोः दोनों मिले नाम मशहूर हुआ ॥

शैर—माशूक चाहे क्यों न उसे आशक की इज्जत हो । बनाये या बिगड़े यह तो सब अख्तियार है उसको ॥ कहां वह शहजादी और कहां फरहाद की इज्जत । बनाई बस वह शीराने इसे आशक हो तो समझे । आशिकने दिया तो क्या माशूकने उसे सम्हाला है । पर जो० ॥ हम जिसके आशिक हैं उसका हुकुम बजाया करते हैं । जो जो कहै वोः काम उसका कर लाया करते हैं ॥ लाख तरह के सदमे अपने दिलपै उठाया करते हैं । सितमगार का सितम नहीं जावाँ पर लाया करते हैं ।

शैर—फलक पर वो है और हम इस जहां के बीच रहते हैं। वह तो है ला मकां हम हर मकां के बीच रहते हैं॥ तबक चौदा के ऊपर से सदा आती है कानों में। वहां उसकी जबां ह्यां हम कुरां के बीच रहते हैं॥ देवीसिंह कहैं बनारसी भी आशिक भो-ला भाला है। पर देखा तो कुछ माशूक का रुतबा वाला है॥

## खुदा के नूर की तारीफ शिर से पैर तक।

कहरना जो अन्दाज गजब है अजब हुस्न दमके दमदम्। चाल में छलबल इशारे नहीं तेरे आफत से कम्॥ गरचे हुस्न तेरे की सिफत कोई लाख तरह से करे रकम्। क्या ताकत है जो उसके हाथ में ठहरे लोहे कलम्॥ जाये ताज्जुब है जलवा तेरा जल बेगर बना सनम्। तेरे नूर से हुआ कोहतर में वह मूसा बेदम्॥ हाथ मला यक मलै हूर हैरत खाखा के हुये कदम्। जिनो बसर बस तेरी ताबेदारी करते हरदम्॥ सर तापा तसबीर खिंची कुदरत की तेरी बिना कलम्। चाल में छलबल० ॥ १ ॥ सर तेरा है हर सरका सरदार तू है शाहे आलम्। उसके ऊपर ताज कलंगी औ छत्र झलके झमझम्। जुल्फ मुशलशिल में यह पेंचे हैं और तेरे हरबाल में खम॥ गोया नागिनी माहपर आईं चाटन को सबनम्। यामैं जुल्फ को अब कहूं या लाम अलीफ या नसर नजम्। या मैं उनको कहूं जुलमात याके जादय सितम्॥ आगे लाखों तिलस्म हैं जुल्फों में तेरे तेरी कसम्। चाल में छलबल० ॥ २ ॥ देख तेरे माथे को फलक पर आफताब खाता है शरम्। चीने जबीं से किरन खुरशैद की कांपै होके बहम्॥ सिफत करूं अबरूओं की तो शमशीर पर हो शमशीरे अलम्। याके कमां है बनी

सुलतानकी या है तेगे हुदम ॥ मिजों तीर पैकां है या नजर है या बरछी बल्लम । यक पल में वह करै कतलाम करैं एक पल में रहम ॥ तेरी नजर गर फिरै तो फिर होजांय कतल लाखों रुसतम ॥ चाल में छलबल० ॥३॥ चहरा गोल अनमोल के जिसका रश्क कमर को होवे गम । चश्म वह नरगिश कमलसे खिले हैं गोया बागे हरम ॥ देख के बैनी तेजी को हर यक का हो नाक में दम । गजब फड़कहै तेरे नथुनों की कहैं किस तौर से हम ॥ रुखसारों पर छुटा जैसे पसीना दो दरियाये अगम । बात बात में दिल्लगी शीरींसखुन औ जबां नरम ॥ हरयक आनमें जान निकले अदा अजायब हुस्ने यम । चाल में छलबल इशारे० ॥ ४ ॥ और जो करूँ तारीफ तेरे दन्दा की ऐ दिलजाने दिलम । या यह गोहर है बेश कीमत या है हीरों की किसम ॥ देख लबों पर पानकी लाली लालों का रुतवा हो कम । खालै जकब पर आनबर उगद सुरैया हुआ खतम ॥ चाहे जनखदां देखके तेरी चाह में डूबा कुल आलम । कद वह कयामत की जिससे सर्व सिद्धि को हो मातम ॥ गला सुराहीदार और सीना साफ आईना सा उत्तम । चाल में० ॥ ५ ॥ दस्त व नाजुक गोल कलाई हिना हथेली में रही रम । देख वह सुर्खी खूने दिल कितनों का हो नाखूं दम ॥ वो गोया हिलाल औ मखमली मुलायम बना शिकम । नाफ वह सागर कमर चीते सी वह जानूँ नूर के थम ॥ देख झलक कदमों की तेरे पैरों में आनगर पड़ा पदम । बनारसी कहै मैं आशिक तेरे नाम का हूँ हरदम ॥ नारंगी सी एड़ी तलुवे मलें तेरे बाबा आदम । चाल में छलबल इशारे नहीं

तेरे आफत से कम ॥६॥

## ख्याल इश्क मार्फत-बहेर लंगड़ी ।

कूं चे जाना कि दिल पर गर जरा किसी के हवा लगी । रहा नीमजां न उसको ताबे उम्र तक दवा लगी ॥ अदा हुआ जी जान से जिसको प्यारी तेरी अदा लगी । गदा हुआ वह इश्क की जिसके दिल पर गदा लगी ॥ सदा अनलहक कहूँ जवां से मुझे यह प्यारी सदा लगी । खुदी मिटगई खुदा की यादे दिल पर अब खुदा लगी ॥ चोट इश्ककी जिसके दिल पर जरा लगी या सिवा लगी । रहा नीमजां न उसको ताबे० ॥ १ ॥ तिला कर दिया मिसको खाक पा तेरी उसे यक तिला लगी । दिलादे अपना दीद तबीअत तुझसे ऐ दिला लगी ॥ सिलाए क्यों कर जखम जिगर के जिसको इश्ककी सिला लगी । मिला खाक में खाक सारी जिसको कामिला लगी ॥ इश्कके बीमारों को और कोई दवा न तेरे सिवा लगी । रहा नीमजा न उस को ताबे उम्र तक दवा लगी ॥ २ ॥ बला करै दिनरात इश्क की जिसके पीछे बला लगी । भला हो क्योंकर वह जिसको तेग इश्ककी भला लगी ॥ मला करूँ तलुवे तेरे मुझको यह चाह वरमला लगी । चला लामकां चाल कदमों में मेरे चंचला लगी ॥ तू है सभा में परवाना मुझको तो लौ तेरी वह लवा लगी । रहा नीमजां न उसको ताबे उम्र० ॥ ३ ॥ अथाह है दरियाए इश्क का कहो इसकी किसको थाह लगी । न था जो इसमें यह डूबा हरगिज इसकी न थाह लगी ॥ कहा छन्द देवीसिंह ने इन्हें इश्ककी प्यारी कथा लगी । जत्था हाले हैं जो शायर उन्हें बात यह यथा लगी ॥ बनारसी को सिवा

इश्क के बात नहिं रवा लगी । रहा० ॥ ४ ॥

## परमेश्वरके भजनमें रोनेकी तारीफ–बहेर लंगड़ी ।

रहे उम्र भर दरिया में निकले तो खुश्क गौहर निकले । सद आफरीं है जो मेरी चश्म से मोती तर निकले ॥ मिजें की नोकों पर जिस दम वह अश्क हमारे तुल निकले । अजब ताज्जुब हुआ ज्यों खार के ऊपर गुल निकले । चश्म हमारे उन्हें देखवे को जो यह खुल २ निकले । अश्क जो गुलरू बने तो दीदे भी बुलबुल निकले ॥ गर निकले इल्मास तो क्यों वह भी सूखे कङ्कर निकले । सद आफरीं है जो मेरी चश्म से मोती तर निकले ॥ १ ॥ कहो मैं क्या क्या तशवीहूं जो बन बन के आंसू निकले । मैं वहदत में कि गोया करते बिहिश्त से चूं निकले । मैंने कहा ऐ अश्क मेरी चश्मों से जिस तरह तू निकले । क्या ताकत है जो ऐसी लड़ी बनके ललू निकले ॥ कहीं जवाहर निकले वह भी स्वामिल पत्थर निकले । सद आफरीं है जो मेरी चश्म से मोती तर निकले ॥ २ ॥ रोया फिराके यार में मैं तो क्या २ अश्क बन २ निकले । यकीं यह हुआ कि दरिया इसी से गङ्गोजमन निकले । और भी कुछ कहता हूं सुनो इस जवांसे जो कि सखुन निकले ॥ अब्र पुतलिया बनी तो चश्म भी दो सावन निकले । अश्क मेरे पुर आब हैं गौहर खाली खुश्क जिगर निकले ॥ सद आफरीं० ॥ ३ । फुरकते जाना मैं जो कभी हम रोते जारजार निकले । तार न टूटा हार से तोफा गुंथे हार निकले । क्या ताकत इस दरिया के गरबार से कोई पार निकले ॥ बनारसी कहे जो निकले मगर तो हमीं यार निकले । और

जो निकले रत्न वह भी अश्कों से मेरे बतह निकले ॥ सद आफरीं० ॥ ४ ॥

## खुदा के नूर की आंखों की तारीफ बहेर लंगड़ी ।

तेग लगे तलवार लगे और तीर लगे तो चैन पड़े । नैन के मारे तडपते हैं कितने बेचैन पड़े ॥ एक झलक मूसा को नजर गर पड़ी तो वह लग गई नजर । गिरा कोहे पर न उसको तनो बदन की रही खबर ॥ जिसे इशारे रोज करैं वह क्यों कर उसका होवे गुजर । जिये किस तरह और फिर मरे भला कहो किस पर ॥ दिलका हाल दिल ही जाने जो जखम जिगर पर ऐन पडे ॥ नैन के मारे० ॥ १ ॥ तोप लगे बन्दूक लगे तो इसकी भी हो दवा कहीं । अगर दुगाडे नैन के लगें तो फिर वह बचे नहीं ॥ बरछी से बच गये कटारी की चोटें कितनों ने सहीं । नोके पलक की जरा भी चुभी तो वह रो दिये वहीं ॥ नींद कहां आती है जगते हैं हम तो दिन रैन पडे ॥ नैन के मारे० ॥ २ ॥ बांक में है क्या बांकपन और खञ्जर में वह अब कहां । चश्म के आगे दिखाई दे है किसी का रुआब कहाँ । अगर नशे की कहो तो देखी ऐसी भला शराब कहाँ॥कहा मस्तानों से भी गर पूछो तो आये जवाब कहाँ। लाखों दल कट जांय मेरे कातिल की जिधर को सैन पडे ॥ नैन के मारे० ॥ ३ ॥ वह हैं चश्म खूरैंज अब इनके खून का दावा कौन करे । डार पेंच ढक के बोला मन्शूर के अब हम नहीं मरे । उसे मिले दीदार जो आशिक मस्ताने हैं सरसे परे । बनारसी कहै हम हैं सरमद के पीर सुनहरे भरे । शबो रोज हर वक्त जबां से कहते हैं यही बैन पड़े ॥ नैन के० ॥४॥

## जीवन्मुक्त का ख्याल ।

मनको मार के बनाया मुर्दा जब यह तन आबाद किया । पहन के कफनी फकीरों ने तो कफन आबाद किया ॥ बस्ती को समझे उजाड़ सहारा औ बन आबाद किया । माल खजाना तर्क कर फक्र का धन आबाद किया ॥ लोमें शोले नूर के अपना जला के मन आबाद किया । आह से अपनी मेहर चरखे को हन आबाद किया ॥ जिसे कहैं वीराना सब मैंने वह वतन आबाद किया । पहन के कफनी० ॥ १ ॥ गुल खाखा गुलबदनपै मैंने वह गुलशन आबाद किया । जिस गुलशन से गुलों का हुस्न चमन आबाद किया ॥ कह के जबाँसे वह कुम बइजनी अपना सखुन आबाद किया । जिलाया मुर्दा हुक्म से उसका कफन आबाद किया ॥ जीते जी जो मरा उसी ने तो मुर्दा आबाद किया । पहन के कफनी० ॥ २ ॥ गम खाखा इस दिलपर हमने रंजो महल आबाद किया । दीवानों को पढ़ के दीवानापन आबाद किया ॥ तख्त सल्तनत छोड खाक पर वह आसन आबाद किया । जिस आसन से इन्द्र का इन्द्रासन आबाद किया । तर्क किया दुनियाँ का रास्ता और चलन आबाद किया ॥ पहन के कफनी० ॥ ३ ॥ अश्क से अपने दुर्वेशों ने दुरे रतन आबाद किया । इश्क में पैदा किया गम गम में जशन आबाद किया ॥ जिस जाँ आशक बैठ रहै उस जाँ संसकन आबाद किया ॥ कहै देवीसिंह नाम अपना रोशन आबाद किया ॥ बनारसी ने करके इश्क आश्की का फन आबाद किया । पहन के कफनी० ॥ ४ ॥

## आशक के आह की तारीफ—बहेर लंगड़ी ।

मेरी आहका तीर तोड़ गरदूं को गया लामकातलक । बेअदबी अब बहुत सी हुई कहूँ मैं कहाँतलक ॥ हुआ इस्क का जोर अब इस दिल में तो मैंने चाह करी । सातों फलक को चीर कर लामकान की राह करी ॥ वहाँ जो देखा नूर खुदा का खुदा का उसने पाप निगाह करी । और जहाँ में नहीं फिर किसीकी मैंने चाह करी ॥ आशक सादिक नाम मेरा यह रोशन है कुल जहाँ तलक । बेअदबी अब० ॥ १ ॥ अजब मजा पाया है हमने अपनी आह सोजां के बीच । हुस्न खुदाई दिखाई दे है मेरी जांके बीच ॥ नहीं वह जलवा मुल्क में देखा और न हूर गिलमा के बीच । नहीं मेहर में नहीं वह झलक माहेतावाँ के बीच ॥ मेरी आह रोशन है सातों जमीं और कुल आसमाँ तलक । बेअदबी अब० ॥ २ ॥ इसी आह से इश्क यह पैदा हुआ और आशक नाम हुआ । इसी आहसे जहाँमें सारे मैं बदनाम हुआ ॥ इसी आह से हुआ सखुन मस्ताना मस्त कलाम हुआ। इसी आह से वह पैदाम वहदत का जाम हुआ । मेरी आह है लिखा देखलो जाके कुल में कुराँतलक । बेअदबी अब० ॥ ३ ॥ इसी आह से कुफ्र तोड़के काफर को मारा हमने । इसी आह से किया दुश्मन पारापारा हमने ॥ इसी आह से पाया वह दिल में दिलपर प्यारा हमने । इसी आह से कर दिया फनारंज सारा हमने ॥ बनारसी कहै जहाँ वह हक है मेरी आह है वहाँतलक । बेअदबी अब० ॥ ४ ॥

## जो आशक को छेड़े उसका यह हाल हो ।

हम आशक हैं हमें न छेड़ो छेड के पछतावोगे तुम । आह से

गरदूं गिर पड़ेगा तो दब जावोगे तुम ॥ गर हमको छेड़ोगे तो निकलेगी इस दिल से आतिशे आह । आग लगेगी वह जिससे कुल जहान होवेगा तबाह । कहाँ भागके बचोगे तुम फिर कहीं नहीं पावोगे राह । हक्क कुलाये बात है इसका है अल्लाही गवाह । जिसने आशक को छेड़ा वह नहीं बचा हरगिज वल्लाह । कसम खुदा की बात यह कुल जहान में है आगाह ॥

शैर-तुम्हें वाजिब नहीं है आशकों को जोर दिखलाना ।
जो होवे नातवां उसको न जोर और शोर दिखलाना ॥
अगर तुम जोर दिखलावो तो फिर मत कोर दिखलाना ।
जो भागे इश्क के मैदां से उसको गोर दिखलाना ॥

आशके दिल को कभी सताने से न चैन पावोगे तुम । आह से गरदूं० ॥१॥ शबोरोज हम आप मरे रहते हैं हिज्र गमके मारे । हमें सताना तुम्हें नहीं वाजिब है मेरे प्यारे ॥ अभी आह कर मरूँगा तो बरसेंगे फलक से अङ्गारे । कोई बचेगा नहीं मर जायँगे कुल बिन मारे ॥ मेरी आह से डरें औलिया पीर पयगम्बर भी सारे । इसी वास्ते नहीं भरता हूं मैं आहों के नारे ॥

शैर-अभी गर उफ़ करदूं कुल जहाँ पल में उलट जावे ।
जमीं ऊपर हो और वे आसमां पल में उलट जावे ॥
ये मौसम सब उलट जावे समां पल में उलट जावे ।
हरेक दरिया उलट जावे तवां पल में उलट जावे ॥

हम तो आपी जले हैं हमको और भी जलावोगे तुम । आह से गरदूं ॥ २ ॥ छेड़ा शम्सतबेरज को वह मुलतान अबतलक जलती है । वहाँ से आशत देखलो अबतक नहीं निकलती है । और छेड़ा सरमद को दिल्ली इधर से इधर उछलती है । आशिके

सादिक के आगे रूसतम की नहीं चलती है ॥ मेरी आह से समा है रोशन आतस अबतक बलती है । काफर को ये जला देती है औ मुझको फलती है ॥

शैर-निकालूं दिल से मैं गर यारब अपनी आहसोजां को ॥
जला डालूं हजारों कोस तक जंगल बियाबां को ॥
करूं मैं खाकसा इस आहसे बस्ती औ वीरां को ।
कयामत आह से करदूं दिखाऊँ मैं वह तूफां को ॥

छेड़छाड़ गर करोगे आशक से तो घबराओगे तुम । आह से गरदूं० ॥ ३ ॥ जिसने आशक को छेड़ा फिर उसका घर बरबाद हुआ । गया हसको नहीं वह दुनियां में आबाद हुआ । दोजख उसको मिली और वह बहिश्त से बेदाद हुआ । नाम उसीका जहाँ में काफर और जल्लाद हुआ ॥ ये है सखुन आशकों का इसपर जिस जिसको एतकाद हुआ । दोनों जहाँ में उसी का भला हुआ दिल शाद हुआ ॥

शैर-सदा ये आशकों की है भला होवे भला होवे ।
अदापर उसकी ये दिल देखिये किस दिन अदा होवे ।
उसीका नाम रोशन हो जो उल्फत में जला होवे ॥
कहे ये छन्द देवीसिंह मेरा दिलवर खुदा होवे ॥

बनारसी यह कहै अगर नापाक इश्क गावोगे तुम । आह से गरदूं गिर० ॥ ४ ॥

## खुदा से बन्दे का सवाल जबाव-बहेर लंगड़ी ।

खुदा तू है बरहक तो मैं भी हक जबां से कहता हूं । आब जो है तो मैं भी लहर बरहम रहता हूँ ॥ अगर तू है आतश तो मैं भी उसीका अंगारा हूंगा । तिल तू है तो मैं जेवर

तेरा प्यारा हूंगा ॥ गर तू है सीमाव तो मैं भी सनम् पारापारा हूंगा। आहन तू है तो मैं भी बना तेरा आरा हूंगा। जो तू है दरिया तो मैं हां मौजरवां हो बहता हूं। आब जो० ॥ १ ॥ तुही तो है दम में दम तो मैं भी आदम कहलाता हूँ। हुस्न जो तू है तो जलवा तेरा दिखलाता हूँ॥ गरचे तू खामोस रहै तो मैं नहिं जबां हिलाता हूँ। तुही है मेरा तो मैं प्यारे अब तेरा कहाता हूँ॥ तुही नहीं गम खाय तो फिर मैं जहाँ में किसीकी सहता हूं। आब जो० ॥ २ ॥ तेरा नहीं कोई दीन तो मेरी बात का कौन ठिकाना है। तुझने न जाना तो फिर मुझको किसीने न पहिचाना है॥ तू है फख तो मेरा भी दिल फकीर तेरा दीवाना है॥ तू है लामकां तो मेरे मकां को किसने जाना है। तूहै सांवलिया शाहतो प्यारे मैं,नरसीमेहता हूं॥ आब जो० ॥ ३ ॥ तू है शम्स तो मैं भी शम्स तबरेज जहां में आया हूं। मुझमें तू है और मैं तेरे बीच समाया हूं॥ गर तू है नापैद तो मैं भी नहीं किसीका जाया हूं। बनारसी कहै जो तू कुदरत तो मैं भी माया हूं॥ तूने पकड़ा हाथ मेरा मैं बाजू तेरा गहता हूं। आब जो तू है तो मैं भी लहर बहर में रहता हूं॥ ४ ॥

## खुदा से बन्दे का सवाल जवाब।

खुदा तू गर है इश्क तो मैं आशिक हूं हर नूरानी का। शान जो तू है तो मैं पुतला हूं तुझ लासानी का॥ अगर तू राजेनियाँ है तो मैं पोशीदा इस तन में हूं। तू है गुलिस्ता तो मैं भी गुञ्चा उस गुलशन में हूं॥ तू चाह तो मैं भी डूबा प्यारे चाहेजकन में हूं। भला तू जो है तो मैं भी हरदम उसी लगन में हूं॥ तेरी नहीं तस्वीर मुझे खींचे यह न सतवामानी

का । शान० ॥ १ ॥ तू है पाक तो मेरा भी दिल साफ मिस्ले आईना है । जान जो तू है तो मेरा तेरे हाथ में जीना है ॥ अगर तू दानिशावर है तो दिल मेरा दाना बीना है । बुलन्द है तू तो मेरा तेरे बाम पर जीना है ॥ तू है मौज दरिया तो मैं भी हूं वह बुलबुला पानी का । शान० ॥ २ ॥ तू है खुदा तो मैं भी तेरे से जुदा नहीं जीजान से हूं । यकीन है तो मैं साबित अपने ईमान से हूं ॥ तू है दोस्त मेरा तो मैं तेरा यार भी हर एक आन से हूं । तू है तसव्वर तो मैं भी पूरा अपने ध्यान से हूं ॥ तू है लिबासे नङ्ग शौक है मुझे तने उरयानी का । शान० ॥ ३ ॥ तू है एक तो मुझसा दूसरा और जहाँ में कौनसा है । कल्मा तू है तो मेरे सिवा कुराँ में कौनसा है ॥ देवीसिंह कहैं बगैर तेरे मेरी जां में कौनसा है । नातवानी में और ताकते तमां में कौनसा है ॥ यही सखुन है निर्दआश के बनारसी हक्कानी का । शान जो० ॥ ४ ॥

## तारीफ सनम के पान खाने की-बहेर लंगड़ी ।

क्या ही झलक दन्दां में हुई प्यारे तेरे मुसक्याने से । बर्फ तड़पने लगी अखतर रहे मुंह दिखाने से । अजब तिलिस्म हुआ जालिम तेरे उस पान चबाने से । मरजां गोहर जमुर्रद निकल पड़े हखाने से ॥ शफक्कादम फक हुवा बहुत फूली थी सुरखी पाने से । अनार के भी दाने मौताज होगये दाने से ॥ देख तेरे दंदां की झलक उठ गये लो लाल जमाने से । बर्फ तड़पने० ॥ १ ॥ भूल जाय जौहरी परखना रतन औ फिरें दिवाने से । दन्दों तेरे देख पायें जो किसी बहाने से कितने । ही गये डूब वह सागर में भी गोता खाने से । पर नहीं वाकिफ

हुए वह भी ऐसे हुर्दाने से । सूख गया वह लहू तेरे दाँतों की सिफ्त सुनाने से। बर्फ़ तड़पने लगी० ॥ २ ॥ शर मिन्दा होगये जवाहर दांतों के चमकाने से। खून उगलने लगे हीरे क्या हो पछताने से। देखें मुरस्से साज तो रह जांय अपना काम बनाने से। यह वह जड़त है जडी बस खुदा के हाथ लगाने से॥ आज मुझे मिल गया मजा इस हँसी में तुम्हें हँसाने से। बर्फ़ तड़पने लगी० ॥ ३ ॥ टुकड़े हों याकूत तेरे दाँतों के रूबरू आने से। करै चमेली बात ये अपने और बेगाने से॥ पान ने भी पाई लाली उस माहेल का के खाने से। इसी वास्ते वो वह बस्ती में आये वीराने से। ये दन्दां निकले हैं वे वहाँ खुदाके सुनो खजाने से। बर्फ़ तड़पने० ॥ ४ ॥ बनारसी ने कहा हाल ये अपने मन मस्ताने से। इन दन्दोंमें देखले खुदा मेरे दिखलाने से। थक जायगा ओ नादां तू लामकान के जाने से। यहीं देखले नूर दन्दां में यार के आने से॥ ऐसी सिफ्त दाँतों की किसी से बनै नहीं बनवाने से। बर्फ़०॥

## पानकी लाली की तारीफ़—बहेर लंगडी ।

पान की लाली से वह झलक दन्दां में तेरे लालों की बनी। लाले बदक्शां देखकर जि खाँय हीरा की कनी॥ आज जो हँसके बोला तो दहन में वह दन्दां चमके॥ जिगर छिद गया हर एक गौहरका सुनो मारे गमके॥ सुनते ही वह सिफत सूखकर होश उड़ गये शबनमके॥ क्या ताकत है मुकाबिल दन्दां के अखतर दमके॥ हर एक जवाहर के ऊपर प्यारे तेरे दन्दां हैं गनी॥ लालेबदक्शां ०॥ १ ॥ अगर चमेली को देखूं तो उसका सुर्ख लिबास कहां । मगरजो

टुकड़े हुआ उनके जीने की आशा कहाँ ॥ झूठ नहीं बोलूंगा सनम् मुझको कोई का पास कहां । सच कहता हूं मुकाबिले दन्दां के इलमास कहाँ ॥ क्या ताकत है गर इनके डबरू चमक सके कोई और मनी ॥ लाले बदक्शा० ॥ २ ॥ इन्हें देखकर बर्फ़ तड़पती है वह आसमां के ऊपर । सदके करदूं शफ़क को भी इन दन्दां ऊपर ॥ किसी से निस्बत कभी न दूं नहीं लाऊं इस जबां के ऊपर । दन्दां तेरे झलकते हैं वह लामकां के ऊपर । सायत तू पीसे जो दांत तो दम में करदे फनाफनी । लाले बदक्शां ० ॥ ३ ॥ गर जो कोई याकूत कहे तो जबां को उसकी कटवाऊं । अनार के भी कहैं दानेतो काटके मैं खाऊँ । और जो कहे गौहर की लड़ी तो उस को भी मैं छिदवाऊं । किसी से निस्बत न दूं नहिं सुनूं न खातिर में लाऊं ॥ बनारसी गर कहै तो क्या दिल में उसके अब यही ठनी ॥ लाले बदक्शां०

## ख्याल तौहीर अर्थात् वेदांत मतलब उलटा ॥

### ❀ बहेर लंगड़ी ❀

बुरा किया तो भला हुआ चोरी करने से शाह बने । गदा से हो गये बादशाह बन्दे से अल्लाह बने ॥ जात से हो बे जात जो कोई तो उसका वह दीन बने । शक्ल शताहत बिगाड़े तब चहरा रंगीन बने ॥ इमान से छोड़े इमान को पूरा जभी यकीन बने ॥ लौमें शोले नूर के जले तो वो लवलीन बने । जबां कटी तब बोलन लागे फूटे नयन निगाह घने ॥ गदा से० ॥ १ ॥ करके गौर देखा हमने तो आजाब से बड़ा सबाब बने । लाजवाब गर सनम से हो तो खूब जबाब बने । मय वहदत कहते हैं उसे जो अश्क से मेरे शराब बने ॥

लज्जते शीरीं मिले जब जलके जिगर कबाबा बने ॥ बुतखाने से बहिश्त और यमखाने से दरगाह बने ॥ गदा से० ॥ २ ॥ शिर को काटके अपने दस्त पर रक्खौ तो सरदार बने । माल मुल्क सब तर्क कर बैठे तो सरदार बने ॥ तयार दिल को कभी न उड़ने दे तो वह परदार बने । जिन्दा उसको समझते हैं हम जो मुर्दार बने ॥ चलन से जब बदचलन हुए तो लाभ कान की राह बने । गदासे हो० ॥ ३ ॥ जिसे कहैं सब हराम हमने देखा वही हलाल बने । घोल के जिसने लगाली स्याही वह फिर लाल बने ॥ जो कि हुये पैमाल जहाँ में वह साहेब कमाल बने । बनारसी के सखुन पर क्या ताकत कोई ख्याल बने ॥ जमीं से होगये आसमान और अख्तरसे हम माह बने । गदा से हो गये बादशाह बन्दे से अल्लाह बने । ४ ॥

## रंज में राह इश्क पूरा— बहेर लंगड़ी ।

मैं आशक हूँ रंजो अलम का गर ये मेरे पास न हो । मुझ मरीज को तो फिर यकदम जीने की आश न हो ॥ बेचैनी से उल्फत है बेकली से याराना अपना । हिजर है अपना दोस्त औ वतन है बीराना अपना ॥ आह की नकदी पास में है खाना हैं मयखाना अपना । जीना यही है किसी के ऊपर जीजान अपना ॥

शैर—फुरकते यार वह क्या मजे दिखलाती है । बेकाराहि मेरे दिलको बहुत भाती है ॥ वस्ल होता है तो वो बात चली जाती है । इन्तजारी से तबियत नहीं घबराती है ॥

रंग जर्द नहीं हो अपना और चहरा मेरा उदास न हो । मुझ मरीज को० ॥ १ ॥ जो आशक सादिक हैं उनकी जीस्त जान का खोना है । यही खुशी है जो उस दिलबर की याद में रोना

है ॥ खाकके सोने से बत्तर पन्ना और चाँदी सोना है । बाजू से बेहतर हमें अश्कों से मुंह का धोना है ॥

शैर—टपक के आँसू जो रुखसार पर ढलकते हैं । तो मेरी आँख में जौहर हर एक चमकते हैं ॥ ये मस्त दोनों हैं और दो जहाँ को तकते हैं । दीवाने दीद के हैं अब ये कब झपटते हैं ॥

जो जुल्म और जफा में अपना दुरुस्त होश हवाश न हो । मुझ मरीजको० ॥ २ ॥ प्यास हमारी बुझती है इस खूने जिगर के पीने से । वाकिफ हुवा हूं मैं अपनी चाह के जरा करीने से ॥ काम नहीं काशी से मुझे नहीं मक्के और मदीने से । और न आरजु हमें मरने की न मतलब जीने से ॥

शैर—आतिशे इश्क से जबके जिगर तर होता है । जेरसाये से सनम के ये जबर होता है ॥ और बेखबरीसे दिलहागिज न खबर होता है । नफा है इश्क में यही जो जरर होता है ॥

गर्चे कत्ल नहीं होवें हम तो काम इश्क का रास न हो । मुझ मरीजके० ॥ ३ ॥ दर्द हमारा दिलवर है हरवक्त इसीसेयारी है । बेदर्दों से भी अपनी कुछ नहीं गिले गुजारी है ॥ सूली पर मन्शूर ने वो अनलहक सदा पुकारी है । जान गई बला से नाम तो उसका जारी है ॥

शैरे-इश्कबाजीमें अगर जानकी बाजीहो जाय । तौतबियत यह मेरी खूब सी राजी हो जाय । चाहे हम पर हो जफा या दगाबाजी हो जाय । रजा में राजी हैं उसके जो वह राजी हो जाय ॥

बनारसी कह अगर्चो मेरा मुरसद देवीदास न हो । मुझ मरीज को तो फिर यकदम जीने की आश न हो ॥ ४ ॥

जो रंज उठावेगा खुदा को पावेगा-बहेर लंगड़ी।

कहा ये मुझसे रंज ने आशक मेरे पास न हो । तो दुनियामें आशकी आशक की फिर रास न हो ॥ इश्क है मेरा मकाँ औ में रहता हूँ उसीके खाने में । वही नहीं आशक कि जिसके दर्द न होवे शाने में ॥ तीर में क्या है लुत्फ मजा मिल जाय जो रहो निशाने में । बस्तीमें नहीं गुजर आशक हैं मस्त वीरानेमें ॥ सूख गया मजनूं औ वह ताकत बनी रही मस्ताने में । अब तक जिसका नाम रोशन है सुनो जमाने में ॥

शैर—है कहाँ तकलीफ व तलुवों में जो चुभते हैं खार । हँस पड़ा मन्सूर तो शरमा गई उस जांपे दार ॥ रंज ये कहता है आशक वह करै जो जां निसार । हर कदम पर तीर हो हर दिल में हो वह जिक्रे यार ॥

चोट न आशक सहे और अपना खूं पीने की प्यास न हो ॥ तो दुनियां में० ॥ १ ॥ दमभर का है रंग औ फिर राहत है कयामत तक बाबा । उठाले सिर पर अलम तो देखे लुत्फ इसमें क्या क्या ॥ रंज यही कहता है जो आशक पक्का हो तो इधर को आ । जुल्म से मुतलक न डर औ खौफ न अपने दिल में खा ॥ सर को काटकर सरमद ने जिस वक्त हथेलीपर रक्खा॥उसी वक्तसे नाम मुतलक न बादशाहका रक्खा।

शैर—कर दिया तख्त तबाह देहली की अब उड़ती है धूल ॥ क्या खता सरमद की थी, थी शाह की मुतलक यह भूल ॥ देखिये अब इस गुलिस्तां में वह कब आवेगा फूल । गर करे यह अर्ज आशक तो खुदा को ह कबूल ॥

रंज ने ये फर्माया आशक को मेरे कुछ पास न हो । तो

दुनिया में० ॥ २ ॥ और से चिर जाँय नहीं घबराँय जो आशक हैं पक्के। सीना सामने करें दिलबर जो चोट मारे तक्के ॥ कभी न निकले मकां से वह गर लाख बजे के दे धक्के। दरे यार को छोड़ नहीं जांय वह काबे औ मक्के ॥ जैसे जुवारी जोरू हार के हो जाते हैं भव चक्के। तो भी अपनी जबां से कहा करें वह पौ छक्के ॥

शैर-इश्क में बाजी है सर की काम दौलत का नहीं। इससे बेहतर खेल हमने और कोई देखा नहीं ॥ जिसने अपना शिर न बेचा कुछ मजा चक्खा नहीं। आशकों ने जीते ही तन बदन रक्खा नहीं ॥

लाख बने के सदमों में गर दुरुस्त होश हवास न हो। तो दुनियां में० ॥ ३ ॥ खाक में गर मिलजाय गोर से गुल हो करके निकलते हैं। अजब है आशक मार्ग के बाद भी फूले फलते हैं ॥ रोशन हो कुल आलम में जो खड़े इश्क में बलते हैं। उन्हें देखकर जो पत्थर हो वह भी पिघलते हैं ॥ देवीसिंह के सखुन पर शायर हरेक हाथ को मलते हैं। चारों तरफ से वाह वाह करें औ बहुत उछलते हैं ॥

शैर—ये काल में मारफत है रंज से राहत मिले। जो कि डूबा चाह में फिर उसे चाहत मिले। गम अगर खायें तो उसको रोज फिर न्यामत मिले। दीद उस दिल्बरका जीते औ ताक्यामत मिले रंज ये बोला बनारसी से गर तू मेरा दास न हो। तौ दुनिया में आशकी आशक की फिर रास न हो ॥४॥

## बागे बहेश्त में खुदा के आनेकी तारीफ-बहेर लँगड़ी।

बाग बाग हुआ बाग आप जब आये बागे इरम के बीच।

फूल फूल के गिर पड़े हरयक फूल हर कदम के बीच । जुल्फ मुसल्लिस देख पेच में आया सम्बुल चमन के बीच ॥ नयनने तेरे शर्मदी नरगिस काले हिरनके बीच । फूल रहीहै फुलवारी वो प्यारे तेरी फबन के बीच ॥ कदपर सदके करूं मैं सर्वसिंह गुलशन के बीच ।

शैर-करूं लबपर तसद्दुक लाल गुल्लाले के दो टुकड़े ।
आ दंदां मोतिआं देखे तो ऐस की आब सब उतरे ॥
अगर्चे मुस्करा के और करे कुछ बात तू हँस के ।
तो होवे बेकली हर एक कली फूटे खिले गुंचे ॥

कौन वो है खुशबू जो बसी है नहीं तेरे दम कदम के बीच । फूल फूल के० ॥ १ ॥ रुखसारों को देख गले गुल गुलाब तेरी लगन के बीच । सदा सुने तो धुनें शिर तूती आगि लगे अगन के बीच ॥ भरा हुआहै चाह हुस्नका आपकी चाहे जकन के बीच । डूब गये हम न दहसत करी जरा इस मन के बीच ॥

शैर-फिदा दिल है गुले राना तेरे ऊपर हरेक गुलका ।
दिखावादे बहारी और पिआदे जाम उस मुलका ॥
मचे वो कहकहे और चहचहे गुल हो तज मुलका ।
खुलें परवाल कुमारी के कहा ले मान बुलबुल का ॥

शाख शाख हो हरी शजरकी लगे कमल हर कमल के बीच । फूल फूल के० ॥ २ ॥ नजर पड़ी जिसवक्त गुलिस्तां की तेरे परैहन के बीच । चाक गरेवां किया गस खाके गिरे गुलधरनके बीच ॥ वह है नजाकत आंपमें ये हैं कहां जुही यास मन के बीच । बनबन के सब फूले फूल हैं तेरे यौवन के बीच ॥

शैर-हुआ सुर्गी ने चमन का दिमाग तर बूसे ।

महक आने लगी उल्फत की वो तुम्ह गुलरू से ॥
सिफत मैं किस तरह तेरी करूं कौन मुंह से ।
खार की बात न तूने करी कभी मुंह से ॥
लगी चाटने तलवे तेरे आई तेरी शबनम के बीच । फूल फूलके० ॥ ३ ॥ मुरझाया दिल हरा हुआ हुई गुलजारी गुल बदन के बीच । खिजां का मुतलक नाम नहीं रहा गुलों के वतन के बीच ॥ झुक झुक के सब करैं डालियाँ सिजदा तेरे चरणाकेबीच । कहै देवीसिंह ख्याल तौहीद मारफत सखुनकेबीच॥
शैर–खिंचा नक्शा मेरे दिल पर है वह तेरी सफाई का ।
बसी तस्वीर आँखों में और है जलवा इलाही का ॥
किसी को ताज बख्शा और किसी को तख्त शाही का ।
गदाई हमको दी जिस दम दिया दावा खुदाई का ॥
बनारसी कहै गजब झलक है तेरे कदम के पदम के बीच । फूल फूल के गिर पड़े ॥ ४ ॥

## दवा इश्क की बीमारी की किसी ने न लिखी सो हमने लिखी ।

नुस्खा इश्क का लिखता हूं गर किसीको ये आजार भी हो। जहर हलाहल पिये तो जिये औ ताकतदार भी हो ॥ जख्म जिगर पर कारी हो और भीतर उसके गार भी हो । फूले धतूरा लगे तो गुलशन बाग बहार भी हो॥ लगें इश्क के तीर और ऊपर से पड़ती तलवार भी हो । झुकादे सर को सो उस से मौत तलक लाचार भी हो ॥
शैर—यार को मिलने को तुझसे जो कुछ इनकार भी हो ।
तू आँखें बन्द जो करले तो औ दीदार भी हो ॥ बात ही बात

में उससे कभी तकरार भी हो । जवाब उसका न तू दे तो फिर वो यार भी हो ॥ मैं तो यही लिखता हूँ इश्क का भला कोई बीमार भी हो । जहर० ॥ बेचैनी हो दिल पै बंधी आंसुओं का हर दंतार भी हो । दवा है उसी के कुछ इस दिल को सबरो करार भी हो ॥ शोरों फिगांहों,जबां पर हरदम आहे आतिशबार भी हो । जिगर जलाये तो दिल हो रोशन उससे प्यार भी हो ॥

शैर—मिसले मनसूर जो उल्फत में तुझे दार भी हो । तू हो बे खौफ तो फिर दार वो नादार भी हो ॥ किसी के इश्क में दिल तेरा बेकरार भी हो । मिले वो तुझको जो जां उसपै से निसार भी हो । तड़फे मुर्ग बिसमिल की तरह से और जीना दुश्वार भी हो । जहर० । तेरे मारने के खातर वो जुल्फ जो उसकी मार भी हो । बलायें उसकी तू सरपर ले तो दिल हुशि-यार भी । रश्के चमन की लगन में तू गर सूखके मिसले खारभी हो । गुलों के ऊपर जो गुल खायें तो गुले गुलजारभी हो ।

शैर—सनम की चाह में ऐ दिल तू असकेवार भी हो । जो गोता मार के डूबे तो उसके पार भी हो । अश्क गोहर का गले में किसी के हार भी हो । औ मालामाल हो जो उसका खरीदार भी हो । दर्दसरी हो इश्क की औ उलफत का चढ़ा बुखार भी हो । जहर० ॥ मिसले कैस सहरा में तू दीवाना आशके जार भी हो । खयाले लैला से तेरा वहीं वस्ल दीदार भी हो। इश्कके सौदे में जो किसी का छूट गया घरबार भी हो । लुटादे सब कुछ मालो असबाब तो फिर जरदार भी हो ॥

शैर—कत्ल करने को जो वोह इश्क सितमगार भी हो । जान दैने को तू अपनी वहीं तैयार भी हो ॥ दामे का कुल में

तेरा दिल जो गिरफ्तार भी हो। बला से उसकी न तू डर जो मारा मार भी हो ॥ देवीसिंह कहैं बनारसी गर इश्क में कोई मुरदार भी हो। जहर० ॥

## ख्याल सूमोंका-कंजूसोंका बुरा हाल-बहेरलंगड़ी।

इस दुनियाँ में आये खुदा के हुए न प्यारे चले गये। किसी को कुछ नाहिं दिया तो हाथ पसारे चले गये ॥ शिकम में जब तक कैद रहे तो कहा खुदा की करेंगे याद। बाहर आये तो रोने लगे करी मां से फरियाद। दूध पिया माँ का औ छाती मली किया योवन बरबाद। लगे मांगने खिलौना खेल कूद में हो रहे शाद ॥

शैर—लगी हवा जो जमाने की तो सब भूल गये। पिया जो दूध मुफत का तो उसमें फूल गये ॥ कभी सोये जो पालने में पाँ पसार के वह। तो नींद ऐसी वह आई कि उसमें भूल गये ॥ कभी हिंडोले पर गाजे बाबा ने उतारे चले गये। ॥ किसी को०॥ दौलतवर के घर में पैदा हुए तो गहने सोने के। बहुत दिनों तक उन्होंने बदन में पहने सोने के ॥ चाँदी के नाहिं पहनूंगा अब लागे वह कहने सोनेके। हमेशा जेवर लगे वो रहिने सोने के ॥

शैर—रहे जबतक सब नादां तो सबने प्यार किया। किसी को बोसा दिया और किसी को प्यार किया ॥ लगे पढ़ने को इलम मोलवी पण्डित के यहाँ। तो कुछ दिनों में दिल को खूब होशियार किया ॥ इधर उधर आँखों को लड़ा मार नज्जारे चले गये ॥ किसी को० ॥ जिस दिन पैदा हुए औ तो नाहिं दिन का हाल सब भूल गये। खुदा से वादा किया उसका

खयाल सब भूल गये ॥ किसी से जो कुछ लिया तो ओ उस का भी माल सब भूल गये । ये नहीं समझे कभी आवेगा काल सब भूल गये ॥

शैर—नशा चढ़ा जो जवानी का तो बदहोश हुये ।
किसी ने कुछ भी जो मांगा तो ओ खामोश हुये ॥
कोई कहने लगा अपनी जो वो तकलीफ का हाल ।
खयाल कुछ न किया और न उधर गोश हुये ॥

लालाजी लेने आये देने के मारे चले गये । किसी को कुछ नहिं दिया तो हाथ पसारे चले गये ॥ खोया लड़कपन खेल कूद में गई जवानी रांड के साथ । हमेशा सोहबत तो उनकी रही ओ भडवे भांड़ के साथ ॥ दाँत टूट गये तो फिर रोटी लगे ओ खाने खांड के साथ । बैल जो बुढ्ढा हुआ तो कहाँ मिले फिर सांड के साथ ॥

शैर—जमा जोरी उन्होंने तो वो आजार हुआ ।
उसी में मालो मता भी बहुत सा ख्वार हुआ ॥
कभी खैरात न की ओ न दिया भूखों को ।
तो उनके घर में वह हुकमाओं का दरबार हुआ ॥

कोई लाँगर हो के मर गये कोई बने करारे चले गये ॥ किसी को कुछ० ॥ लाखों में कोई हुआ सखी और बहुत जहाँ में देखे सूम । कहे देवीसिंह तो आखिर सूमों का फूटा मकसूम ॥ बनारसी कहे मैंने देखा खूब मुझे ये है मालूम । मेरी नसीहत अगर माने तो हो मुलकों में धूम ॥

शैर—येसखुन मैंने कहा कुछ भी ज्ञान में आया ।
जरा तो मुखसे कहो हाँ के ध्यान में आया ॥
वे सिर्फ सुनते ही आये थे न कुछ भी समझे ।

तुम्हें हमारी कसम कुछ भी कान में आया ॥

सूमों से देने को कहा तो औ दुइमार चले गये । किसी को कुछ नहिं दिया तो हाथ पसारे चले गये ॥

## खुदा की राह में जो चाहे चलता है उसका हाल ।

बहेर लंगडी ।

कूंचे जाना में गर कोई धरके जरा कदम निकला । फिर वो न निकला उसी कूंचे में उसका दम निकला ॥ ये है रास्ता सख्त गर कोई इससे नागहां आन पड़ा । जान बूझ के फिर वो देता है इसी में जान पड़ा ॥ कहीं तीपस में तपे कहीं कांटों का नजर मैदान पड़ा ॥ कदम कदम पर अब हमको लुत्फ इश्क का जान पड़ा ॥ शैर—हमें गुलशन से भी बहतर हैं इश्क के कांटे । ये फर्श खारके तोफा हैं;मुझे मखमल से ॥ कहूँ मैं किससे सुनै कौन इश्क के किस्से । जो देखै हाल हमारा तो कैसे भी रोदै ॥ रहा वहाँ का वहीं देखने जो अपना हमदम निकला ॥ फिर वो न निकला उसी कूंचे में उसका दम निकला ॥ १ ॥ मजा चाहका जिसने देखा होगा वह डूबा होगा । बहेर इश्क में जो तेरा होगा वह डूबा होगा ॥ अश्क चश्म से जिसका बहता होगा वह डूबा होगा । चाहे जकन पर जो शैदा होगा वह डूबा होगा ॥ शैर- बहेर उल्फत का किसी को भी किनारा न मिला । या खुदा ना खुदा का वहाँ पर इशारा न मिला ॥ किस्तो हरगिज न मिली कुछ भी सहारा न मिला । थाह मुतलक न मिली दम भी गुजारा न मिला ॥ लगा न थल बड़ा उस जांपर से न कोई आदम निकला । फिर वह न निकला उसी कूंचे में उसका दम निकला ॥२॥ इश्क को जो देखा खड़ा है मेरे सिर पर

दार लिये । हुस्न को देखा तो वह धमकाताहै तलवार लिये ॥ जुल्फ यही कहती है कि मैंने कितनेही आशक मार लिये ॥ चश्म इशारे करे हैं जादू के हथियार लिये॥कौन इस कत्ल के मैदां से निकल जावेगा । किस तरह काकुलेपेंचा से निकल जावेगा, कोई न इश्क के तूफां से निकल जावेगा, न निकल जावेगा॥गर जांसे निकल जावेगा, तनिक अबरू तू जिस पर वह लेके तेगे दुदम् निकला । फिर वह न निकला उसी कूंचेमें उसका दम निकला । ३ । कत्ल हुआ वह जिसने इस मैदां में आके कदम मारा । गिरा जमींपर न उसने आह करी औ न दम मारा, उनके हुस्न के आलम ने एक आलम का आलम मारा॥कहै देवीसिंह गया मैं भी इसमें उसदम मारा॥ इश्क ने दार पर मन्सूर को चढ़ायाहै । हुस्न ने यारके कोहतूर को जलाया है, नूर ने जिसके हरयक नूर को बनाया है । शहूर उसमें बेशहूरको बताया है ॥ बनारसी कर तर्क जहाँ को सीधा राहे अदम निकला । फिर वह न निकला उसी कूंचे में उसका दम निकला । ४ ।

## सनम के ज़ुल्फ से लगाके और सब तारीफ ।

### बहेर लङ्गड़ी ।

जुल्फसिला से मारसिआ है चश्म से लाली मुलमें है । नक्शा कद का कयामत धूम यह आलम कुल में है ॥ सरसे हर सरदार बने पेशानी जल खुरशीद, चीने देवी को वह है तहरीर न जिसकी दीदोशुनीद॥अबरू से झुकी कमां औ पैदा हुआ फलक पर मोहईद । खंजरेबुर्राने वह पाई बाढ़ किया लाखों को शहीद ॥

शैर—है कुरां में वह जो बिस्मल्ला अबरू से बनी ॥
औ अली की तेग भी बल्लाह अबरू से बनी ॥
और सिफत क्या२ करू मैं कुछ कहा जाता नहीं।
जो चला झुकके तो उसकी राह अबरू से हनी ॥

तुझ गुल का चर्चा गुलेराना यही तो हर बुलबुल में है।
नक्शा कद्का कयामत धूम यह आलम कुल में है ॥ २ ॥
मिजैसे पैका बने औ नस्तर चुभे रगेजां पर आकर। खार भी उस दम खटकने लगे मेरे बां पर आकर ॥ निगासे वह तलवार चली सो लगी भीमजां पर आकर। आह भी मुतलक न ठहरी मेरी इस जबां पर आकर ॥

शैर—शरारत वह तेरी चितवन में ऐ रश्क कमर।
होरहा जी से जहाँ के बीच में जादू से हर ॥
लड़ गई जिस सख्श की वह आँख तेरी आँख से।
फिर उसे तेरे सिवा कुछ भी नहीं आता नजर ॥

वही जिक्र मयखाने में और यही सदा कुलकुल में है।
नक्शा कद्का कयामत धूम यह आलम् कुल में है ॥३॥ बीनी से बना अलिफ तेरे रुग से वह पैदा नूर हुआ। जिसकी झलक से गिरा मूसा और खाक कोहतूर हुआ। लबसे लाल यमन बने याकूत भी वही जरूर हुआ। औ दंदां से बने गौहर तो क्या ही जहूर हुआ ॥

शैर—है झलक हीरों में ऐ प्यारे तेरे दन्दान से।
बर्क भी चमकी वही दांतों से तेरी शान से ॥
औ जबाँ से बर्गगुल पैदा हुआ रङ्गीन वोह।
हरसखुन शीरीं तेरा निकले है क्या ही आनसे ॥

बादेसबा कहती है यही श्रौ वही जिक्र हरगुल में है ॥ नक्शा० ॥ ३ ॥ चाहे जकन से श्राशक सादक के दिल में वह चाह हुई। लगा झांकने कुए जिसकी उधर निगाह हुई ॥ गले से मीना बना सुराही भी उसका हमराह हुई। कहै देवीसिंह सिफत किसे तेरी श्रल्लाह हुई ॥

शैर—थक गये लाखोंहि शायर करके सब तेरा बयां ।
पर न पाया राज तेरा तू तो है राजे निहां ॥
किसकी ताकत है जो श्रागाह हो तेरे हुस्न से ।
यक झलक में गिर पड़ा मूसा भी होकर नातवां ॥

बनारसी ने यही लिखा काबे काशी गोकुल में है। नक्शा कद का कयामत धूम ये श्रालम कुल में है ॥ ४ ॥

## तथा।

श्राशक मैं हूँ उस गुल का जिस गुल पर फिदा हैं सारे गुल। बाहर में भी न जिसके नाम खिजां का है बिलकुल ॥ सदा रहे सर सब्ज वह उसकी महकसे मस्तानापन हो। दीद उस गुलकी करे तो दिल में दीवानापन हो ॥ श्रदां से उस समशाद की श्राशक में तो श्राशकनापन हो। क्यों नहीं गुन्चे खिलें जब उसमें मुसकयानापन हो ॥

शैर—बनाये क्यों न उस गुलशन में कुमरी श्राशिया श्रपना। गुलेगुलजार गुलरू श्रौर जहां हो बागवां श्रपना ॥ नहीं सैयाद का डर कुछ न मुतलक खौफेजाँ श्रपना। मकाँ है लामकाँ श्रपना निशां है वे निशां श्रपना ॥ गुञ्चे भी यही चटक चटकके करें चमन में शोरोगुल। बहार में० ॥ १ ॥ पेंच से जुल्फे सियःफाम के दामें इश्क पेंचा बनजाय। सुम्बे-

खुतन भी महक जुल्फों से वह परेशां बनजाय ॥ बालसे आये अबाल संबुल पर जो जुल्फों पेंचा बनजाय । नाफे आहू का मुंह काला हो यासरैहां बनजाय ॥

शैर—पड़े भूमर वो उसके रुखपर जुल्फों का जो मुंह खोले । तो अशरत का हिंडोला देखकर खाये वह झकझोले ॥ और काकुल सूंघले काला न अपने मुंह से कुछ बोले । यकीं ये है कि पीने के लिये अपने जहर घोले ॥ जुल्फ अम्बरी है या सोसनेगुल है तेरी काली काकुल । बाहर में० ॥ २ ॥ चश्म से नरगिस शरमिन्दा हो सर को झुकाये खड़ा रहे । आंख उस गुल से कभी मुतलक न मिलाये खड़ा रहे । कद से सर्व सनोवर गुलशन में गडजाये खड़ा रहे । दहन से गुंचा तंग होकर शरमाये खड़ा रहे ॥

शैर—सफाई देखकर उसकी समन मैला हो गुलशन में । वो नाजुकपन न जूही में जो कुछ है यार के तन में ॥ हिना देखे हथेली को तो खूं उगला करे मन में । सदा उसकी सुनै तूती तो फिर भागै कोई बनमें ॥ शाख शाखपै यही चहचहा करती है शदा बुलबुल । बहार में० ॥ ३ ॥ रशके चमन गुल बदन को गुल देखें तो गरेवां चाक करें । हरएक गुलिस्तांका वो यक दमभर में दम नाक करैं ॥ गचैं कोई मुर्गाने चमन जो उससे मुहब्बत पाक करें । बहर इश्क की खुदा उस आशक को पैराक करैं ॥

शैर—सबा आई जो गुलशन में तो उसकी क्या बन आई है । नहीं वाकिफ थी जिस बूसे वो सब उसमें समाई है । न मुतलक खार गुलशन में नहीं गुलकी बुराई है । नहीं

गिल में गिलावो गुल वहाँ जल्वे खुदाई है ॥ बनारसी उस गुलरू ने पिला दिया वो जामे मुल । बहार में भी न जिसके नाम खिजां का है बिल्कुल ॥ ४ ॥

## लावनी

जुल्फ को तेरी मार कहैं तो मार मार से कटवाऊं । सम्बुले पेंचा कहै तो पेंच में मैं उसको लाऊं ॥ कद से सर्व निस्बत दे तो खुद के उसको गाड़ूं मैं । अगर सनोवर कहै तो चमन से अभी उजाड़ूं मैं ॥ जाल से निस्बत दे जो फिल की लात से उसे लताड़ूं मैं । पंजये मिरजा कहै तो दस्त से अभी उखाड़ूं मैं ॥ काकुलके गर दाम कहै तो जाल में उसको उलझाऊं । सम्बुले पेंचां० ॥ १ ॥ चशम तेरे नरगिस जो कहै तो आंखको उसीकी फोड़ूं मैं । दन्दा गोहर कहै तो दांत सब उसके तोड़ूं मैं ॥ दहन को गुंचा कहै तो उसके मुंह को पकड़ मरोड़ूं मैं । जान के निस्बत ये दे तो जान न उसकी छोड़ूं मैं ॥ अगर तेरी काकुल उलझै तो क्योंकर उसको सुलझाऊं । सम्बुले पेंचा० ॥ २ ॥ जनक को तेरे चाह कहै तो कुए में उसे डुबाऊं मैं । पेशानी को कहै खुरशैद तो उसे घुमाऊं मैं ॥ गले को मीना कहै तो गर्दन उसकी अभी कटाऊं मैं । बीनी को गर अलिफ कोई लिखे तो उसे भुलाऊं मैं ॥ रोसू को कहै घटा तो उसको घटा के रुतवा में आऊं । सम्बुले पेंचा० ॥ ३ ॥ जबाँ को तेरी कहे वर्ग गुल उसकी जबां निकालूं मैं । हिलाल अबरू कहै उसके टुकड़े करडालूं मैं ॥ सीने को कहै आईना तो उसे न देखूं भालूं मैं । कमर को तेरी अगर मूं कहै तो उसे छिपालूं मैं । बनारसी कहै तेरे बाल की कहीं भी निस्बत

सुन पाऊं। संतुले पैंचा कहै तो पेंच में मैं उसको लाऊं ॥ ४ ॥

## लावनी ।

मेरी नजर के बीच में तेरे दो रुखसारे फिरते हैं। जिधर को देखूं उधर तेरे रुखसारे फिरते हैं॥ तेरे इश्क में फलक के ऊपर लाख सितारे फिरते हैं। शम्शोकमर भी इश्क में मारे मारे फिरते हैं ॥ तेरे इश्क में जिसके सरपर भी वो आरे फिरते हैं। सरपर उसके हुमा गोया पर पसारे फिरते हैं ॥

शैर-इश्क में दरों बहर जो तुम्हारे फिरते हैं। कभी तो उनके भी दिन औ सितारे फिरते हैं ॥ आँख में जिसकी वह तेरे नजारे फिरते हैं। रहम होता है उन्हें हम पुकारे फिरते हैं॥ इधर उधर और जिधर तिधर सब तेरे ही प्यारे फिरते हैं। जिधर को० ॥ फँस इश्क की कीचड़ में जो पैर उघारे फिरते हैं। कदम में उनकी वो तो अकसीर के मारे फिरते हैं ॥ जो केतने उरियां होकर उस सनम के द्वारे फिरते हैं ॥ उनके जामें पै कुरबां लिबास सारे फिरते हैं ॥

शैर-जहाँ में कोई तेरे सहारे फिरते हैं । वो है आलम में पर इससे किनारे फिरते हैं ॥ मौत का खौफ नहीं सर उतारे फिरते हैं। दुई से दूर वो एका बिचारे फिरते हैं ॥ कभी फिरे काबे में कभी जा ठाकुरद्वारे फिरते हैं ॥ जिधर को० ॥ कोई तसौवर में तेरे वो बलख बुखारे फिरते हैं। कोई चाह में आपकी तख्त हजारे फिरते हैं ॥ कोई तो जमना पर कोई गङ्ग किनारे फिरते हैं। मिले तू उनको गरज जो मनको मारे फिरते हैं॥

शैर-तर्क दुनियां को किये जो बिचारे फिरते हैं। मैं जो देखा ओही तेरे दुलारे फिरते हैं ॥ मिले जो तुस्से जहाँ से वो

प्यारे फिरते हैं ॥ याद में वो तेरी प्यारे हमारे फिरते हैं ॥ कोई करते खैरात फिरें कोई बने पिंडारे फिरते हैं। जिधरको० ॥ तेरे इश्क में खाकसार हो हम भी मारे फिरते हैं। सदा अन-लहक जबां से हम ललकारे फिरते हैं ॥ देवीसिंह भी लिबास तन पर खाक को धारे फिरते हैं। जबां को अपनी नाम से तेरे सुधारे फिरते हैं ॥

शैर—जो तुझको भूले वोः दुनियाँ में हारे फिरते हैं। काम के कुछ ही नहीं वोः नकारे फिरते हैं ॥ तेरी कुदरत से तो हम बेसहारे फिरते हैं। हम अपने दिल ही में तुझको निहारे फिरते हैं ॥ बनारसी की आँख में हरदम तेरे इशारे फिरते हैं ॥ जिधर को० ॥

## लावनी

लाखों वजह के रंजो अलम गम सनम वो दिखलाये तो क्या ॥ नालां इश्क से न होना जान तलक जाये तो क्या ॥ जिस इश्क में लैला के मजनून ने कभी जबां से आह न की ॥ जिस्म को काटा खुशी से तिरछी जरा निगाह न की ॥ चाह में सीरीं के कोहकनने और बात की चाह न की ॥ सरसे तेगा लगाया किसी से कुछ सल्लाह न की ॥ जो ऐ दिल आशा के आवाज है वोः इश्क करते हैं। वोः जां देते हैं उल्फत में नहीं मरने से डरते हैं। विसाले यार होता है मसीरे बाद मरने के ॥ इसी से आशके सादिक भी जीते जीहि मरते हैं ॥ दर्द इश्क से मिस्ले जरस फुरकत में चिल्लाये सो क्या ॥ नालां इश्क से न होना जान तलक जाये तो क्या ॥ और जेलखाने भी इश्क में बहुत उठाये रंजो मेहन ॥ कुयें झांकती चाह यूसुफने फिरो

हेरा बन बन ॥ और इश्क में शाह बलख में छोड़ा तख्त शाही वोःबतन ॥ फकीर होकर फिरा सहरा में खुदा से लगी लगन ॥

शैर—खुदा उल्फत में मिलता है जो अयदिल इश्क कामिल हो ।
मिले क्यों कर नवोः दिलवर ये दिल जिसपै माइल हो ॥
तमन्ना है विसाले यार में जो जान खोते हैं ।
तो क्यों उससे न फिर बादीज फलाजन्नत में शामिल हो ॥

दिल राम वो मिले ये दिल तकलीफ अगर पाये तो क्या । नालां इश्क से न होना जान तलक जाये तो क्या ॥ और सुनो यक बात मुझे वोः भी इस दम है याद पड़ी । इसी इश्क में उठाई रांझे ने तकलीफ बड़ी ॥ हुई किसी से तय ना आज तक ये मंजिल है बहुत कड़ी ॥ इसी इश्क में मियां मंसूर के फाँसी गले पड़ी ॥

शैर—हजारों जानसे मारे गये इस इश्क उल्फत में ।
रहा कोई मिजाजो में भला कोई हकीकत में ॥
किसी ने जिस्म की अपनी उतारी खाल सरतापा ।
किसी ने शौक से अपना कटाया सर मुहब्बत में ॥

याद में उस दिलरुवा की आफत सरपर गर आये तो क्या ॥ नालां इश्क से न.होना जान तलक जाये तो क्या ॥ फंसा रहा वोः हस्र तलक जो दामें इश्क में हुआ असीर ॥ कभी न छूटा कि जिसका इश्क हुआ फिर दामनगीर ॥ बनारसी कहैं कसम मैं इसी इश्क में हुआ फकीर ॥ खाकसार हो फिरा सहरा में हमेशा बेतौकीर ॥

शैर—रँगे कपड़े जो उल्फत में रंगीनी नजर आई ॥
जो खाकी सतर मली तन पर तो सब कुछ आबरू पाई ॥

पहन के इश्क की कफनी किया आबाद सहरा को।
फिरा चारों तरफ वहसत में बनकर मैं तो सौदाई ॥
उसके इश्क में सरपर गर आरा भी चले जाये तो क्या।
नालां इश्क से न होना जान तलक जाये तो क्या ॥

## ब्रह्मज्ञान इश्क मार्फत परमेश्वर के दर्शन में

### बहेर लंगड़ी।

सूरत उस माहरू की हरदम आँख में अपने बस्ती है। लाख इबादत से ज्यादा दुनियां में हुस्न परस्ती है ॥ क्या होता है वजू किये और क्या मसजिद में जाने से। क्या होता नमाज पढ़के सरको वहाँ झुकाने से। किया न जिसने इश्क जहाँ में उठा न हाथ जमाने से ॥ जीते जी वह नहीं मिला तो मिलेगा क्या मरजाने से। अजब मजा पाया है मैंने आँख में आँख लड़ाने से ॥ जिसमें देखा उसी को देखा लगा है तीर निशाने से। इसी सबब से दिलमें मेरे आठ पहर यह मस्ती है। लाख इबादत से० ॥ १ ॥ गया अगर काबे को तो क्या वहाँ खुदा मिल जावेगा। हैरां होकर फिर उलटा अपने घर को फिर आवेगा ॥ कोई अगर धन लुटा के अपना बुतखाना बनावेगा। पास की दौलत खोकर फिर क्या वहाँ पै पत्थर पावेगा ॥ जब तक उस माहरू से अपनी आँख को नहीं लडावेगा। इस दुनियाँ में आकर फिर क्या देखेगा दिखलावेगा। यही सुना है जहाँ में मैंने जहां तलक यह हस्ती है ॥ लाख इबादत से० ॥ २ ॥ रंगे अगर कपड़े औ मन नहिं रंगा तो फिर वो रंग है क्या ॥ छोड़ के वो माहरू बुतोंका संग किया तो संग है क्या। तनसे नंगा रहा जो दिल में नंग नहीं तो नङ्ग है क्या ॥ नशा चढ़ा

नहीं इश्क का पीली भांग तो फिर वो भंग है क्या ॥ दिलमें आई चली गई तो ऐसी भला तरङ्ग है क्या । तन धोया और मन नहिं धोया उन्हें भला गङ्ग है क्या ॥ चश्म मेरी रो रो के यही कहती जिस वक्त बरस्ती है । लाख इबादत० ॥ ३ ॥ कुरान की आयतें पढ़ो और इश्कका दिलमें जिक्र न हो । फिरतुम को क्या खुदा मिले चाहे अपना शिर धुनाकरो ॥ पेटके खातिर पण्डित के घर जाकर वेद पुराण पढ़ो । दो अक्षर नहीं पढ़े प्रेमके मौतसे फिर किस तरह बचो । आग बालके तपो अगर चाहे उलटे होकर लटको ॥ बिना इश्क दीदार न उसका मिले मुफ्त काहे को जलो ॥ बनारसी के इसी सखुन पर आशा के सारी बस्ती है ॥ लाख इबादत से बढ़कर दुनियाँ में हुस्न परस्ती है ॥ ४ ॥

## तथा

देख लिया आँखों ने नाग हाँ एक दम भर जोवन तेरा ॥ मेरा क्या रहा हुआ खुद बखुद ये तन मन तेरा ॥ जिस्मको मैं समझा था अपना बनाये अब मसकन तेरा ॥ आह क्याकरूँ लुट गया हुआ ये अब सब धन तेरा । देखते ही वो झलक बना मैं आशके जाने मन तेरा ॥ लगा ये कहने रास्ता सख्त है बहुत कठिन तेरा ॥

शैर-तने उरियां है तू और कुछ न पैरहन तेरा ॥
लिबास किस पै करै तू कहाँ है तन तेरा ॥
जहाँ न माहो मेहर हैं वहाँ वतन तेरा ॥
तेरा तो जन्म नहीं और नहीं मरन तेरा ॥
चला न अपना जोर जो देखा तुझे तो हुआ बदन तेरा ॥

मेरा क्या० ॥ जुल्फ तेरी नागिन है या है ये जङ्गल मुश्कके खुतन तेरा ॥ पेच है तेरा या है कुछ इसी में नाजुक पन तेरा ॥ या है ये अबरे नैसां या सम्बुली वो है गुलशन तेरा ॥ जाल है तेरा फँसा है इसी में आशके तन तेरा ॥

शैर—तङ्ग गुंचे को करै क्यों न वो दहन तेरा ॥
वर्क तड़पै जो वो देखे कहीं मंजन तेरा ॥
नूर चश्मों का जो देखे कहीं खंजन तेरा ॥
क्यों न अंजन करै आँखों में निरंजन तेरा ॥
आशके बुलबुल कहते हैं गुलजार है तेरा चमन तेरा ॥

मेरा क्या० ॥ चले जिस घड़ी मैदां में ऐ कातिल तीरो फिगन तेरा ॥ बचे न कोई जो निकले जबां से हुकुम बिजन तेरा ॥ राहु चाँद से लड़े तो क्या सरकटा है वो दुश्मन तेरा ॥ मेहर मुनौव रोजो सब फलक पै है रोशन तेरा ॥

शैर-कत्ल दुश्मन को करै चक्र सुदर्शन तेरा ॥
मौत भी कुछ न करै जिस पै हो अमन तेरा ॥
पताल पा हैं तेरे और है सर गगन तेरा ॥
तू तो निर्गुण है और गुन हैं ये सब सखुन तेरा ॥
मशरिकसे मगरिबतक देखा बस्ती बीरावन तेरा ॥

मेरा क्या० ॥ कहीं पै मक्का बना है तेरा और कहीं पै वृन्दावन तेरा ॥ कहीं पै काशी कहीं दरिया है गङ्गो जमन तेरा ॥ देवीसिंह कहै दुनियां में है अजब वो चालो चलन तेरा ॥ किसी को मुतलक नहीं मालूम जो कुछ है फन तेरा ॥

शैर—जहां में है ये जहां तक से अंजुमन तेरा ॥
जो देखें इसको तो बिल्कुल ये है दर्पण तेरा ॥

कर गैरतसे बन गई कमान । झुकी इसलिये के जिसमें नजर पड़े कुदरतपे सुभान ॥ खुदाने वोः अबरुओंमें आयत लिखी जो था मतलब तौहीद । मह्रे चारदहपे० ॥ १ ॥ कभी तो वो तलवार बने और कहीं पै वो जमधर बनजा । खाँडा बिछुआ कहीं वो तेगे अजलसर पर बनजा ॥ रोजे हश्र को हिसाब करने के खातिर दफ्तर बनजा । मौतभी इनसे डरे जिस वक्तके ये खञ्जर बनजा ॥ तड़पके बोले येही सखुन जो हुए तेरे अबरू के शहीद । मह्रे चारदहपे० ॥ २ ॥ काँप उठे आसमां अगर्चें जरा तेरा अबरू हिलजाय । करे कयामत उधर को जिधर तेरा कातिल जाय ॥ तान के तू जिस वक्त इने क्या जाने किधर जालिम पिलजाय । लाखों बिस्मिल तड़पते फिरें जो ये गोशा मिलजायं ॥ कशीद करके दिल में अपने येही लगा कहने खुरशी । मह्रे चारदहपे० ॥ ३ ॥ क्यों जायें कावे को भला उस यारके अबरू छोड़के हम । अब कावेसे यहाँ बैठे है भवें जिकोड़ के हम ॥ यार के रुखपर दो का बेदिल उसी से अपना जोड़के हम । करेंगे सिजदा इन मुँह उस कावेसे मोड़के हम ॥ पढ़े ये जिसने दो हरुफ वो हुए तेरे अबरू के मुरीद । मह्रे चारदहपे० ॥ ४ ॥ खुदाने दो खत अबीं के ये अपने हाथ से लिखे अजीब । ऊपर उनको बनाया नीचे इसके लिखा नसीब ॥ पढ़े अगर सरनामां ये तो मौला उसका बने हबीब ॥ कहे देवीसिंह फिर उसका बाल न बांका करे रकीब । बनारसी कहे इसके माया ने कहो करो कुछ गुफ्तो शुनीद । महेर चार दहपै पैदा हुआ कहाँ से माहे ईद । ५ ।

# ज़ुल्फ और आँखों की तारीफ।

लगा जंग दिल में होने जिस वक्त आँख से आँख लड़ी ॥ मारा ज़ुल्फ से तो वो क्या २ आशक पर मार पड़ी ॥ इधर तो यह ले बरछी भाला ले तीर तुपक तैयार हुई ॥ उधर ज़ुलुफ के सामने पड़े तो मारामार हुई ॥ बही खून की नदियाँ वो जिस वक्त चश्म खूं ख्वार हुई ॥ ज़ुल्फ भी उसके साथ खम ठोक कातिले वार हुई ॥

शैर—चश्म ने करके इशारा कमाँ चढ़ाई है ॥
ज़ुल्फ ने बल वो दिखाया के घटा छाई है ॥
देखली हमने के इस वक्त कज़ा आई है ॥
आँख मैंने जो लड़ाई तो ये लड़ाई है ॥
चश्म ने घायल किया ज़ुल्फ को देखा तो बला बड़ी ॥

मार ज़ुल्फ से० ॥ चश्म ने ले तलवार किया एक वार तो कुछ बोला न गया ॥ ज़ुल्फ के आगे तो मुँह मुझसे मुतलक खोला न गया ॥ चश्म ने खंजर से ऐसा काटा के फेर डोला न गया ॥ ज़ुल्फ देखकर जहेर पीने को तो घोला न गया ॥

शैर—चश्म ने झुकके जो मारा तो न वहाँ ही रहा ॥
ज़ुल्फ के गिर्द जो घूमा तो परशां ही रहा ॥
निशाने चश्म से मेरा न कुछ निशां ही रहा ॥
ज़ुल्फ ने ऐसा मरोड़ा कि नातवां ही रहा ॥
चश्म के जो आया मैं रूबरू वही साँग सीने में गड़ी ॥

मार ज़ुल्फ से० ॥ चश्म ने वो दिखला के बाँकपन मारा और फिर लाल हुई ॥ ज़ुल्फ यार की तो वो मेरे जीका जञ्जाल हुई ॥ चश्म तो गोली भर औ रंजक जमाके गोया दुनाल हुई ।

जीना मुझको जुल्फ बोबाल हुई ॥
शैर–चश्म ने दूर से देखा तो लगाई वो नजर ॥
जुल्फ ने पेच श्रो मारा के रही कुछ न खबर ॥
चश्म ने मुझपै किया क्या ही वो जादू वो शहर ॥
जुल्फ ने ऐसा डसा दिलपै है काले की लहर ॥
लड़ी श्राँख जिस वक्त यार से क्या जाने थी कौन घड़ी ॥
मार जुल्फ से० ॥ खूब हुश्रा जो इन्होंने मारा दुनियाँ में तो नाम हुश्रा ॥ बिना इश्क के जहाँ में कहाँ कोई सरनाम हुश्रा ॥ देवीसिंह कहै बनारसी तू श्रमर दुनियाँ में तेरा कलाम हुश्रा ॥
शैर–जुल्फ बखुछुल श्रौर चश्म हैं यह नूरे खुदा ॥
मुश्रा जो इससे वो हरगिज न हुश्रा उससे जुदा ॥
किया मेरा तो ये दोनों ने दो जहाँ में भला ॥
बला से मर गया छुटी तो ये दुनियाँ की बला ॥
डरे नहीं मुतलक खिलखत सुनती हैं ये मेरे गिर्दखड़ी ॥
मार जुल्फ से तो वो क्या २ श्राशक पर मार पड़ी ॥

## परमेश्वर से मिलने की मस्ती–बहर लँगड़ी ।

मिला हमें गुलजार वो गुलखाना नहिं चहिये ॥ मैं वहदत में मस्त मैं हूँ मैखाना नहिं चहिये ॥ दिल को रोशन किया तो फिर तन बदन जलाना नहिं चहिये ॥ श्राह की श्रातश बले वहाँ श्राग लगाना नहिं चहिये ॥ बहेर इश्क में बहे उसे दरियामें बहाना नहिं चहिये । डूबा चाहमें उसे फिर कुयें झुकाना नहिं चहिये । इश्क का सौदा हुश्रा हमैं होना दिवाना नहिं चहिये ॥ मैं वहदत में मस्त मैं हूँ मैखाना नहिं चहिये ॥ जो घायल हैं इश्क के उनपर तेग चलाना नहिं चहिये ।

सरसे परे हैं जो आशक उन्हें सताना नहिं चहिये ॥ जिस जां तबियत लड़ी वहां से दिल को हटाना नहिं चहिये । बढ़ा के उलफत यार से प्यार घटाना नहिं चहिये ॥ चढ़ी इश्क की लहर हमें अब जहर पिलाना नहिं चहिये । मैं वहदत में० ॥

अपनी जान में जान को पाया और जमाना नहिं चहिये । अलग हुये हम हमें अपना और बेगाना नहिं चहिये । दिल में दरोहरम बनाया अब बुतखाना नहिं चहिये ॥ लामकान को छोड़ जन्नत में जाना नहिं चहिये । पी वो मुहब्बत की मैं मैंने और पैमाना नहिं चहिये । मैं वहदत में० ॥

हरेक मकां हैंगे आशकों के एक ठिकाना नहिं चहिये । आजाद हैं जो उन्हें जो फिरजाद में अपना नहिं चहिये ॥ इश्क का बाना पहिन कलँगी तुर्रे का बाना नहिं चहिये । पाक इश्क को करो नापाक को गाना नहिं चहिये ॥ देवीसिंह कहै सखुन पर कमती सखुन बनाना नहिं चहिये । मैं वहदत में० ॥

## तथा

फिदा हुआ दिल मेरा जिस दिन से तुझको दिलवर देखा । कहीं न देखा तुझे अपने दिल के भीतर देखा ॥ तेरे हुस्न के सानी हमने और नहीं सुन्दर देखा । आफताबसे तुझे महताब से भी बहतर देखा ॥ तेरी चमक औ दमक के आगे और न जलवेगर देखा । मैंने प्यारे तुझे अपनी नजरों में भर देखा । जैसा देखा तुझको वैसा नहीं परी पैकर देखा । कहीं न० ॥

बयां क्या करूँ यार तेरे दंदां का वो जौहर देखा । लाल न देखा नहीं ऐसा कोई गौहर देखा ॥ गजब है तेरे नैनन ऐसी तेग नहीं जग्र धर देखा । खाँडा बिछुआ नहीं हमने ऐसा

खंजर देखा ॥ हुआ बहुत हैरान शहेर सेहेरा तुझको दरदर देखा । कहीं न देखा तुझे अपने दिल के भीतर देखा ॥

आशक होकर तुझपर अपने इश्क को हमने कर देखा । जो कुछ है सो तुही तुझको अपना अफसर देखा ॥ जैसी खुशबू तुझ में वैसा नहीं मुश्क कैसर देखा । दिमाग अपना तेरी खुशबू से मवत्तर देखा । तेरे इश्कमें प्यारे मैंने गली गली घर घर देखा । कहीं न देखा तुझे अपने दिल के भीतर देखा ॥

देवीसिंह यौं कहे के जिसने तुझे एक पलभर देखा । मस्त रहा वो इश्क का जोर शोर खुशतर देखा ॥ बनारसी ने तेरे इश्कमें खाकका वो बिस्तर देखा । शाल दुशाला छोड़ मृगछाला बाघम्बर देखा ॥ कई दफे देखा था तुझे अब मैंने तुझको फिर देखा । कहीं न देखा तुझे अपने दिल के भीतर देखा ॥

## सनम के पान खाने की तारीफ–बहेर लंगड़ी ।

पान की लाली से जो मेरे वह दिलबर के लब लाल हुए ॥ लाले बदकशां से भी बहतर पैदा अब लाल हुए ॥ काकुल से काले हुए पैदा जुल्फसे अफई मार हुए ॥ पेशानी से नूर टपका तो फरिश्ते चार हुए ॥ अबरूह से खम खाखाके खन्जर बिछुवे खमदार हुए ॥ और मिजगांसे तीरे पैकां से नशतर पुरकारहुए ॥

शैर—चश्म से पैदा हुआ नरगिरा हरेक गुलजार में ॥ और वो बीना से अलिफ खींचा गया हरकार में ॥ है वह कुदरती दोनों तेरे रुखसार में ॥ जिससे रोशन चाँद औ सूरज हैं इस संसार में ॥ पान की रंगत पाकर दंदां गौहर से जब लाल हुए ॥ लाले बदकशां से भी बहतर० ॥ जबां से पैदा कुराँ हुआ और अक्ल से इल्म हजार हुए ॥ चाहे जनकन से

चाह केदिल में खुद व खुद गार हुये ॥ गले से बनी सुराही गुल सब तेरे गले के हार हुये ॥ हुस्न से परी पैकर बनकर तैयार हुये ॥

शैर—तेरे सोनेकी सफाई से सफाई होगई ॥ ताकते बाजू से अब ताकत् सवाई होगई ॥ हाथ से तेरे सखावत की सखाई होगई ॥ पंज ऐ मरजां से लग लाले हिनाई होगई ॥ देखके रङ्गी नाखूनों की शरमिन्दा तब लाल हुये ॥ लाले बदकशां से भी बेहतर० ॥ शिकम् से नर्मी बनी कमर से पोशीदा सब हाल हुये ॥ और जानूं से तेरे दो नूर के थम्भ कमाल हुये ॥ कदमसे सिजदा बना और पा छूने को सात पताल हुये ॥ चाल से तेरी बनगये फील न बोवे चाल हुये ॥

शैर—कद से तेरे अब तलक सर्वे चमन आबाद है ॥ और अदा तेरी से आशक का सदा दिल शाद है ॥ नाजसे तेरे बनी अन्दाज की बुन्याद है ॥ हर सरापै से सरापा तेराही ईजाद है ॥ जो पत्थर तलुवों से तेरे लग गये वह तो सब लाल हुये ॥ लाले बदकशां से भी बेहतर० ॥ ठोकर से तुझ जानकी लाखों मुर्दे उठ खड़े हुये ॥ आपके पाये नक्श हैं मेरे दिल पर पड़े हुये ॥ तेरी चंचलाहट से सद में बर्क के दिल पर बड़े हुये ॥ कदमबोसी में तेरी दिलोजान से लड़े हुये ॥

शैर—शैर हक्कानी का कहना कुछ नहीं आसान है ॥ यह सखुन समझे वही जो आशके मस्तान है ॥ देवीसिंह की शायरी पर जी वा जां कुर्बान है ॥ जिसके हर नुक्ते के ऊपर हर शख्स का ध्यान है ॥ बनारसी के खूने अश्क सब टपकके यार बेलाल हुये ॥ लाले बदकशां से भी बेहतर०॥

## आपेको भूल जाय परमेश्वर को याद रक्खे।

### बहर लंगडी।

भूल गये हम अपने को भूले तेरी तस्वीर नहीं। तीर इश्क का लगा वोः तीर के कोई तीर नहीं॥ तेरे इश्कमें हुआ गदा मुझसा तो कोई फकीर नहीं। वोः रुतबा है गदा के सानी शाह वजीर नहीं॥ क्या कसूर है मेरा जो मैं तेरा दामनगीर नहीं। ऐसी प्यारे करी हमने तेरी तकसीर नहीं॥ सरको झुकाया मैंने क्यों मारी तूने समशीर नहीं तीर इश्क का०॥

तेरे हुस्न के रुतबेको कुछ पाती लैला हीर नहीं। गजब है तेरे बोल ऐसी तो शक्कर शीर नहीं॥ है तो प्याला जहर इश्क का ये कुछ मीठी खीर नहीं। पिये जो इसका रहे फिर उसका दिल दिलगीर नहीं॥ तीर पड़े इश्क के जख्म मेरे दिल से जाये यह पीर नहीं। इश्क का लगा०॥

जो आकाश होगया तेरे वो कभी हुआ गमगीर नहीं। इश्क न जिसने किया वो कभी पहुँचा तेरे तीर नहीं॥ तेरे दर की मिले खाक मुझको चहिये अकसीर नहीं। अब तो प्यारे तेरे बिन दिल को होता धीर नहीं। हाथ मलौ जर्राह कर सकैं कुछ तेरी तदबीर नहीं। तीर इश्क का० ॥

सौदाई होगया जहाँ में कहीं रही तौकीर नहीं। कहे देवीसिंह तेरे आगे तो मैं फकीर नहीं। कहीं पर ओढे शाल दुशाले कहीं बदन पर चीर नहीं। बनारसी यों कहे तुझके पाये वे पीर नहीं॥ तुही एक है अमीर प्यारे तुझसा कोई मीर नहीं। तीर इश्क का लगा वोः तीर के कोई तीर नहीं॥

# खुदा की जुल्फ और रुख दोनों की तारीफ।

### * बहेर लँगड़ी *

काकुल पुरखम आरिज रोशन दोनों को क्या यार लिखूं ॥ मार जुल्फ को और रुख को हरदम शोले मार लिखूं ॥ निस्बत् है ये बेजा गरचे मूजी पूरे शरार लिखूं । दाम हुमाकाम जुल्फ को रुख को हुमा इजहार लिखूं ॥ अच्छी नहीं है ये भी तशभी क्या तायर परदार लिखूं ॥ समुबुले तर में जुल्फ को बरगे समन रुख सार लिखूं ॥ ये सबजे हैं जमीं के इनको होके क्या लाचार लिखूं ॥ मार जुल्फ को० ॥

काकुल को मैं काली घटा और रुख के बर्क आसार लिखूं ॥ घटा के निस्बत न इनसे हूं न बर्क बेकार लिखूं ॥ उसको तो जुलमात लिखूं औ हैवां उसे हरबार लिखूं ॥ वो तो पुरखम् वहीं आरवां नये जिन हार लिखूं ॥ काकुल को मैं लैल लिखूं आरिजके तईं निहार लिखूं ॥ मार जुल्फ को० ॥

गरदिश में लैला निहार है कहाँ तलक दिलदार लिखूं ॥ उसको रहां और उसको सुनिये लाले जार लिखूं ॥ तस भी सब उससे हैरां पुर दाग हैं वो क्या खार लिखूं ॥ रुख को कुरआं बिरह मन काकुल को जुन्नार लिखूं ॥ इसमें झगड़ा हिन्दु मुसलमां हैगा क्या इसरार लिखूं ॥ मार जुल्फ को० ॥

रुख को हरदम शमये रोशन काकुल को धुआंधार लिखूं । ये भी गलत है और तशभी इसको एकबार लिखूं ॥ इसको मौजे बहर लिखूं उसे आईना बेदार लिखूं । मौज न यकजा आईना हैरां ये क्या शार लिखूं ॥ जुल्फ सुबैदा बनारसी रुख नूरे हक गुलजार लिखूं ॥ मार जुल्फको० ॥

# सनमके ज़ुल्फ की तारीफ-बहेर लँगड़ी।

नाजो अदा से चली नाजनी दो ज़ुलफें लटका लटका। लटका आलम दिखाया जब उसने लटका लटका॥ देख तमाशा उन ज़ुल्फों का फँसा दाम में कुल आलम। पेच में उसके पड़ा है यारो ये बिलकुल आलम्॥ ऐसा बाँधा खैंच ज़ुल्फ में मचा रहा है गुल आलम्। उसके फन्द से कहो अब क्यों कर जाये खुल आलम्॥ नशे में है शरशार पीके गेसुये जहर का मुल आलम्। हुआ दिवाना देख कर उसकी वो काकुल आलम्॥ फेर में ज़ुल्फों को फिराता है कुल जहान झटका झटका। लटका आलम् दिखाया जब उसने० ॥

गदा अम्बिआ शाह औलीया और जो ज़ुल्फ देखे गरदूं। महक से उसकी होवे सबामस्त और आये दिल में ज़ुनूं॥ ज़ुल्फ भो अम्बरी देखके आलम् आशक हो गया गूनागूं लाम। कहूं मैं ये इनको लाम कान का अलिफ लिखूं॥ जिस दम उसने बाल मरोड़ लाखों अफई का हुआ लिखूं। सबके जहर को निचोड़ा क्या ताकत करै कोई चूं॥ काले ने सरको पटका जिस दम उसने लटको झटका। लटका आलम् दिखाया जब उसने० ॥

हिला हिलाके जुल्फ हुती कितनों के तईं हलाल किया। मार मारके मार सदहा को हाल बेहाल किया॥ मशरक से मगरिब तक उसने अजब ज़ुल्फ का जाल किया। उसके बीच में डालकर कितनों को पैमाल किया॥ जिस दम उसने ज़ुल्फ बनाके टेढ़ा बाँका बाल किया। काल भी उसको देख कर डरा औ अपना काल किया॥ फटकारा जब ज़ुल्फ को उसने कोई

सामने नहीं फटका । लटका आलम दिखाया जब उसने० ॥

दोनों रुखसारों के ऊपर लट लटका घूंघर वाली । गोया माह के गिर्द घिर आई घटा काली काली ॥ छिटका के जब जुल्फ सनम ने इधर उधर रुख पर डाली । बयाँ क्या करूँ बनाई अजब वो कुदरत की जाली ॥ देवीसिंह के छन्द रंगीले और सदा भोली भाली । सुने से जिसके हुई हरएक शायरको खुशियाली ॥ मतलब है तौहीद जुल्फ में और मारफत का खटका ॥ लटका आलम दिखाया जब उसने० ॥

## दरख्त जवाहिरातका मतलब तौहीद ।

### बहेर खड़ी

तुख्म लाल याकूत कि टहनी बर्ग जमुर्रद मोती गुल । फल लटके माणियों के जिसमें जो देखे लेले बिलकुल ॥ शबनम है इल्मास कि उसके बर्ग बर्ग पर पड़ी हुई । हरेक शाख कुन्दन और नीलम से हैं उसकी जड़ी हुई ॥ जिसके हाथ में उस दरख्त की एक भी शाख छड़ी हुई । सात बादशाहत से भी कीमत उसकी बड़ी हुई ॥ उस दरख्त के मेवेसे हरदम टपके तौहीद कि मुल ॥ फल लटके माणियों के जिसमें० ॥

बना मुरस्से की जमीन औ फौवारे बिल्लूर के हैं ॥ उस दरख्त के ऊपर बैठे हरेक जानवर नूरके हैं ॥ फुनगी है पारसकी उसमें रखवाले सब हूरके हैं ॥ वो दरख्त नजदीक है उसके खरीदार सब दूर के हैं ॥ सौदा उनसे बने वहाँ पर करे न जो कोई शोरोगुल । फल लटके माणियों के जिसमें० ॥

उस दरख्त को हमने तो आबेहयात से सींचा है ॥ बड़ी मशक्कत करी है अपनी करामात से सींचा है ॥ किसी से कुछ

नहिं काम लिया अपनी ही जान से सींचा है ॥ क्या कोई जानेगा इश्कों के कौन घात से सींचा है ॥ हुआ वो जब तैयार तो शैदा बना मेरा ये दिल बुल बुल ॥ फल लटके माशूकों के जिसमें० ॥

उस दरख्त की साया में हम टाँग पसारे सोते हैं ॥ अगरचे जायें कहीं तो फिर हम उसी तुख्म को बोते हैं ॥ जहाँ पर अपना दिल जाहे वैसे ही शजर सब होते हैं ॥ बनारसी ये कहे के उस पर कुरान पढ़ते तोते हैं ॥ उस दरख्त की हवा लगे तो जिगर की आँखें जायँ खुल ॥ फल लटके माशूकों के जिसमें० ॥

## हाल फकीरी का सच्चा बहर डेवढ़ी-राग सोरठा ।

फकीरी खुदा को प्यारी है । अमीरी कौन विचारी है ॥ बदन पर खाक है अक्सीर । फकीरों की यही जागीर ॥ हाथ बांधे खड़े रहें अमीर । बादशा हो या होय वजीर ॥ सदा ये सच्च हमारी है । गदा की खुदा से यारी है ॥ फकीरी खुदा को प्यारी है ॥

है इनका नाम सुनो दुरवेश । कोई नहीं पाये इनसे पेश ॥ खुदा से मिले ये रहें हमेश । कोई नहिं जाने इनका भेस ॥ कभी गिरिया ओ जारी है । कभी चश्मों में खुमारी है ॥ फकीरी खुदा को प्यारी है ॥

है इनका रुतबा बहुत बुलन्द । खुदा के तईं ये हुआ पसन्द ॥ बादशा से भी ये बने दुचन्द । इन्हें मत बुरा कहो हरचन्द ॥ इनकी दिलपर असवारी है । ऐसी नहिं कहीं तयारी है॥फकीरी० ॥

चिथड़े शाल से हैं आला । चश्म हरताल से हैं आला ॥ चनेभी दालसे हैं आला चलन हरचालसे है आला ॥ जख्म जो जिगर पर कारी है । वही दिल पर गुजारी है । फकीरी खुदाको० ॥

पांवमें पड़ा जो है छाला ॥ वोः भी मोतियों से आला ॥ हाथ में फूटासा प्याला । जामजमशेदसे भी वाला ॥ अगर कोई हफ्त हजारी है। वोह भी इनका ही भिखारी है। फकीरी खुदाको० ॥

मकां लामकां फकीरोंका । निशांकहां फकीरोंका ॥ फक्रहै निहां फकीरों का । खुदा का इमा फकीरों का । ताकतें सब्र वोः भारी है । मौत तक जिससे हारी है । फकीरी खुदाको० ॥

बढ़ गये बाल तो क्या परवा । उतर गई खाल तो क्या परवा ॥ आगया माल तो क्या परवा ॥ हुये कङ्गाल तो क्या परवा । खुदा तू जनावे बारी है । काशीगिरि को यादगारी है ॥ फकीरी खुदा को प्यारी है० ॥

## तीनों अवस्था का हाल अव्वल दोयम सोयम ।

### * बहेर लंगड़ी *

वहशत ने लाखों बातें बेहूदा बकवाईं मुझको । माशूकों में वही अब नजर पड़ा साईं मुझको ॥ अव्वल तो मैं उस गम में जारजार रोया यकबार । इश्क की लड़िया देखकर शरमाया गौहर का हार ॥ बेताबीने किया मुझे बेचैन करी मैं बहुत पुकार । या हकताला देखिये किस दिन यह टूटेगा तार ॥ आंखें भर भर के कहतीं ये दाईं और बाईं मुझको ॥ माशूकों में वही० ॥

दोयम मुझको हुआ इश्क दिल में सोचा मैं आशक हूँ । अजब है मेरा वही माशूक बना जो गूं नागूं ॥ हरएक से पूछा मैंने जो इश्क में थे आशक बेचूं । कोई न बाकी रहा अब क्या लैला और क्या मजनूं ॥ जो आशक थे पाक उन्होंने बातें सुनवाईं मुझको । माशूकों में वही० ॥

सेयुम हमने अपने दिल को समझाया करके हुशियार । तू क्यों गाफिल हुआ चल देख तेरा वह कहाँ है यार ॥ दिलने मुझसे कहा मुझे क्या देर है तू हो जल्द तयार । मेरा तेरा संग है चलो देखिये वो गुलजार ॥ देख पड़ी उस जापर यार अपने की परछाँई मुझको । माशूकों में वही० ॥

आखिर को गफलत का परदा खुला मिला अपना महबूब । कहै देवीसिंह मेरा वोः खूबां हैं खूबों में खूब ॥ बनारसी ये कहै इश्क के दरिया में गये लाखों डूब । मैंने उसमें तैरकर पाया वह अपना असलूब ॥ होकर के लाचार छोड़गई गफलत की झाईं मुझको । माशूकों में वही० ॥

## शतरंज इश्क की—बहेर खड़ी ।

बाजी खेली इश्क की हमने जरा किया शशपञ्ज नहीं । खेल ले हर कोई जिसको यह वोः बाजी शतरञ्ज नहीं ॥ अक्कका तौ कुछ जोर नहीं जो घोड़ों से चलकर जीते । फीलकी क्या ताकत है जो इस बाजी को बलकर जीते ॥ यह तो इश्क का दल है इसको क्या पैदल दलकर जीते । रुख का रुख फिर जाय न वह इस बाजी को छलकर जीते ॥ मेरे सिवा कोई और जहाँ में उठा सके यह रञ्ज नहीं । खेल ले हर कोई० ॥

वजीर का क्या जिकर इश्क में बादशाह तक हुये गदा । जो कि चाल चूका वह मारा गया मेरी है यही सदा ॥ हमने अपने सर की बाजी लगा के इसमें दांव बदा । जान बेचकर जो खेला वह जीता उसको मिला खुदा ॥ वो क्या करेगा मात के जिसके काबू में है पञ्ज नहीं । खेल ले हर कोई० ॥

और दाब में नहीं आया बादशाह को अपने ली चोट बचा ।

उसीने तोड़ा किला जहां में कोई न उससे कोट बचा ॥ तिरछे होकर चलोगे तो क्यों करके सकोगे गोट बचा । उसका माल लूटा गया रखी थी जिसने जरकी पोट बचा ॥ मुझे किस्त नहिं लगी कि मैंने जमा किया कोई गञ्ज नहीं । खेल ले० ॥ ये शतरंज इश्क की इसको खेले वही सयाना है । बड़े बड़े हो गये जिन्ह नहिं भेद किसीने जाना है ॥ ये है इश्क का ख्याल सदा आशकों के मन ने माना है । बनारसी जीतेजी अब तो निर्गुण बीच समाना है ॥ रामकृष्ण के शीरीं सखुन को पाये शीव विरञ्ज नहीं । खेल ले हर कोई जिसको० ॥

## ख्याल-खुदा हममें और हम खुदा में-बहेर लंगड़ी।

दिलमें दिलवर दिलवर में दिल सनम में हम और हममें सनम् । दम हमदम में मेरा इस दममें है मेरा हमदम ॥ जान मेरी जान में है ॥

जाना मेरी जान में है । प्राण हैं उसमें मेरे वोः प्यारो मेरे प्राण में है ॥ तनो बदन सब उसमें है वोः इस तन के दरम्यान में है । हरेक आन है यार में यार मेरा हर आन में है ॥ मैं उसमें हूँ रमा वो मेरे रूम रूम में रहा है रम । दमहम दम० ॥

गुल गुलशन सब उसी में है वोः गुलहर गुल गुलशन में है । फबन है ऐसी फबी उसमें के वोः हर फबन में है ॥ गुनचेदहन सब उसीमें हैं वोः हरएक गुनचेदहन में है । चमन हुस्न का है उसमें औ वोः हुस्न के चमन में है ॥ मेरे मन में बसा है वोः उसके मन में बस रहे हैं हम । दम हम दम में० ॥

कुल जहान रोशन उसमें वोः रोशन आलम कुल में है । भरी मुहब्बत की मुल उसमें और वोः उस मलमें है ॥ काकुल

लटकी दिलमें मेरे ये दिल उसकी काकुल में है । आशके बुलबुल हैं उस गुल में वो: गुल बुलबुल में है ॥ कुछ आलम में नूर उसीका उसके नूर में कुल आलम् । दम हम दम में० ॥

नूर में उसकी पेशानी नून उसकी पेशानी में है । जिगर में जानी मेरी ये जिगर मेरा जानी में है ॥ जिन्दगानी उसमें मेरी वो: मेरी जिन्दगानी में है । नूरानी है सब उसमें वो: हर नूरानी में है ॥ बनारसी कहे इसमें फर्क नहिं मुझको अपने सरकी कसम । दम हम दम में मेरा इस दम में है मेरा हमदम् ॥

## खुदा की तस्वीर अपने दिल आईने में खींचना ।

### * बहेर खड़ी *

करे अगर मन मुसौवरी तो यार की अब तस्वीर को खैंच । सानी उसकी तू बनजा दिलदार की अब तस्वीर को खैंच ॥ जैसे आब से हबाब बनजाय पानी की तस्वीर को खैंच । फिर पानी पानी करले उस जानी की तस्वीर को खैंच ॥ नूर वही बनता है जो ले नूरानी की तस्वीर को खैंच । हकभी लेता है आशके हकानी की तस्वीर को खैंच ॥ बागबाग हो दिलतेरा गुलजार की अब तस्वीर को खैंच । सानी उसकी तू बनजा० ॥

शमय से हुई शमय रोशन जब उस लौका तस्वीर को खैंच ॥ लौ भी रोशन खुदा से हो अब उस लौकी तस्वीर को खैंच ॥ फिर पावेगा ओ नादां कब उस लौकी तस्वीर को खैंच ॥ इस जामें से खिंचेगी जब तब उस लौकी तस्वीर को खैंच ॥ शोलय नार हुआ रोशन उस नार की अब तस्वीर को खैंच ॥ उसकी सानी तू बनजा० ॥

बनी सूर्तें गिलकी गुल हुई उस गिलकी तस्वीर को खैंच ॥

दस्ती तो मिट्टी होगई मिलके दिल की तसवीर को खैंच ॥ पत्थर शिल होजाय जो लेवे उस शिल की तसवीर को खैंच ॥ कत्ल होके मिलजा उसमें उस कातिल की तसवीर को खैंच ॥ देखले तू इस पार से और उस पार की अब तसवीर को खैंच ॥ सानी उसकी तू बनजा० ॥

कर दिल को आइना और इसमें से उसकी तसवीर को खैंच ॥ बताओ इसके सिवाय किसमें उसकी तस्वीर को खैंच ॥ जिस्मसे मत रख काम तू जिसमें ले उसकी तसवीर को खैंच ॥ बनारसी अब तू जिस तिसमें उसकी तसवीर को खैंच ॥ फार में गम होजा ऐ दिल गफ्फार की अब तसवीर को खैंच ॥ सानी उसकी तू बनजा० ॥

## नसीहत बन्दे को समझाने की—बहेर छोटी ।

तू जिस्म जिगर औ जान नहीं जाना । फिर क्यों नहीं कहता खुदा जो है तू दाना ॥ किसने तुझको बाँधा है बना जो बन्दा । और कौन पेच का पड़ा है तुझ पर फन्दा ॥ तू अपने आपको देख न हो मत मन्दा । है कौन सी बोः बदबू जो हुआ तू गंदा ॥ गर तूने अपने तईं जिस्म नहीं जाना । फिर क्यों नहीं कहता खुदा० ॥

ये हाथ पाँव औ सर भी नहीं कुछ तू है । सीना औ बाजू पर भी नहीं कुछ तू है ॥ जनखा औरत और नर भी नहीं कुछ तू है । जिन देव परी पैकर भी नहीं कुछ तू है ॥ तू अपने बीच में आपी आप समाना । फिर क्यों नहिं कहता खुदा० ॥

रोना औ तड़पना आह नहीं कुछ तू है । मुँह जबां चश्म बल्लाह नहीं कुछ तू है ॥ काबा किब्ला दर्गाह नहीं कुछ

तू है। और हराम की भी राह नहीं कुछ तू है ॥ मसजिद भी नहीं तू बना न है बुतखाना। फिर क्यों नहीं कहता खुदा ॥

तकदीर और पेशानी भी तू नहीं है। आतिश औ हवा गिल पानी भी तू नहीं है ॥ अरवाह औ गिलमानी भी तू नहीं है। इस जिस्म की जरा निशानी भी तू नहीं है ॥ ये बनारसी का समझ सखुन मस्ताना। फिर क्यों नहीं कहता खुदा० ॥

## ख्याल होली का इश्क मार्फत-बहेर छोटी।

आते ही इश्क ने यहाँ मचा दी होली। वोः आतिश और तन फूस जला दी होली ॥ चश्मों से बरसने लगा खूने रंग पानी। और इश्क भी करने लगा वोः एँचातानी। मैं हँसूं तो गाली दे मुझे दिल जानी। औ लोग बजावें ताली सुनों कहानी ॥ नहिं देखी थी सो मुझे दिखा दी होली। वोः आतिश औ तन फूस जला दी होली ॥

गम के गुलाल ने ऐसी धूल उड़ाई। अब सिवा खुदा के कुछ नहिं देय दिखाई ॥ तन बदन में जीतेही जी आग लगाई। जो होनी थी सो होली मेरे भाई ॥ शाबाश इश्क ने खूब लगा दी होली। वोः आतिश औ तन फूस० ॥

जिस वक्त वोः आया दिल में इश्क रंगीला। था चेहरे का रंगलाल सो पड़ गया पीला ॥ औ जामा जो था खिचा वोः होगया ढीला। तिस पर भी दोस्तों ने कर दिया येः गीला ॥ हजरतेइश्क ने मुझे खिलादी होली। वोः आतिश औ तन फूस० ॥

दिल तड़फ तड़फ के अपना नाच दिखाये। वोः इश्क न अपने कुछ खातिर में लाये ॥ दिल आह कर शोर औ धूम मचाये। पर इश्क न इसकी मुतलक सुने सुनाये ॥ लो सुन

दोस्तो तुम्हें सुनादी होली । वोः आतिश औ तन फूस० ॥
थक गये इश्कको कबीर गाते गाते । जिसको देखा वोः आये ढोल बजाते ॥ कोई सर पर डाले खाक कोई चिल्लाते । कहैं बनारसी हम इश्क में हैं मदमाते ॥ जो हक कुल्ह थी मैंने गा दी होली । वोः आतश औ तन फूस जला दी होली ॥

## मतलब तौहीद । खुदा का सरापा—खरी रंगत ।

जितने दिन है इस दुनिया में किसी का नहिं मजहब है वो । सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ बुतखाना बनवाया किसी ने मसजिद को भी चुनवाया । अपने अपने दीन को देहरा सबने सबको दिखलाया ॥ उस मालिक को भूल गये जिससे ये नर जामा पाया । इसमें उसको नहिं देखा है जिसका ये कंचन काया ॥ मैं अपने तन में देखो हर घड़ी किमिरा रब है वो । सब में है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ हिन्दू तो बुतखाने में पत्थर से टकराते सरको । मुसलमान मसजिद में गिरके सिजदा करते हैदर को ॥ और सुनो अंगरेज बड़ा कहते अपने गिरजा घर को । इसी तरहसे हरेक भूले पर नहिं पाया उस हरको ॥ मुझे इसी में मिला और जो मिले किसी को कब है वो । सब में है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ कोई ढूंढता पोथी में और कोई देखता किताब में । लाख तरह से देखा पर वो आता है कब हिसाब में ॥ उसे जो देखा चाहे तो वो है इसे जाम नयाब में । इसी के भीतर देखे तो फिर पहुँचे आली जनाब में ॥ बहुत सख्त पै मन्जिल ये और राह बड़ी बेढब है वो । सबमें है और

अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ वे समझी इस कदर जहाँ में है कि खुदा को समझै गैर । सरेने बाँधी मुश्कें और तौहीद से रखते बिल्कुल बैर ॥ करें फकीरों से झगड़ा किस तरह से उनकी होगी खैर । अपना आपा नहीं देखे हैं जिसमें चौदा तबक की सैर ॥ जैसा देखो वैसा दीखै दिल आइना हलब है वो । सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ सुनो सरापा उसका तो वह ज़ुल्फ में उसके खमभी है । नागिन भी है साँप भी है अमृत भी है और शाम भी है । माथे पर है मेहर तसद्दुक चश्म में जामें जम भी है ॥ अबरू में ज़ुलिफकार है शमशीर और तेगे दुदम वो है । रहम करे तो राहिम है और कहेर करे तो गजब है वो । सब में है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ मिज़े में उसके तीर भरे हैं और कारी नस्तर भी है । चितवन में है चोट दूर की जादू भी और सहर भी है । बीनी में अल्लाह अलिफ है इल्म भी है और हुनर भी है ॥ तड़फ न बिजुली में ऐसी नथुनों की फड़क इस कदर भी है । दहन में गुंचा लाल लबे शीरीं भी और वे लब है वो । सब में है और अलग है सबमें देखा मैंने अजब है वो ॥ दंदा में मोती है बेबहा और हीरों की कनी भी है । कहूँ मैं अपनी जबां से क्या क्या जो जो उसमें नमी भी है ॥ उन्हीं में है खान ये खुदा और कहीं कहीं पर अनी भी है । अगचें पीसे दाँत तो वो इस दुनियाँ ऊपर गनी भी है ॥ नाम तेरे दिलबर के लाखों इसी से तो वे लबक है वो । सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ जबाँ से उसकी जो निकले वो सच्च है

ऐसी जनां है वो । जनक में उसकी चाहसे डूबा यूसुफ ऐसा कुआँ है वो ॥ सीने में आईना साफ बाजुओं में ताकत तमा है वो । पंजे में पंज ये अली है और पंजे मरजाँ हैं वो ॥ नाखूनों में हिलाल है और सिकम में नमीं सब है वो । सब में है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ नफा में है वो भमर के चक्कर में आये आशक का दिल । कमर में तो है रजि निहाँ वो राज हुआ किसको हासिल । जानू में बिल्लूरकी शाखें नूर पिण्डलियोंमें कामिल॥ कदम २ पर नाजो करशमाँ आशकों को करता बिस्मिल । जिस्म भी है बे जिस्म भी है क्या लिखूं कि कैसी छब है वो । सब में है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ हुये हजारों बली जहाँ में लिखी किताबें वह तौहीद ॥ कह कह के थक गये सभी पर खतम हुई नहीं गुफ्ते शुनीद ॥ कटाके सर को लिखीं मसनवी जानि बेचकर पाया दीद । बनारसी रो रो के हुआ खुश तब हासिल हुई उसको ईद ॥ कहना सुनना कुछ नहीं बनता मुझको तो यक सबब है वो। सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥

## ख्याल मार्फत तौहीद अपने को पहचानना ।

### बहेर शिकस्ता ।

हुआ जो आपसे अपने वाकिफ तो मैं अनल हक यों कह पुकारा ॥ तुम्हें जो मालूम हो कहो तुम किसी का इसमें है क्या इजारा ॥ अजब तमाशा ये देखा मैंने कि पारा पारा हुआ जो पारा । दिलाया उसको तो एक होकर मिला वो आपी से अपना प्यारा ॥ इसी तरह से जुदा मैं उससे हुआ

मिला उसका फिर सहारा । तो वस्ल होकर हुआ मैं एकतां हुई से मैंने लिया किनारा ॥

शैर—लड़गई आँख वो मारा जो नजारा उससे ॥ दम ब दम साफ अब होता है इशारा उससे ॥ छिपा के आँख में मैंने चुरा लिया उसको । हुआ रोशन मेरी पुतली का ये तारा उससे ॥ समझ तुम्हें गर हो तो समझलो ये मन खुदा है सखुन हमारा । तुम्हें जो मालूम हो कहो तुम किसी का इस में है क्या इजारा ॥ ये जिस्म में दम दमा है दमका के एक दम है यहाँ गुजारा ॥ हुआ जो कोई वहाँ से वाकिफ न उसको हरगिज किसी ने मारा । यहाँ तो मरगये मुफ्तमें कितने हुये सिकन्दर वो शाह दारा ॥ रहा वो कायम मरा न हरगिज कि जिसने छोड़ा बलख बुखारा ॥

शैर—किसीने उसके लिये तख्त हजारा छोड़ा । किसीने मालो महेल मुल्क ये सारा छोड़ा ॥ मैं तुमसे पूंछता हूं तुमने यहां क्या छोड़ा । ये सुनके मर गये इश्कों का तरारा छोड़ा ॥ कई मर्तबा कहके अनल हक ये सरको मैंने दिया खोदारा । तुम्हें जो मालूम हो कहो तुम किसी का इसमें है क्या इजारा ॥ जो समझ आई कुछ अपने तांई तो मैंने फिर ऐसा ही विचारा । ये जिस्म मैं तो नहीं हो मुतलक श्रो तूर हूँ जिसका कुल पसारा ॥ किया ये दिल के तईं आइना और नक्शा उसका यहाँ उतारा । लगा वो कहने कि मैं खुदा हूँ कहो फिर इसमें क्या मेरा चारा ॥

शैर—जामें वहेदत जो दिया उसने दुबारा मुझको । पीते ही बेहोश हुआ ॥ सरेह की बात नहीं शेख गवारा मुझको ।

मैं गम से दूर और जहां में एकता और लामकां में रहूं विचारा॥
तुम्हें जो मालूम हो कहो तुम किसीका इसमें है क्या इजारा ॥
ये पेट भर भरके तुमने अपना बनाया है दुनियां में पेटारा ।
अगचें भूखे रहो तो पाओ अजीब लज्जत का वो छोहारा ॥
न उसमें गुठली न उसमें छिलका न वो मुलायम न वो करारा ।
भरा सरासर है उसमें अमृत वो खाये जो है खुदा का प्यारा॥
शैर—शिकम को तुमने जहां में न जो मारा होगा ॥ किस तरह से वो खुदा यार तुम्हारा होगा ॥ हाले तौहीद न समझे तो खिसारा होगा । मौत के बाद भी मरमर के तू हारा होगा॥ बनारसी कहता मैं वही हूँ ये जिस्म मैंने उसी पै वारा । तुम्हें जो मालूम हो कहो तुम उसी का इसमें है क्या जारा ॥

## ख्याल खुदा से जुदा न होने का-बहेर शिकस्ता ।

जुदा न तुझसे हुआ मैं हरगिज न मुझसे तेरी जुदाई होगी।
किया जो तूने खुदी से बाहर तो मेरे हां अब खुदाई होगी॥ जो
फौज मोजे बहेर जो उलफत की लहेर इस दिलपर आई होगी।
तो चश्म के चश्म से वो दरिया बहा के दुनियां बहाई होगी ॥
जो अश्क गौहर की माला मैंने गले में अपने पिनहाई होगी।
सदफ की तो आगे मेरे ही आँखों के वो कैसी बुराई होगी ॥
शैर—दीदये तरसे मेरे ऐसी तराई होगी । चर्ख पर वारिषे मौसम की चढ़ाई होगी ॥ जिक्र रोने का जो आये तो मैं तूफां करदूं । न रोऊं इतना तो फिर मेरी हँसाई होगी ॥ न अब तकब्बुर रहा दुई का दुई भी देती दोहाई होगी । किया जो तूने खुदी से बाहिर तो मेरे हां अब खुदाई होगी ॥ जो दस्त में मेरे उस सनम की जो पहुँची आकर कलाई होगी । तो

हाथ गलते औ होंगे दुश्मन कहाँ फिर उनको कलआई होगी। औ हाथ डाले गले में मेरे अदा जो उसने दिखाई होगी। तो बाज़ू हटेंगे वो रकीबों के और न उनकी दवाई होगी॥

शैर—आँख तुझसे जो किसीने भी लड़ाई होगी। तो फतेयाब हां उसकी लड़ाई होगी॥ देख तो उसको जरा खोल चश्म में दिलको। आँख फिर तुझसे किसीने न मिलाई होगी। न दीनो मजहब का अब घमंड है तो क्यों न मेरी सफाई होगी। किया जो तूने खुदी से बाहर तो मेरे यहां अब खुदाई होगी॥ अगचें उस शमये नूर से यहाँ किसीने भी लौ लगाई होगी। तो नाम रोशन उसीका होगा औ बात उसकी बनाई होगी॥ औ कूंचये जाना कि किसी ने करी अगचें गदाई होगी। तो बादशाह से भी सल्तनत जहाँ में उसकी सवाई होगी॥

शैर—पास जबतक के खुदासे न रसाई होगी। रूबरू मौतके फिर उसकी हँसाई होगी॥ अब कमां हाथ कजाके हैं निशान से बचो। गोशये यार में छिपने से रिहाई होगी। कहाँ यहाँ जिस्म का गुरूर है ये मैंने शोहरत मचाई होगी॥ किया जो तूने खुदी से बाहर तो मेरे यहाँ अब खुदाई होगी। है राह उल्फत की सख्त मुश्किल भला किसीने जो पाई होगी॥ तो मंजिले जाना पर पहुँच के उतारी उसने कथाई होगी। ऐ देवीसिंह अब ये रूह जिसकी खुदा में जाकर समाई होगी॥ तो आना जाना न होगा वांसे वोः बात उसकी बनाई होगी।

शैर-बे बजह लावनी जिसने कहीं गाई होगी। अपनी फिर आपही खाक उसने उड़ाई होगी॥ हाल तौहीदसे वाकिफ जो हुआ एक हुआ। बात उसको न दुई की कभी भाई होगी॥

बनारसी ने सदा अनल हक खुदा था तुझको सुनाई होगी।
किया जो तूने खुदी से बाहर तो मेरे यहाँ अब खुदाई होगी॥

## बागे बहिश्त और बागे दुनियाँ दाना की सिफत

बहेर शिकस्ता।

ओ बागे जिन्नत ये बागे दुनियाँ है दोनों बागों का एक माली। अजब करश्मे के तुख्म बोये कि सब गुलों में है बू निराली॥ वहाँ वो हूरें यहाँ पै पारयां वहाँ मलक यां वशार जलाली। वहाँ वोः रिजवां यहाँ ये गुलचा खुशी कहां है वहां बहाली॥ वहां है तूबाँ यहां सनोवर झुकाई जिसने गुलों की डाली। वहां अजायब है मुर्गे नगमां सरा इहां बुलबुले हैं आली॥ किसी की रङ्गत सफेद है गी किसी की जर्द और किसी की काली। अजब करश्मे के तुख्त बोये कि सब गुलों में है बू निराली। वहां जो सनीम सुल सबील है बनाई उम्माँ की यहां पनाली। वहां मोह है जामें कौसर यहाँ है लाले की भी पयाली॥ वहाँ जो गुंचा शिगुल्फा ताजा भरा शिगुल्फों से यहाँ लबाली। जो सर सब्ज हैं शजर सब हरे यहां नख्ल हैं न खाली॥ कोई शिगुल्फा तरी किसी पर कुबूद कोई किसी पै लाली। अजब करश्मे के तुख्त बोये कि सब गुलों में है बू निराली॥ वहाँ जो मेवे अजायब हैंगे तो फल यहाँ हैं लगे जमाली। जो खास बातें वहाँ तो आम है सखुन यहाँ कुछ नहीं है जाली॥ वहाँ जो शकलें हैं सब की नादिर तो सूरतें हैं यहाँ भोली भाली। वहाँ के गुल से खिजल जो लाल तो सांवली से यहाँ कलाली॥ खिजां न उसके बाहर को है न उसके गुल को है पायमाली। अजब

करश्मे के तुख्म बोये कि सब गुलों में है बू निराली ॥ है ऐसे पानी से बाग सींचे हरे हुये गुलशने जवाली । ये कहते हैं देवीसिंह कुल से वही है दोनों जहाँ का माली ॥ जो अपनी दिखलाये शाने गुलको तो वो उठे बुलबुले नेहारी । हरेक अदा है अजायब उसकी हरेक तरा है नई निकाली ॥ बनारसी का सखुन ये सच्चा औ मार्फत की है बोला चाली । अजब करश्मे के तुख्म बोये के सब गुलों में है बू निराली ॥

## सिफत खुदा के चेहरे की जिसमें कुल्ल कुरान ।

### बहेर खड़ी ।

कुरान की आयतें हम उसके रुखे नायाब से लिखते हैं । लाजबाब उसको हम अपने इस जबाब से लिखते हैं । अलिफ को हम नहीं लिखेंगे बीनी उस गुलरू की लिखते हैं । बिसमिल्ला को छोड़ सिफत उसके अबरू की लिखते हैं ॥ लामसे कुछ नाहिं काम भलक उसके गेसू की लिखते हैं ॥ ऐन को करके अलग आँख हम उस महरू की लिखते हैं । तेको तर्क कर चीने जबी दिल की किताब से लिखते हैं ॥ लाजबाब उसको० ॥

नुक्तों को कर अलग हम उसको रुखे खाल को लिखते हैं । कोई हरेक इसमों से बेहतर उसके हर एक बालको लिखते हैं ॥ कोई लिखते हैं जीम् हे खे कोई दाल ज़ाल को लिखते हैं । हम इनको गये भूल सिर्फ उसके जमाल को लिखते हैं ॥ अरबी फारसी हिन्दी तुरकी सब सिताब से लिखते हैं ॥ लाजबाब उसको ० ॥

कुल कमाल मुल्लाः हम उसके सारे खत को लिखते हैं । और मायने कुरान के उसकी उलफत को लिखते हैं ॥ जेर

जब्बर से जबरदस्त उसकी ताकत को लिखते हैं। पेश से बेहतर पेशासी उसकी किसमत को लिखते हैं। रुखे रोशन आला हम उसको महताब से लिखते हैं ॥ लाजबाब उसको० ॥

कलमे से बढ़कर अपने दिलवर की बात को लिखते हैं। मुसलमान हिन्दुओं से आला उसकी जात को लिखते हैं ॥ वो हैंगे नादार जो उसका तायदाद को लिखते हैं ॥ देवीसिंह दिल-पर उसकी हर करामात को लिखते हैं ॥ बनारसी तो हिसाब उसका बे हिसाब से लिखते हैं ॥ लाजबाब उसको० ॥

## जीव ब्रह्म को एकता थी–बहेर खड़ी ।

हमदम् हममें हम् हम् दममें दममें जलबा आलम का ॥ आलम् में है सनम् सनम् में आलम् है उस जालम् का । दिलमें दिलवर दिलवर में दिल दिल में उसकी याद रहे ॥ याद में अशरत अशरतमें में मैं में नशा ईजाद रहे ॥ नशे में मस्ती मस्ती में वहदत वहदत में दिल शाद रहे ॥ शाद में शोर औ शोर में शोहरत शोहरत में आबाद रहे ॥ आबादी में आदम् आदम् में दम्दम् में दमका ॥ आलम में है सनम्० ॥

आशक में है इश्क इश्क में नूर नूर में हकताला । हकताला में रहम् रहम् में करम् करम् में उजियाला ॥ उजियाला में ताब ताब में माह माहमें है आला ॥ हाले में अखतर अखतर में चमक चमक में छवि आला ॥ आला में वो खूब खूब में रूप रूह में रंग चमका ॥ आलम में है सनम्० ॥

शोक में उसके जोंक जोंकमें रूह रूह में रूहाना ॥ रूहा-नाम उन्समें प्यार प्यारमें जिन्दगानी ॥ जिन्दगानीमें जान जानमें जाना जाना में जानी ॥ जानी में वोः हुस्न हुस्न में जेब

जेब में लासानी ॥ लासानी में सिफत सिफत में लामकान घर हाकम् का ॥ आलम में है सनम्० ॥

चाह में मन और मन में चरचा चरचे में उसकी कुदरत ॥ कुदरत में है बाग बागमें चमन चमनमें गुल खिलकत् ॥ खिलकतमें खुशबू खुशबूमें खिला खिलेमें है रङ्गत ॥ रसमें रस रसमें अमृत अमृत में पाई लज्जत ॥ लज्जतमें तौहीद देवीसिंह कहे ख्याल सुन हमदम का ॥ आलम में है सनम० ॥

## ख्याल तौहीद शिकस्ता ।

साबा भी चलने में थर थराये न दिल को ताकत न ताब दमको ॥ भला वहाँ किस तरह से जायें और आन पायें मेरे सनमको ॥ जहाँ फरिस्ता भी दम न मारे वहाँ कोई क्या धरे कदमको ॥ गुजर न माहो मेहर की मुतलक न बार है साहब हसमको ॥ बुलंदी परती दिखाई उसने बनाया हस्ती को और अदमको ॥ सबोंसे रुतबा है उसका अफजल कहूं मैं क्या फजल औ करम को ॥ हजार बुलबुल करें इरादा गुलों से फेर अपने चश्मे नमको ॥ भला वहाँ किस तरह से जायें और कौन पाये मेरे सनमको ॥ वो ही हुआ मौजूदे परिस्ता तेरी उसी से गुले इरमको ॥ न जुल्फ हूरो परी कि पहुँचे हैं उसके काकुलके पेंच खमको ॥ कहीं पै खाक और बादे आतिश कहीं पै जारी किया है जमको ॥ उसीसे अर्बा अनासर हैंगे बहम मूल हरगमो अलमको ॥ हरेक फरदे बसर खुदा है गवाह कहता हूँ खा कसमको ॥ भला वहाँ किस तरह से जाये और कौन पाये मेरे सनमको ॥ इसी तमन्नामें हाथ मलते हैं जिनके कोई पहुँचादे हमको ॥ बराये अल्लाह उसी के दरतक करेंगे क्या हम दरो दिरम को ॥ बरहम और

शेख उसी की उल्फतमें भूले बुतख नये हरमको ॥ और रब्बे है बेचूं औ चरावसन दख्ल कुछ वां है बेशकमको ॥ हो सुस्त जबरीलका भी शहर पर हजार उड़े वो जताये हमको ॥ भला वहाँ किस तरह से जाये और कौन पाये मेरे सनमको ॥ सरावे वहदतमें मस्त हैंगे जो उसके समझे न जामे जमको ॥ जहाँ कि कैफियत उनको हासिल उसी के देखे से भूले गमको ॥ समझते अमृत से भी हैं बढ़के जो सादिक आशिक हैं उसके सम को ॥ रहीम है वो करीम है वो बनारसी रोकले कलम को ॥ मकान है लामकां उसी का तू याद रख दिल में इस रकम को ॥ भला वहाँ किस तरह से जाये और कौन पाये मेरे सनम को ॥

## तकलीफ में घबराना नहीं चाहिये यह सच्चे आशक का काम है-बहेर लँगड़ी।

जरा आह न करी इश्क में सब आफत आई मुझको ॥ कहीं चाह में गिरा कहीं नजर पड़ी खाई मुझको ॥ किसी ने अपना संग दिया नहिं हमतो आप हैं अकेले ॥ जहाँ न कोई मिला उस जांपै किये हमने मेले ॥ लाख बजह के सदमे औ गम सब अपने दिलपर झेले ॥ सरको काटके हथेली पर रखके सरपर खेले ॥ बिन मुर्शिद के नहीं है हम और नहीं किसी के हैं चेले ॥ जिसे इश्क का मजा लेना हो वो हम से लेले ॥ इश्क बहुत मुश्किल है फिर आता ये नंगे पाई मुझको ॥ कहीं चाह में गिरा० ॥

और सुनों अवहाल इश्क में कहीं पहने बैठे जंजीर ॥ ऐसा फँसाया याद में उसकी ये दिल किया असीर ॥ देखके मेरा हाल शर्म में आई शीरीं लैला हार ॥ मजनूं रांझा हुआ

फरहाद बहुत सुनके गमगीर ॥ और भी जो आतिश थे उनको लगा मेरे वो गम का तीर ॥ लगे मचाने शोर ऐ आशक है कोई अजब फकीर ॥ जो आशिक थे पाक उन्होंने बातें बतलाईं मुझको ॥ कहीं चाह में गिरा० ॥

एक वक्त हुआ ऐसा इश्क में यारो हम बीमार हुये ॥ बेताबी से बात करने को भी दुशवार हुये ॥ गया तनबदन सूख जिगर पर लाख बजह के गार हुये ॥ मरहम लगाया तो उससे और जख्म पुरकार हुये ॥ बहुत दवाई करी मेरी वोः तबीबसब लाचार हुये ॥ मेरी सूरत देखकर जिन्दे भी मुर्दार हुये ॥ तो मैं बिस्मिल रहा लगी नहीं लाखों वो दवाई मुझको ॥ कहीं चाहमें गिरा० ॥

यहाँ तलक होगया हाल तिसपर नहिं मैंने आह करी ॥ अपने दिलको किया मजबूत औ यह सल्लाह करी ॥ उस दिलवर को दिदार करने की इस दिल से चाह करी ॥ और रास्ते छोड़ कर पाक इश्क को राह करी ॥ देवीसिंह ने उसके सिवा नहिं किसी की कुछ परवाह करी ॥ खुशी हुआ वोः तो उसने रहम की भली निगाह करी ॥ बनारसी ये कहे इश्क ने कर दिया गोसाईं मुझको ॥ कहीं चाह में गिरा कहीं नजर पड़ी खाईं मुझको ॥

## पान के खानेकी सिफत—बहेर लँगड़ी ।

पान के खाते ही उस सनमके दहन में क्या क्या रंग हुये ॥ हीरे मोती लाल मरजां और जमुर्रद संग हुये ॥ एक रंग में चार रंग जब हुये तो क्या क्या रंग खिला ॥ जिसने देखा उसीने कहा इन्हें क्या रंग मिला ॥ वो है जिलत दाँतों में किये तो जिला को भी देती है जिला ॥ चमक दमक से तो जिसकी हरदम ये तड़पै है दिला ॥

शैर–किसी जां पर तो उजली सी है वोः कुछ इनमें तैयारी ॥ किसी जांपर तो सुर्खी ने करी है क्या गुलेनारी ॥ किसी जांपर तो सब्जी ने वो है सब्जे की जांमारी । कहीं रङ्गत गुलाबी है गोया चारों की वां यारी ॥ देखके चारों रङ्ग जवाहर लड़ लड़के चौरंग हुए ॥ हीरे मोती लाल मरजां औ जमुर्रद सङ्ग हुए । पहले पिया पानों का लहू और पीछे किया आशकों का खूं ॥ गजब लिखे कोई क्या ताकत इनका मजमूं ॥ चश्म को सब कहते हैं खूनी मैं इनको खूंखार लिखूं । क्या घाट है जून करने में यही है आफला तूं ॥

शैर–अगर देखा जो तुम चाहो तो कोई तोफा गिलौरी लो । हो जिस्म नूर मौला का कहो उस्से कि तुम खावो ॥ जो औ खाये तो फिर उसके दहन को तुम जरा देखो । करो टुकड़े जिगर अपना व आशक हो तो आशक हो ॥ देखके इन दंदाका जोहर आशके जौहरी दंग हुए ॥ हीरे मोती लाल मरजां औ जमुर्रद सङ्ग हुए । अजब तरह का तिलिस्म देखो उसके उस दंदानमें है ॥ ये तो सफाई कहाँ हीरे मोती की खान में है ॥ लाले बद-कशां में क्या कीमत जो कुछ इनकी शान में है ॥ कहाँ बिके ये बताओ बात ये किसके ध्यान में है ॥

शैर—इन्हें परखे वही जौहरी हो जिसकी पाक बीनाई ॥ नजर नापाक करने से तो हो फिर उसकी रुसवाई ॥ खुदा के घरसे तो इज्जत इन्होंने इस कदर पाई । इन्हीं से देखलो बिल्कुल है इस चेहरे की जेबाइ ॥ किया सितम् पर सितम् ये मुसक्या करके जिसदम नंग हुए । हीरे मोती लाल मरजां औ जमुर्रद सङ्ग हुए ॥ ये दंदा हैं उसके जिसके माहो मेहर अख्तर हैं

बने । आमाल अपने हुये बाला तो मेरे दिलवर हैं बने ॥ अब मुझको क्या कमी रही ये पास मेरे गौहर हैं बने । लाल भी अपने पास इल्मास के भी जेवर हैं बने ॥

शैर-ये बोनग हैं हकीकत इनके आगे क्या नगीने की ॥ ये वो मीना हैं जिस्से जेब हो दुनियां में मीनेकी॥ खुदा ने इनको तो रङ्गत वो दी है इस करीमे की ॥ मिले लज्जत इन्हीं से तो भला खाने औ पीने की ॥ बनारसी को खुदा ने बख्से कभी नजर से तङ्ग हुए हीरे मोती लाल मरजां औ जमुर्रद संग हुये ।

## खुदा की तारीफ जिस तरह कुरान में लिखी है ।

### ❀ बहेर छोटी ❀

कायम है खुदा एकजा वो न आये जाये ॥ पर कुदरत उसकी हरजा झलक दिखाये । नहिं चले फिरे नहिं खाय न पीवे पानी । नहिं घटे बढ़े ज्यों की त्यों रुबानी । मैंने देखा आँखोंसे वह मेरा जानी । औ वहाँ है और मैं उसकी यहाँ निशानी ॥ जो बगैर देखे कहे वो बात कहानी ॥ देखे तो नूर में मिले नूर नूरानी ॥ नहिं हिले न डोले बोले नहिं मतलाये ॥ पर कुदरत उसकी हरजा झलक दिखाये ॥ शोलये नूर कुछ उसके नहीं बदन है । दिलजा से मेरी उसकी लगी लगन है ॥ मैंने भी यही समझा कि मेरे तन है । कुछ सहे नहीं ये समझ भी बहुत कठिन है । नहिं मिलता उसका किसीको भी दर्शन है ॥ औ आपी आप अपना देखे जोवन है ॥ एकता है दुई की बात न सुने सुनाये । पर कुदरत० ॥ वो आपी हाकिम आपी वही गवाह है । आपी है बन्दा आपी वह अल्लाह है ॥ आपी है बना वो मेहर और आपी माह है । है सब में सब से अलग ये उसकी राह है ॥

बे गम है उसको किसी की भी नहीं चाह है। बे चश्म है देखे सबको अजब निगाह है ॥ लामक है वोह नहि हटे किसी के हटाये। पर कुदरत० ॥ मशरक से मगरिब तक सबमें शामिल है। पर अलग है मेरा खुदा बड़ा कामिल है ॥ नहिं अक्ल है पर वो अक्ल से भी आकिल है। नहीं अदल है पर वो अदल का भी आदिल है ॥ नहीं आबो हवा आतश और नहीं वो गिल है। कहै देवीसिंह बस उसी में मेरा दिल है। और बनारसी कुछ गाये नहीं बजाये। पर कुदरत उसकी हर जां झलक दिखाये।

## माशूक और आशिक पैरहन की तारीफ-बहेर लँ०

तुझको तो ऐ गुल गुलशन में फर्श इतर से तर चहिये। मुझको प्यारे खाक का उस जां पर बिसतर चहिये ॥ गिर्द तेरे चेहरे के हरदम उस महका हाला चहिये। तेरे दर की खाक मेरे मुंह पर आला चहिये ॥ तेरे गले में गजमुक्ता और लालों की माला चहिये। मेरे गले में वो लपटा चौतरफा काला चहिये॥ तुझे तख्त सलतनत का चहिये। मुझको मृगछाला चहिये ॥ तेरे कदम में पदम पाँवों में मेरे छाला चहिये। तुझे सोने को पलंग हमें पड़नेको तेरा दर चहिये ॥ मुझको प्यारे खाकका० ॥

तेरे दस्त में छड़ी फूल की चढ़ने को घोड़ा चहिये। मेरे हाथ में आज दहेका उस दम कोड़ा चहिये ॥ तुझको तो ऐ जांन हमेशा करना नकतोड़ा चहिये। मुझको जालिम कभी नहीं तुझसे मुंह मोड़ा चहिये ॥ तेरे वास्ते शाल दुशाले का तोफा जोड़ा चहिये। मेरे वास्ते फटासा कम्बल भी थोड़ा चहिये ॥ तुझे चहिये रङ्गमहल हमें तेरा ही कूंचा घर

चहिये ॥ मुझको प्यारे०॥

तेरे तो खाने को खूब तोफा मेवा हरदम चहिये । मेरी गिजा है मुझे खाने को हरदम गम चहिये ॥ तुझको तो ऐ नाच रङ्ग यक आलम का आलम चहिये । मेरे दिलको हमेशा तुही एक जालिम चहिये ॥ तेरे वास्ते परी हूर महताव और शवनम चहिये । मेरी सदा है मुझे अब तुही फक्त हरदम चहिये ॥ अब तो आरजू यही तेरे कदमों में मेरा सर चहिये मुझको प्यारे०॥

तू तो है सरदार तुझे करने को सरदारी चहिये। हमें हमेशा तेरी करना तावेदारी चहिये ॥ तुझको तो अपने जोवन की करना तैयारी चहिये। हमको अपने बदन की जरा न हुशियारी चहिये ॥ तुझको निशान और हाथी पर अम्बारी चहिये । मुझको करना तेरी सब फरमा बरदारी चहिये ॥ जलेब में हरदम तेरे सब फौजों का लश्कर चहिये ॥ मुझको प्यारे० ॥

तेरे बदनपर यार सुनहरी मीने का गहना चहिये । अपने तनपर हमें सेली कफनी पहना चहिये। तू चाहे झटककर मुझे दामन तेरा गहना चहिये । जहाँ रहे तू तेरी खिदमत में मुझे रहना चहिये ॥ देवीसिंह यों कहें तेरे सब जोर जुल्म सहना चहिये । बहेर इश्क में गर्क हो बिना आब बहना चहिये ॥ बनारसी ये कहैं मेरे अब दिलको तुही दिलवर चहिये । मुझको प्यारे खाक का उस जांपर बिस्तर चहिये ॥

## रंज औ राहत दोनों को एक समझना चहिये ।

### * बहेर लँगड़ी *

ऐ गुल तेरी उलफत में गुलजार भी है और खार भी है।

बड़ा लुत्फ है इश्क में मार भी है और प्यार भी है ॥ कभी इशारा अबरू का है और कभी तलवार भी है। कभी वस्ल का हमसे एकरार भी है इनकार भी है ॥ कभी गालियाँ झिड़की हैं और कभी शीरीं गुफतार भी है। कभी खिजां है कभी गुल-शन है बाग बहार भी है ॥ बोला ये मंसूर दार पर दार है पर दीदार भी है। बड़ा लुत्फ है० ॥

कभी तौक गर्दन में पड़ा और कभी फूलों का हार भी है। कभी बरहना बदन है कभी तनपै शृंगार भी है ॥ कभी सैर सहरा की है और कभी कूंचा बाजार भी है। कभी है राहत कभी रञ्जीदा दिल बीमार भी है॥ कहा लैला से मजनू ने कभी सुलः भी है तकरार भी है ॥ बड़ा लुत्फ है ॥

कभी हँसी दिल्लगी कभी रोना अशकों का तार भी है। कभी नजर का छिपाना कभी निगाहें चार भी है॥ कभी गले से गले भी वो करता दारोमदार भी है। कभी जिलाये कभी यक अदा से डाले मार भी है॥ कभी करे ऐयारी वो औ कभी वोः बनता यार भी है। बड़ा लुत्फ है० ॥

कभी जख्म पुर होंय जिगर के कभी बदन पर गार भी है। कभी करै खुश कभी वोःकरता दिल बेजार भी है॥ देवीसिंह ये कहैं मेरा वोः शोख सितमगर यार भी है। जो चाहै सो करै अब वही दिल का मुखतार भी है। बनारसी कहैं नेकी बदी दोनों का उसे अखत्यार भी है। बड़ा लुत्फ है० ॥

## होली जिस्म की मतलब तौहीद—बहेर लंगड़ी ।

बनी मेरे इस जिस्म की होली लगी इश्ककी आग भला। लगा गले से सनम को तन में खेलं फाग भला ॥ भर भर के

चश्मों में अश्क करदूं आंखें रंगीन भला। सुर्ख गुलाबी और केसरिया रंगत तीन भला ॥ रो रो के जामें को मवत्तर करूँ बजाऊँ बीन भला। लौ में शोले नूर रहूँ सदा लवलीन भला ॥

शैर—बनाया उसने मुझे वोः फकीर होली में। के आये वेनवाँ लेके अबीर होली में ॥ उन्हीं में मिलगये मुझको कबीर होली में। सुनाये मैंने उन्हें वो कबीर होली में ॥ लडूं भिड़ूं गालियाँ खाऊँ नहिं रक्खूं दिल में लाग भला। लगा गले से सनमको तनमें खेलूं फाग भला ॥ प्यार की पिचकारीसे उसने किया मुझे रंगलाल भला। खुशी हुई वोः तो उड़गया गमका सभी गुलाल भला ॥ अनहद बाजे बजें मगज में कई वजहकी ताल भला। राग वोः दीपक सुने जो हो साहबे कमाल भला ॥

शैर—लिया है अबके भला मैंने योग होली में। मैं अपने योग से करता हूँ भोग होली में ॥ लगा ये इश्कका ऐसा ही रोग होली में। जिगर भी जल गया करके वियोग होली में ॥ नींद कहाँ आती है मुझे मैं रहूं रातो दिन जाग भला। लगा गले सनमको तनमें खेलूं फाग फला ॥ मैं अपने दिलमें देखूं हैं इसीमें उसका नूर भला। उसीसे खेलूं मैं होली उड़ादूं तन की धूर भला ॥ हाथ पाँव लटकिया है इनका मुझको नहीं गुरूर भला। ये मैं नहीं हूँ और हूँ इनमें पर इनसे दूर भला ॥

शैर—ये मैंने पीर से सीखा है खेल होली में ॥ अब अपने यार से रखता हूं मेल होली में ॥ मलूं मैं यार का इतरो फुलेल होली में। कि जिसकी बूसे मिटे कुल झमेल होली में ॥ गिरे नहीं मेरे सरसे इज्जत हुरमत की पाग भला। लगा गले से सनमको तनमें खेलूं फाग भला ॥ ऐसी होली आो खेलो हो

जिसको कुछ फहमीद भला ॥ कहै देवीसिंह ये है होली भी और तौहीद भला । इसी में देखूं नाचरङ्ग है इसी में उसका दीद भला । इसी जिस्म में करूं मैं खुदा से गुफ्त शुनीद भला ॥

शैर–उड़ादे दिल से खुदी की तू खाक होली में । तो होवे दम्मे तेरा जिस्म पाक होली में ॥ ये अबकी मानले मेरी तू साक होली में ॥ तर्क दुनियाँ को तू कराता हो यार होली में । बनारसी तेरी होली में है इश्क ज्ञान वैराग्य भला ॥ लगा गले से सनम् को तनमें खेलूं फाग भला ॥

## परमेश्वर की याद में रोने की तारीफ-बहेर छोटी।

अश्कों से मेरी गौहर लगी है । ये दुकान अब मोतियों की बड़ी लगी है ॥ कभी मीजय की नोकों पर यों अश्क खुलते हैं। इलमास के टुकड़े कांटों पर तुलते हैं ॥ जिस वक्त ये आंसू सीने पर ढुलते हैं । तो दाग जिगर के साफ मेरे धुलते हैं ॥ इस धार से दुरदाने की छड़ी लगी है । ये दुकान अब मोतियों की बड़ी लगी है ॥ कभी खूने अश्क अश्कों से मिल बहता है। तो लाल का दिल भी गौहर में रहता है ॥ बेवफा हैं इनका मोल न कोई कहता है । जो आशके जोहरी है वोः इन्हें चहता है ॥ इस कदर मेरे चश्मों से झड़ी लगी है । ये दुकान अब मोतियों की बड़ी लगी है ॥ फुरकते यार में दिल को बेकरारी है। सब इसी से रातों दिन गिरिया जारी है ॥ अश्कों ने मेरे गौहर ने जो की यारी है ॥ बस इसी से उसने पाई आब दारी है । दोनों आँखों से मेरे झुलड़ी लगी है ॥ ये दुकान अब मोतियों की बड़ी लगी है। वो देवीसिंह ने तुख्म मुहब्बत बोया । तो रोजे हमको बड़ी चैन से सोया ॥ और बनारसी उन यादे

खुदा में रोया ॥ अश्कों से गौहर बे बिंधे का हार पिरोया ॥ आँखों से मेरे बारिश हर घड़ी लगी है। ये दुकान अब मोतियों की बड़ी लगी है ॥

## ख्याल इश्क के दर्द का-बहेर छोटी।

आशकके दर्द को आशक हो सोइ जाने। हीरे की खान को कोई जौहरी पहचाने ॥ जिसके पांवों में कभी न फटी बेवाई। वो क्या जाने दुनियाँ में पीर पराई ॥ ये मसल है मैंने सुनी सो तुम्हें सुनाई। आशक मरीज की कहां है लिखी दवाई॥मजनूं की तबीबों ने जो फस्त कराई। लैला के निकला खून तो श्रो घबराई ॥ आशक का दुखडा जानें आशक स्यांने। हीरे की खान को कोई जौहरी पहचाने। फरहाद ने अपने सरपर तेगा मारा। ये सदमा शीरीं को नहिं हुआ गवारा॥ वो मरा वो भी मरगई हाल सुन सारा॥ वो उसकी प्यारी हुई वो उसका प्यारा। रांझे ने इश्क में छोड़ा तख्त हजारा ॥ तो हीर ने उस पर तन मन धन सब वारा। हो खाकसार सेहरा की खाक जो छाने। हीरे की खानको कोई जौहरी पहचाने ॥ जिस आशक ने है अपना जिगर जलाया ॥ तो इश्क ने उसका रोशन नाम कराया। आशिक ने रंज में तो राहत को पाया। यह गैर से सदमा कभी न जाय उठाया। जिसके दिलमें है खुदा का इश्क समाया। वो खुशी हुआ गर किसी ने उसे सताया। ये इश्क कोई पूरा दुनियाँ में ठाने ॥ हीरे की खान को कोई जौहरी पहचाने। जिसके दिल में है दर्द वही है दाना ॥ ये दर्द का तो दुनियां में नहीं ठिकाना॥बेरहम है जो आशक को कहैं दीवाना। इस जहाँ में उनका बेहतर है मरजाना। जिसके

जग० ॥ १६ ॥ शुक्लपक्ष तिथि दूज महीना आषाढ़ का जब आता है । रथ पर हो असवार प्रभु सुसराल कनक पुर जाता है ॥ लाखों आलम खींचें रथ नहिं चले वोः जब अड़ जाता है । तब तो पराडा हँस२ कर और गाली उन्हें सुनाता है ॥ और मन में मुसुक्याता है ॥ १७ ॥

तोड़ा--सब पराडे मिलके बात कहैं यह प्रभु का । हैं नन्द और बसुदेव पिता तुम्हरे दो ॥ तुम अहीर के घर पले बात ये सुनलो । ये कर्म किये जो तुमने वेद के बाहर सो हम जानी । जगन्नाथ जग० ॥ १८ ॥ ग्वालिन के संग किया भोग और भिलनी की झूंठन खाई । मित्र तुम्हारे अति पुनीत रहे दास सदन से कसाई ॥ धन्ना छीपी बड़ा भक्त और सैनभक्त तुम्हारा नाई । घर घर चोरी करो प्रभुजी जरा शर्म तुम्हें नहिं आई ॥ अब रथ को देओ चलाई ॥

तोड़ा--सुसराल चलन में काहे देर करो हो । मालूम हुआ घरवाली से भी डरो हो ॥ चाहे कोई जात हो सबको तुम्हीं बरो हो । गोपियों के चीर हरो हो । ऐसी मन में तुम क्यों ठानी ॥ जगन्नाथ जग० ॥ १६ ॥ हुई यात्रा पूरी फिर अपने पराडे से लई सुफल । चरण धोये आ पुरी के बाहर लेके श्वेत गंगा का जल ॥ और स्वामी के दर्शन पाये हुआ मुक्ति होने का फल । ध्यान धरा प्रभुजी का मन में क्षण में कटी सारी कलमल ॥ हुई पहिली सुनो मंजिल ॥

तोड़ा--चलते२ साखी गुपाल पर आये । साखी दी उनके चरण में शीश नवाये ॥ और घरमें आके ब्राह्मण खूब जिमाये ।

देह निरोगी। मत उन्हें कहो संयोगी ॥ आत्मा जिसने है पहिचानी। जगन्नाथ० ॥ सुबह शाम स्वामी के आगे आवैं दासी नृत्य करन। सुन्दर सुन्दर कहैं विष्णुपद अच्छे अच्छे गावैं भजन ॥ बड़े भाग्य हैं उनके जिनकी जगन्नाथ से लगी लगन। अष्टमहर हरवक्त हमेशा अपने मन में रहैं मगन ॥ और येही है उनका परन ॥

तोड़ा-हर रोज आय स्वामी के आगे गाना। अपने स्वामी को खूबी तरह रिझाना ॥ हँस२ के मुस्क्याना और भाव बताना। और सभी वोः राग सुनाना ॥ श्रीपति सारंग और कल्यानी। जगन्नाथ० ॥ पंचकोश में बना भैरवीचक्र वहाँ का सुनो मथन। बड़े२ जहां सिद्ध विराजैं करैं तपस्या रहैं मगन। नौदुर्गे की पूजन करते दशों द्वार से लगी लगन। प्राणायाम करैं वोः योगी योगयुक्त है बड़ी कठिन ॥ कोई जाने विरला जान।

तोड़ा-आतम में परमातम के दरशन पावे। जो जगन्नाथ से मन में ध्यान लगावे ॥ वोः आवागमन से छूट ब्रह्म होजावे। और सर्वगुण के गुण गावे ॥ निर्गुण होते हैं वोः प्राणी। जगन्नाथ० ॥ कर्मा बाई की खिचड़ी और दूध मलाई की पकवान। भोग लगैं नाना प्रकार के बड़े बड़े होते सामान ॥ खैरचूर के लाड्डू टुकड़ा मलूक का पावैं भगवान। उसही सूरी का चरबन और कहाँ तलक मैं करूँ बखान ॥ दिन रात उतरते धान ॥

तोड़ा--अटके पर अटका चढ़े पकावैं पण्डे। सबसे पहिले ऊपर के पकते हण्डे ॥ है महिमा जिनकी सात द्वीप नौ खण्डे। सब उन्हीं का है ब्रह्मण्डे ॥ आजको वेदों की धुन गानी। जगन्नाथ

न्नाथ का पावें सब तर जाते हैं ॥ सब एकी में खाते हैं ॥

शेर—जहाँ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र नहिं कोई । और चार वर्णकी एकमें होय रसोई ॥ वहाँ द्वैतभाव नहिं एक जात सब कोई । और एकादशी है सोई अपने मन में अति हर्षानी । जगन्नाथ० ॥ चारों फाटक पर है चौकी चार वीरकी सुनभाई । पूर्व दरवाजे पर पतित पावन की फिरती दुहाई ॥ बाहर दोनों रुिंह गर्जते सन्तोंपर सहाई । अरुण खम्भके दर्शन करते जिनकी सफल है कमाई । तू पहुंच वहाँ पर जाई ॥

तोड़ा—हैं पश्चिम दरवाजे पर श्रीहनुमाने । वीरों में वीर हैं महावीर बलवाने ॥ गये फाँद वो सागर एक छलाक दर्म्याने । त्रिलोकी उनको जाने अञ्जनी नन्दन हैं बलवान । जगन्नाथ० ॥ दक्षिण दरवाजे पर चौकी गणेशजी देते दाता । जिनके दर्शन करने को सारा आलम हैगा जाता ॥ महादेव के पुत्र औ श्री गौराजी जिसकी माता। चतुर्भुजी मूरत सुन्दर तनु दर्श किये नर तर जाता ॥ वो परमधाम को पाता ॥

तोडा-एक हाथमें डमरू एक हाथ त्रिशूल । और एक हाथमें लिये कमल का फूल । एक हाथ में लाड्डू लंबी सुंड रही झूल । वो जाडें दुश्मनको हूल । उत्तर फाटकपर उत्राणी । जगन्नाथ० । भोग शास्त्र की महिमा उस मंदिर के भीतर है सारी ॥ और कोकको लीला उसमें लिखी है सब न्यारी । कोई पुरुष है नगन और कोई निर्लज्जित बैठी नारी । महाकाम में आतुर ऐसी बहुत मूरतें हैं प्यारी । हैं वोः तो सब ब्रह्मचारी ॥

तोडा—जो ब्रह्म विचार के भोग करें वोः योगी । उसको मत समझो भोग वो बड़े वियोगी ॥ रहे सदा सर्वदा उनकी

अपने भक्त के कारण मारा हरणाकुश था दैत्य बड़ा। निश्चय थी प्रहलाद भक्त को सेवा में वो रहा अड़ा ॥ सब सङ्कट दूर लिये प्रभूने जो था उसपे दुःख पड़ा। रहा सदा सामने खड़ा ॥

तोडा-हररोज वो दर्शन पाता स्वामी जी का। उनके चरणों की रजका देता टीका। है मीठा रामका नाम और सब फीका ॥ सुन यही काम है नीका। पिता की आज्ञा कुछ नाहिं मानो ॥ जगन्नाथ० ॥ और सुनो बयान अजब स्थान स्वर्गसे है आला। चारों तरफ हैं सभी देवता ऐन बीच में शीवाला ॥ सबके ऊपर नीलचक्र है ध्वजा फड़कती गुल्लाला। और देवते देवल पर हैं हर एक तरह ये सब बाला। वो पहिने गलेमें माला ॥

तोडा—श्री जगन्नाथ का जप करें वो मनमें। हर वक्त खड़े रहें स्वामी के सुमरनमें ॥ दिन रात ध्यान रहै प्रभुजी के चरणनमें। सब रहें उनकी शरणान में ॥ वर्णन करते सुनते ज्ञानी। जगन्नाथ० ॥ और सुनो अहवाल वो मंदिर कञ्चन का हैं रत्न जड़े। कलियुग में पत्थरका हमको तुमको सबको नजर पड़े ॥ चारों तरफ देवल पर देवते हाथ उठाये रहैं खड़े। और राक्षस असुर वो मन्दिर पर शिर उनके कटे पड़े ॥ हैं उनके भाग भी बड़े ॥

शैर—जिन्हें स्वामी ने अपने हाथों संहारा। और पकड़ २ कर गदा चक्र से मारा ॥ उन्हें मारा नहीं कर दिया उनका निस्तारा। मिला उन्हें स्वर्गका द्वारा। होगये स्वामीके अगवानी। जगन्नाथ० ॥ और बना बैकुण्ठ यहाँ पर सभी यात्री आते हैं। जो जिसकी है यथाशक्ति वो अटका वहाँ चढ़ाते हैं॥ चार वर्ण एकी में भोजन करें और नहीं घिनाते हैं। महाप्रसाद श्रीजग-

जगन्नाथ जग तारण कारण बोध रूप भये निर्वानी ॥ ३ ॥
उस मन्दिर के ऊपर बैठे जगन्नाथ और बलभद्दर। बीच सुभद्रा आन विराजीं दोनों भाई इधर उधर ॥ मुख दक्षिण की ओर किये और पीठ किये बैठे उत्तर । लंका में राज विभीषण रोज आरती लेता कर । दै दर्शन उसे बाँपर ॥

तोड़ा—हैं भक्त के वश भगवान वेद यों गावे । लंका में दर्शन रोज विभीषण पावे ॥ और उसको वहां से नजर वोः मन्दिर आवे । स्वामी से ध्यान लगावे राजा लंका का है ध्यानी । जगन्नाथ जग तारण कारण बोध रूप भये निर्वानी ॥४॥ महा प्रभु के बायें मदनमोहन घोड़ेपर असवारे । मथुरा वृन्दावन को छोड़ पुरुषोत्तम पुरी को सिधारे ॥ ग्वालिन का दधि खाया ग्वालिन खड़ी हाथ को पसारे । त्रिलोकी के नाथ अंगूठी देते हाथ से उतारे ॥ सुन वहाँ का चमत्कारे ॥

तोड़ा—जहां अनेक ड्योढ़ी अनेक हैंगे द्वारे । है गरुड़ खंभ पर गरुड़ रूप को धारे ॥ क्या कहूं मैं हाँ के जैसे हैं विस्तारे । वोः हैं स्वामी के प्यारे उनकी महिमा मुश्किल पानी ॥ जगन्नाथ० ॥ महाप्रभु के दहिनी अक्षैवट मारकण्डेय औ बटकृष्णा ॥ जिनके दर्शन करने से छुटजाय जन्म भरका पिसना । और बना चन्दन गर वहाँ पर पंडों को चन्दन पिसना । बड़े भाग्य हैं उनके जिनकी जीतेजी मिटगई तृष्णा । उनको व्यापे विषना ॥

तोड़ा—एक और वोः मन्दिर में हैं बिम्बला देवा । जिनके दर्शन करने से पार हो खेवा ॥ चढ़े पान सुपारी हार फूल और मेवा । तू करले उनकी सेवा । वोही हैं कुब्जाजी महारानी ॥ जगन्नाथ० ॥ महाप्रभु के पीछे है नरसिंह रूप विकराल बड़ा ।

और निरंकार वोही निर्भय और वोही निरंजन । वोही है अन्तरजामी वोही है स्वामी वोही है दुखभंजन ॥ ब्रह्म वोही और ब्रह्मा विष्णु वोही वोही भव मोचन ॥ वोही हैं अपरम्पार पार नहिं पावे उनका त्रयलोचन । और वोही है षड् दर्शन ॥

तोडा—वोही शेष वोही शक्ती हैं वोही कैलाशी ॥ वो ही इन्द्र हैं नारद मुनि वोही अविनाशी ॥ हो रहे आप पुरुषोत्तम पुरी के वासी ॥ वो महिमा उनकी खाशी । मगन रहते हैं जहाँ सब प्राणी । जगन्नाथ जग तारण कारण बोध रूप भये निर्वानी ॥ १ ॥ रत्नसिंहासन पर धर आसन विराजते दोनों भाई । जगन्नाथ बलभद्र बीच में खड़ी सुभद्रा जग माई ॥ शंख चक्र और गदा पद्म की शोभा नहिं वरणी जाई । मस्तक पर झलकत हीरा सूरज से ज्योति है सवाई ॥ साँची जहाँ प्रभुताई ॥

तोडा—शिर मोर मुकुट और गल फूलों के हारे । केसर चन्दन का तिलक शीश पर धारे ॥ नाना प्रकार के होते हैं शृंगारे । मैं कहाँ तलक कहूं विस्तारे ॥ शेष थक हारे गतनहीं जानी । जगन्नाथ जग तारण कारण बोध रूप भये निर्वानी ॥२॥ श्याम वर्ण है जगन्नाथ की छवि सुन्दर लगती प्यारी । श्वेत वर्ण बलभद्र सुभद्रा के चरणों की बलिहारी ॥ बारह हैं चन्दन की लकड़ी जहाँ खड़े सब हितकारी । हाथ जोड़ दंडवत करें श्री जगन्नाथ को नर नारी । सब खडे हैं वहां पुजारी ॥

तोडा—वो वक्त२ पर पूजा प्रभु की करते । कोई करवावे स्नान कोई जल भरते ॥ कोई चन्दन घिसके हार फूल ला धरते ॥ कोई लेले अपने करते करते पूजा सब मन मानी ॥

नासी। फिर देह धार क्यों हुये श्याम ब्रजवासी। ओ प्रेम प्रीति की डाल गले में फाँसी॥ सब मोहित कीं ब्रजवनिता कर लईं दासी। तुम तो कहते हम बालयती सन्यासी। फिर हमरे सङ्ग क्यों बने हो भोग विलासी। नहीं लगता मन गीता के श्लोकों में। दिल बिंधा०॥ तुम परमेश्वर हो हमसे भोग करो हो। तुम कालके काल औ मृत्यु से नहीं डरो हो॥ जिस वक्त वह मुरली अधरन बीच धरो हो। सब ब्रजवनिता का पल में प्राण हरो हो॥ तुम प्रेम प्रीति रस नीति से हमें वरो हो। अपनी गौं को तुम हमरे पांय परो हो॥ हम तुम्हें छोड़कर जाँय न परलोकों में। दिल बिंधा०॥ वह विश्वकर्मा ने कंचन मन्द्र बनाये। तुम आप नचे औ हमको नाच नचाये। शिव बनके गोपिका रहैस देखने आये। तुमने उनको लिया चीन्ह तो बहुत लजाये। तुम अन्तर्यामी सब घट घट में छाये॥ तुमरी माया का पार न कोई पाये। तुम बिन अपना मन पड़े बड़े शोकों में। दिल बिंधा०॥ हम सब ब्रजवनिता गो लोक ते आईं। सब हैं वेदों की श्रुति वेद ने गाईं॥ तुम आदि अन्त से कृष्ण हमारे साँईं। हैं धन्य हमारे भाग्य जो कंठ लगाईं॥ कहे देवीसिंह और काशी गिरि गोसांईं। हम बार बार २ श्री कृष्ण तेरे बलिजाईं॥ कोई ऐसा हुआ अवतार न त्रैलोक्यों में। दिल बिंधा कृष्ण तेरी बाली की नोकों में॥

## बहर खड़ी-ख्याल श्रीजगन्नाथ जीकी स्तुति में जो पढ़ेगा सो घर बैठे दर्शन पावेगा।

महोदधी सागर के किनारे पुरी वेदों ने बखानी। जगन्नाथ जग तारण कारण बोध रूप भये निर्वानी॥ ओंकार

दोहा-शील सोई है शीतला कर हित चित से पूजा। विश्व रूप हैं विश्वेश्वर, और कोई नहिं दूजा ॥ है कृपा सोई कैलासी। यामें बोलत शिव अवनासी ॥ तुम वृद्धि विनायक जावो। तन मन से ध्यान लगावो ॥ सुमति सामग्री लावो। चित चन्दन चरच चढ़ावो ॥

तोड़ा-इस मुख में हैं वेद सोई है ब्रह्मा की बनी। पांच इंद्री पांच कोश में बसी अवादानी ॥ पच्चीस तत्व का पंच काशी में फिरते नर ज्ञानी। दशों द्वार की सैर करैं हैं पूरे सैलानी ॥

दोहा-हाथ पाँव त्रैकोन हैं, त्रयगुण हैं त्रयशूल ॥ सुमिरण की शक्ति बड़ी, जिन सृष्टि रची मखमूल। संतोष सोई सन्यासी। यामें बोले शिव अविनाशी ॥ इस तन में बोध भया है। कोई ज्ञानी पुरुष गया है ॥ जिसे ब्रह्म का ज्ञान भया है। वो निशि दिन नित्य नया है ॥

तोड़ा-तैंतिस कोटि दई देवते तन काशी में रहैं। सन्त बड़े गुणवंत अन्त जो मन काशी का लहैं ॥ सुनो इधर धर ध्यान छन्द ये देवीसिंह जी कहैं। राम नाम का सुमिरण कर चरण प्रभु के गहैं ॥

दोहा-कहां लों मैं वर्णन करूँ तनमें हैं त्रयलोक। बनारसी बैठा इसमें पढे गीता के श्लोक ॥ लगी हरी के भजन की गासी ॥ यामें बोलत शिव अविनासी ॥

## सखियाँ श्रीकृष्ण से अपने मनकी कामना करती हैं

### * बहेर छोटी *

मन झोंके खा रहा झुमकों की झोकों में। दिल बिंधा कृष्ण तेरी बाली की नोकों में। तुम पारब्रह्म हो निराकार अवि-

रथ को कोई विरला शीश कटाये । मत कोई० ॥ दुनियाँ में देना मर्दों का साखा है । देकर प्राणी ने अन्त प्रेम चाखा है ॥ है बुरा माँगना वेदों ने भाषा है । मैं मांगूं हरसे मेरी यह अभिलाषा है ॥ तू मांग देखकर बिना भाग नहीं पाये । मत कोई० ॥ मेरी अर्ज सुनों तुम श्रीकृष्ण शुभरास । मत भेजो मांगने मुझे किसी के पास ॥ अपने घर से मेरी पूरी कर दे आस । यह कहे देवीसिंह मैं हूँ तेरा दास ॥ सालग की मीठी बानी सभी मन भाये । मत कोई० ॥

## शरीर में काशी आदि लेके सब तीर्थ है ।

### बहेर बराबर की—राग सोरठा ।

ये कंचन काया काशी । यामें बोलत शिव अविनाशी ॥ जहां ज्ञान गंगा की धारा । जाको अन्त न वारा पारा ॥ यामें गोविंद गुरू हमारा । धर मन में ध्यान विचारा ॥

तोड़ा--नाम नांव तेरें गंगा में केवट कृष्णमुरार । दंडडांड खेवैं नौका पर होजाय बेड़ा पार ॥ मन तो है सुने मरण कर्णिका मनमें करो विचार । इस तनु में हैं तारकेश्वर तारो होय उद्धार ॥

दोहा--जस जल साईं घाटपर, शिवका जगै मशान । आनंद की अग्नि बलै, हैं ज्योति रूप भगवान ॥ सुन मंत्र मुक्त होय खासी । यामें बोलत शिव अविनाशी ॥ है पूजा प्रयाग अक्षत वट । कर पुण्य पाप जावैं कट ॥ तू सुनती संकटा को रट । कटे जन्म मरण के संकट ॥

तोड़ा--इस तन में है भाव सोई भैरव का थाना । दया सोई है दुर्गा मैंने मन में पहिचाना ॥ अगम निगम है अन्नपूरणा सब जगने जाना । धर्म सोई धर्मेश्वर उनका सदा भजन गाना ॥

का । एक दम में निकल जायगा० ॥ एक दम में दम आदम का निकल जावेगा । फिर पीछे हाथ मलमल के पछतावेगा ॥ जब श्रीकृष्ण की शरणागत आवेगा । तो जीवन मुक्ति इस जग में पावेगा ॥ कहे देवीसिंह जो हरके गुण गावेगा । वो प्राणी जग बन्धन से छूट जावेगा ॥ कुछ क्याम जग में नहीं सुनो इस दमका । एक दम में निकल जावेगा० ॥

## जगत्में सबसे बुरा माँगना है समझके मांगे तो भला—बहेर छोटी।

इस जगमें जब लग अपनी पार बसावे । मत कोई किसी के द्वार मांगने जावे ॥ इस जग में मांगना बड़ी पापकी पोटे । मांगन गये बलि के द्वार राम भये छोटे ॥ सुना और मांगना दुबले होगये मोटे । मांगन की बराबर और कर्म नहीं खोटे । इस नर को मांगना जो चाहे कहलाये ॥ मत कोई० । मरना बेहतर यह बात भूल नहिं कीजे ॥ सब जाय बड़प्पन बोझ बकर सुन लीजे । जप, योग तपस्या पुनि उस दम सब छीजे ॥ जब नरने मुख से कहा हमें कुछ दीजे । है पूरा मौत का वक्त आँख शरमाये ॥ मत कोई० ॥ जब गर्जिबंद ने अपनी शर्म गवाँई । काला मुंह करके गया मांगने भाई ॥ जो होते उसके उसने राह बताई । उसकी तो होती इस जगमें रुसवाई ॥ फिटमारा होके चला मन में पछताये । मत कोई० ॥ जब वक्त पड़े तो जांये मांगने सूरे ॥ हो जांय निवारे बड़े दिल के मगरूरे ॥ जो हैंगे आशना धनी बात के पूरे । अपने से ज्यादा समझैं उसकी जरूरें ॥ पर स्वा-

तप कलियुगका है बड़ा यह राज कमाया । किया ऐसा अदल जुलमी नहीं रहने पाया ॥ वोः तुर्त मिटा है जिसने जिसे सताया । मनशा फलती है जबते कलियुग आया ॥ है श्रीकृष्ण का देवीसिंह पर साया । कह कलियुग नहीं करजुग का ख्याल है गाया ॥ इन नुकतों को क्या वे अक्कल पावेगा ॥ कल पावेगा वोः क्यों० ॥

## हरघड़ी परमेश्वरको भजनाइसीमें भला है-बहेरखोटी

दम पर दम हर भज नहीं भरोसा दमका । एक दम में निकल जावेगा दम आदम का ॥ है जब तक दम में दम भज हर हर तू । दम आवै ना आवै इसकी आस मत कर तू ॥ एक नाम प्रभू का जप हिरदे में धर तू । नर इसी नाम से तरजाभवसागर तू ॥ बल करता थोड़े जीने के खातर तू । वोः है साहब जल्लाद जरा तो डर तू ॥ वहाँ अदल बड़ा है हिसाब हो दम दमका ॥ एक दममें निकल जायगा०॥ जीनेका फल यह राम नाम जपना है । जब घेरे काल तो फिर कहाँ छिपना है ॥ इस नर को एक दिन आतिश में तपना है । दम जाय निकल तन मिट्टी में खपना है ॥ एक दमका बसेरा दुनियाँ रैन सपना है । टुक देखो आँखें खोल कौन अपना है ॥ सब झूठी माया मोह कुटुम्ब हम दमका । एक दममें निकल जायगा०॥ जो आया जगमें अमर नहीं रहने का । नरबदा घागरा अटक नहीं बहने का ॥ कर लाख जतन तू माया के गहने का । दर मिले वही जो है तेरे लहने का ॥ हर वक्त कभी नहीं जमका दण्ड सहने का । कर नेकी कोई बुरा नहीं कहने का ॥ इस जगमें नाता है गा बोलते दम

क्यों कर कल पावेगा ॥ नरदेही पाकर ध्यान साँई का धरना ॥ दो दिनका जीना देख अन्त में मरना । तज बुरे काम भव-सागर पार उतरना ॥ दुःख देगा तुझको भी होगा दुःख भरना । नेकों को मजा नेकी का नेकी करना । मत करे बदी की बात खुदी से डरना ॥ करनी का फल संसार सकल पावेगा । कल पावेगा वोः०॥

जो कुआं किसी की खातिर खोदे भाई । हो उसके लिये तैयार फलक से खाई॥गुल न कर पराया चिराग अरे सौदाई । रही उसकी रोशनी जिसने उधर लौ लगाई ॥ करे साधु संतकी टहेल तो मिले भलाई । की जिसने खिदमत उसने अजमत पाई ॥ जो सेवा करेगा मेवा तू कल पावेगा । कल पावेगा वोः क्यों० ॥

क्यों गफलत में रहे भूल उसे पहिचानो । मत बुरा किसी का करना दिलमें ठानो ॥ मैं कहूँ बात नसीहत की भौंहें क्यों तानो । अब करो भला आगे खाक मत छाँनो ॥ यह कलियुग नहीं इसको कर युग कर जानो । यहाँ मिले हाथका हाथ सत्यकर मानो ॥ जो आज करेगा वैसा कल पावेगा । कल पावेगा वोः क्यों० ॥

जो करै किसी को मुश्किल को आसान । उनकी मुश्किल आसान करैं भगवान ॥ नुकसान पराया करके करैं गुमानं । उनका नहीं रहता जग में नाम निशान ॥ जो मिला चाहो साहब से छोड अभिमान । पांचों इन्द्री वश करके लगावो ध्यान ॥ उस मारग की जब तू अटक पावेगा । कल पावेगा वोः क्यों० ॥

दिल कस्ता है ॥ उन मस्तों का० ॥

## जो खुदा का आशिक हो और उस पर खुदा भी आशिक हो तो बंदा खुदा एक है-बहेर छोटी।

आशिक पर आशिक जब वो सनम होता है ॥ दोनों का रुतबा एक रकम होता है ॥ वोः नूर है तो आशिक भी जलवेगर है। वोः दीद है तो दिल अपना उसकी नजर है ॥ लामकां है वोः तो मेरा कहीं न घर है ॥ वोः दिल है तो ये दिल उसका दिलवर है। जिस वक्त कयामत में घोः बहम होता है। दोनों का रुतबा० ॥ वो गुलशन है तो आशिक उसका गुल है ॥ वोःहरजा है तो आशिक भी बिलकुल है। वोः सुरूर है तो आशिक बहदत की मुल है ॥ वोः धूम है तो आशिक भी शोरो गुल है ॥ जिस वक्त यह दम उसको हम दम होता है ॥ दोनों का रुतबा० ॥ वोः जहां है तो आशिक भी जहाँ तहां है। वोः कलमा है तो आशिक भी कुरआं है ॥ जहाँ ज़िक है आशिक का भी वहीं बयां है ॥ वोः निहां है तो आशिक हरजां पिनहाँ है ॥ आशिक का दम जब उसमें दम होता है। दोनों का रुतबा० ॥ वोः बे ख्वाहिश है तो आशिक बे परवा है ॥ वोः मिला है तो कुछ आशिक नहीं जुदा है ॥ वोःदुई नहीं तो आशिक भी यकता है ॥ ये देवीसिंह का सखुन बड़ा सच्चा है ॥ कहे बनारसी जब उसका करम होता है ॥ दोनों का रुतबा० ॥

## कलियुग की स्तुति जो जैसा करै वह वैसा पावे।

### बहेर छोटी

इस कलियुग में कल देगा कल पावेगा। कल पावेगा वोः

खुदा है तुमसे तिस पर भी तुम वाकिफ नहीं दो जहाँ के हो ॥ मिलो जो उससे तो फिर तुम मालिक कौनो मकां के हो ॥ ऐसी करनी मत करना जो यहाँ के हो ना वहाँ के हो ॥ देवीसिंह का कहा मानो तो नामो शिशां के हो । जबाव इसका दो जो लडने वाले उस मैदां के हो । बस्ती के और किस गाँव के कौन मकां के हो ॥

## जिसके दिल पर हर वक्त खुदा को याद रहती है उसका रास्ता दुनियाँ से अलग है-बहेर-छोटी।

जिसके दिल पर दिलवर का नाम बस्ता है। उन मस्तों का देखा उलटा रस्ता है॥ सर्दी में आशक पीते हैं सरदाई। गर्मी में शंखिया खांय रहे गर्माई ॥ बारिश में सूखे धूप में हो हरियाई । ऐसे मस्तों से सभी बात बनिआई ॥ वो दाग को समझें दिल पर गुलदस्ता । उन मस्तों का देखो उलटा रस्ता है ॥ वो दिन को सोवें सारी रात भर जागें। शूरों से लडें गिद्दी को देखकर भागें ॥ नहिं मिले तो मांगे भीख मिले तो त्यागे ॥ ऐसे शाहों से हरेक बादशाह मांगे । अनमोल है सोदा वो भी उन्हें सस्ता है॥ उन मस्तों का देखो उलटा रस्ता है । मंदिर को तोड़कर मस्जिद को चुनवावें ॥ मस्जिद को तोड के मयखाना बनवावें । खेत को सुखा ऊषर में अन्न उपजावें ॥ आशिक सादिक जो चाहे कर दिखलावें । ऐसे मस्तों को कोई नहीं हँसता है ॥ उन मस्तों का० ॥ जब पेट भरै तब खाने को मँगवाते । और भूख लगे तो कुछ भोजन नहिं खाते । मूरख से सीखें पण्डित को-समझाते । कहे बना-रसी हम नई नई बातें गाते ॥ इस कदर से जो कोई अपना

इस इश्क के मकतब में हम नामे सनम सीखे ॥ सिवा उल्फत के और हम कुछ नहीं अपनी कसम सीखे ॥ देवीसिंह कहें बनारसी तेरी जबां में बड़ी फसाहत है । लुत्फ उसी को हो हांसिल जिसे इश्क की चाहत है ॥

## मैं यह कहता हूँ कि तुम आपको पहचानो तो तुम्हीं सब कुछ हो–बहेर लंगड़ी ।

मैंने ये पूछा के बताओ मियांजी आप कहां के हो । किस बस्ती के और किस गांव के कौन मकां के हो ॥ नाम आपका क्या है कौनसे दीन और किस ईमां के हो ॥ जरा तो बोलो आप दीवाने किस दीवां के हो ॥ हिन्दू हो या मुसल्मीन देहली या तुरकिस्ताँ के हो ॥ पण्डित हो या मौलवी या तुम हाफिज कुराँ के हो ॥ चीन के हो या महाचीन के या ईरा तूरां के हो ॥ किस बस्ती के और किस गाँव के कौन मकां के हो ॥ इस दुनियाँ में आये कहाँ से जमीं के या आसमां के हो ॥ चश्म के घायल या मायल तुम जुल्फे पेचाँ के हो ॥ किस पर दिल है फिदा तुम आशक हूर के या गिलमाँ के हो ॥ सच्च तो कह दो के जख्मी तुम तीरे मिजगां के हो ॥ आपने कुछ नहिं किया बयां तुम जुबां के या बे जुबां के हो ॥ किस बस्ती के और किस गांव के कौन मकां के हो ॥ फिक्र आपको क्या है बयां कुछ करो या तुम बे बयां के हो ॥ किस गुलशन के हो गुल या खार कोई वीराँ के हो । सरसे पैर तक देखा तो तुम अजब सेरा सामाँ के हो ॥ शक्ल भी आदम की हो फरजंद कोई इन्साँ के हो । ये मैं पूछता हूँ तुम से कुछ वाकिफ राजेनिहां के हो ॥ किस बस्ती के और किस गाँव के कौन मकाँ के हो ।

जलाना आशक के हक में यह बड़ी तरावट है। आतसे गमसे अब अपनी आठों पहर लगावट है॥ तन की उरियानी को हम समझे ये खूब सजावट है। इश्क में बिगड़े जो आशक उन्हीं की बनी बनावट है॥

शेर—हुआ जो इश्क में मुफलिस वही जरदार होता है। कटाये सर जो उल्फत में वही सरदार होता है॥ जो दिल को छीन ले दिलबर वही दिलदार होता है। और आँखें बन्द कर देखे उसे दीदार होता है॥ जोराबर है वही इश्क में जो कि हुआ नकाहत है। लुत्फ उसीको हो हांसिल जिसे इश्क की चाहत है॥ कैद जहां से छूटे वही जो दाम मुहब्बत में फँस जाय। निकले दोजख से वोः जो इश्क की आतिश में धंस जाय॥ किसी के वश में कभी न हो गर दिलबर दिल में बस जाय। कर उसी से रसाई कभी न जिस गुल का रस जाय॥

शेर—मुहब्बत में जो दिल दागे वही बेदाग होता है। नफा होता है उसको जोके जर उल्फत में खोता है॥ वोःहँसता है सदा जो उस सनम के गम में रोता है। मिलाये तनको मिट्टी में वोः अपने मनको धोता है॥ मजा इश्क का यही कभी राहत है कभी कराहत है। लुत्फ उसीको हो हांसिल जिसे इश्क की चाहत है॥ गमखाना आशक के हक में न्यामत से बेहतर है। हरयक मकां हैं उसीके जिसका कहीं न घर दर है॥ उसे खौफ नहीं किसी का है जिसको उस दिलवर का डर है। अपने आपको जो पहचाने वह अल्ला अकबर है॥

शेर-पढ़े नहीं इल्म का दफतर आलिफ बे ते न हम सीखे। न तख्ती हाथ से पकड़ी न कुछ छूना कलम सीखे॥ फकत

जमाने को ॥ मिली ऐश इशरत मुझको जबसे अपनी खोई औकात । दीन से जब मैं० ॥ मस्जिद में नाकूस बजाऊँ मँदिर में देता हूँ अजाँ । बुतखाने में करूँ सिजदा तो हो दंडवत वहाँ ॥ जिसकी कुछ सूरत ही नहीं देखी तो वही है नूरे जहाँ । इसके मायने कहूं किससे यह तो है राजे नेहाँ ॥ हुआ मुझे आराम उठाली सरपर जब से कुल आफत । दीन से जब मैं० ॥ सर को अपने बेचके उस आफते इश्क को मोल लिया । सौदाई मैं बना तो वोः सौदा अनमोल लिया ॥ देवीसिंह कहै बनारसी ने भेद इश्क का खोल लिया । यक राइ से कोह दर कोह को बिल्कुल तोल लिया ॥ हुये जमाने से जो जिन्नतों की बाजी शतरंज की मात । दीन से जब मैं ॥

## इश्क जो है सो दुःख का घर है परन्तु इस दुःखमें सुख बड़ा है—बहेर लङ्गड़ी ।

इश्क है खान में रंज पर इस खान ये रंज में राहत है । लुत्फ उसी को हो हांसिल जिसे इश्क की चाहत है ॥ इश्क में जी जाना मैंने समझा है यही जी जाना है । जांना जाना के दर पर जाना बेच कर जाना है । उल्फत में रुसवा होना बस यही आबरू पाना है । नादां को दिल दिया जिसे जिसने वोः आशक के दाना है ॥

शेर—फँसे जो इश्क के फँदे में वो दुनियाँ से कुल छूटे ॥ मजे लूटे उन्होंने जिनके सब घर दर गये लूटे ॥ हमें वोः खार देते हैं जो गुलशन में हैं गुलबूटे ॥ खटकते हैं मेरे दिलपर वोः काँटे लगते जो टूटे ॥ इश्कके बीमारों की रोशन आलम बीच शबायत है ॥ लुत्फ उसीको हो हांसिल जिसे इश्क की चाहत है ॥ जिगर

उससे बातों की फेरमाला ॥ क्या ताबो ताकत०॥ अभी अगचें वोःहँस के बोले तो चुपकें उस गुलके ऐसे दन्दां । जिगर गौहर का छिदे जो देखे औ दांत पीसे लाले बदक्शां ॥ ये सिफत सुनते खून सूखा बिका बेकद्र जहां में जमीं । औ वर्क ऐसी गिरी तड़पकर कि होश उसका हुआ परेशां ॥ बयां क्या करूं दहनका उसके हुआ तङ्ग दिल न बोला चला । क्या ताबो ताकत० ॥ ये फकत चेहरे की यह सिफत है जो अक्ल अपनी में कुछ था आया । बयां वोः मैंने किया जुबां से पर भेद उस का जरा न पाया॥ कोई किताबें बनाके थक गये किसीने सीखा किसीने गाया । हजारों मुल्ला करोड़ों स्याने कोई इमतहां न उसका लाया ॥ फजल उसी का हुआ तो देखा बनारसी ने वो बारी ताला । क्या ताबो ताकत गर उसको देखे वो मेरा दिलबर है सप्पेवाला ॥

## ख्याल उलटा मतलब सीधा मुश्किल-बहेर लंगड़ी

बुतों से मैंने कुरान सीखा काबे में पोथियों की बात । दीन से मैं हुआ बेदीन बना फिर खुदा का जात । जब मुस्से आ पड़ी लड़ाई भाग गये तो जीता जंग ॥ जख्म जिगर के हुये आराम लगे जब तीरो तुफंग । बेहोशी हुई दूर लगा मयपीने मयखोरों के संग ॥ अजब इश्क का रास्ता उलटा और सीधा है ढंग ॥ जोरू खसम मरगये तो शादी हुई खुशी से चढ़ी बरात । दीनसे जब मैं बेदीन हुआ हुआ फिर खुदा की जात ॥ गदा हुआ तो भीख न मांगी लुटाया सबी खजाने को ॥ बादशाह जो बना मुहताज रहा हरदाने को ॥ जहाँ को जिसने तर्क किया तो पाया असल ठकाने को ॥ जीतेजी जो मरा वह जीता सबी

मेरा दिलवर है सप्पे वाला । है नौजवानी में वोः पेशानी और उसका माया मेहर से रोशन । वोः चीने उसकी किरन हैं सुखकी चमक दमक से कमर से रोशन ॥ और वोः सफाई हुस्न खुदाई हरेक जिन और बशर से रोशन । और वोः पसीना गोया नगीना हरेक आबे गोहर से रोशन ॥ सुनी है उसकी सिफत ये जिसने झुकाके माथा जमीं पै डाला । क्या ताबो ताकत गर उसको देखे वो मेरा दिलवर है सप्पेवाला ॥ वो अबरू दोनों झुके हैं उसके गोया कमां यकता है खिंची सी । और तीरे मिजगां चढ़े हैं जिसपर नजर ये किसपर है अब कहेर की ॥ अगर खफा होकर उस सनम ने जरा भी अपनी वोः भौं सिकोड़ी । तो गिर पड़े लाखों सर जमीं पर लगी न यक पल भी उसमें देरी ॥ या हैं वो तेगे दुदम चमकते या खंजरे बुरां है निकला । क्या ताबो ताकत गर उसको देखे वोः मेरा दिलवर है सप्पेवाला ॥ वोः चश्म आहू अगचें देखे तो आंख हरगिज न हो मुकाबिल । औसर झुकाकर खड़ा हो नर्गिस उसी कि आँखों पै होके माइल ॥ वो खूनी नैना और टेढ़ी चितवन पड़े जिधर को तो क्या हो हाँसिल । कोई हो मुर्दा कोई तड़फता कोई सिसिक्ता और कोई बिस्मिल ॥ औ मस्त दोनों पिये हुए मय मेरे नशे में लिये हैं प्याला । क्या ताबो ताकत० ॥ वो वीनी उसकी अलिफ की सूरत जो उसको देखे कहे वोः अल्ला ॥ फड़क वोः नथुनों की इस कदर है कि दिल तड़फता है मेरा बल्ला ॥ लुभाये शीरीं में है वोः लज्जत के ओठ चाटे हरेक शैदा । वो बातें उसकी हैं भोली भाली न ऐसी बोली कहीं हो पैदा ॥ सुने अगरचे जो गोश करके औ

पर मुझमें बड़ी तवाँ है ॥ जहाँ फना है मेरे लेखे वोही जहाँ है। जहाँ खुदा है मस्तों का दिल सदा वहाँ है ॥ जहां खामोशी है वहीं पे शीरो फिगाँ है। जहाँ सर्द है नारा वहीं आतिश सोजाँ है। जहाँ हिज्र है उल्फत का भी वहीं सामा है ॥ जहाँ लहर बहर है वहीं बड़ा तूफाँ है। क्या कहूं मैं कहती मेरी यही जुबाँ है ॥ जहाँ खुदा है मस्तों का दिल सदा वहाँ है। हूं लिबास पहने पर यह तने उरियाँ है। बस्ती को समझता हूं मैं ये वीरां है ॥ जहाँ मुसल्मीन हैं वहीं पे हिन्दुस्तां है ॥ मस्जिद में मेरे उस बुत का बना निशां है। आशिक की आह है यही तो एक अजां है ॥ जहाँ खुदा है मस्तों दिल सदा वहां है ॥ जिन्दा है वही जो जान से भी हैजां है। करता है सैर वोः इश्क जो हैरा है ॥ नादान को भी कहता हूं मैं वो इंसां है ॥ येः अक्ल है मेरी और यह फहम कहाँ है। कहै बनारसी हर मिसरा मेरी कुरां है। जहाँ खुदा है मस्तों का दिल सदा वहाँ है ॥

## सिफत खुदा के फक्र चेहरे की बहर शिकस्ता।

वोः नूर रोशन कमर से बेहतर तबक तबक पर खिला उजाला। क्या तावो ताकत गर उस्को देखे वोः मेरा दिलवर है सब्ज़वाला ॥ वो जुल्फ उसकी अगर्चे देखे तो पेंच खाये चमन से सम्बुल। हरेक बल में उसके छल बल वोः दामे उल्फत है उसकी काकुल ॥ वो गेसू उसके तो मुश्के चीं हैं गोया गुलिस्तां में सोसाने गुल। या हैं वोः अबरे सिया फलक पर या हैं आयते कुरान बिल्कुल ॥ फँसा है उसमें यह तायरे दिल अजीब फंदा है मुझपै डाला। क्या तावो ताकत गर उसको देखे वो

कोहनूर हैं हम ॥ कहीं पै किसी के पास रहे और कहीं किसी से दूर हैं हम ॥ कहीं मलायक कहीं परिस्तान और हूर हैं हम ॥

शैर-कहीं तन पर रमाये खाक हम बन बनमें फिरते हैं ॥ कहीं सुमरण हैं हम और हम कहीं सुमरण में फिरते हैं ॥ तुम अपने दिलमें मुझको गौर कर देखो तो मैं क्या हूं ॥ हमीं दम हैं हमीं हम दम हमीं हर मनमें फिरते हैं ॥ कहीं बने बेशानी कहीं उस रुख पर काकुल हमीं तो हैं ॥ कहीं पै गुल हैं कहीं पर आशिके बुलबुल हमीं तो हैं ॥ कहीं बादशाह बने कहीं पर आकर हुए फकीर हैं हम ॥ मुराद भी हैं किसी जा और कहीं पीर हैं हम । कहीं निशाना बने कहीं पर कमां कमां के तीर हैं हम ॥ कहीं शमा हैं कहीं पर परवाना गुलगीर हैं हम ॥

शैर-जिधर देखो उधर हमको हमीं हर जा पै रहते हैं । कहीं दरिया हैं हम औ हम कहीं दरिया में बहते हैं ॥ तबक चौदा के ऊपर यक मकां है लामकां अपना । वहीं कायम हैं और हम यह सखुन इस जांपै कहते हैं ॥ बनारसी कहे मुझे अगर देखो तुम बिल्कुल हमीं तो हैं । कहीं पै गुल हैं कहीं पर आशके बुलबुल हमीं तो हैं ॥

## जो सच्चा आशिक है उसका मकां लामकां है ।

### ❀ बहेर छोटी ❀

लामकां आशकों का नहीं कहीं मकां है । जहाँ खुदा है मस्तों का दिल सदा वहां है ॥ मालूम है मुझको जोके चीज निहाँ है । वाकिफ हूँ और कहता हूँ वोः यार कहाँ है ॥ हूँ जईफ पर दिल मेरा बड़ा जवाँ है । ना ताकत हूँ

# मुझेकुलजहान मेंअपनेसिवाऔरनहीं दिखाई देता है

बहेर लंगडी ।

कहो किसे मैं देखूं देखा आलम में कुल हमीं तो हैं। कहीं पै गुल है कहीं पर आशिके बुलबुल हमीं तो हैं ॥ कहीं अनलहक बने कहीं मंसूर कहीं परदार हैं हम । कहीं पै सरमद कहीं सरलेने को तलवार हैं हम ॥ कहीं शम्स तबरेज कहीं खुशींद उसी के यार हैं हम । कहीं एक हैं पर देखो बिना शुमार हैं हम ॥

शेर-कहीं लैला बने हम और कहीं मजनूं की सूरत हैं। कहीं फरहाद बन बैठे कहीं शीरीं की मूरत है ॥ कहीं मस्जिद कहीं मन्दिर कहीं काबा कहीं किबला हैं। कहीं हम हैं नजूमी और कहीं ज्योतिष मुहूरत हैं ॥ कहीं बने खामोश किसी जांपर शोरो गुल हमीं तो हैं । कहीं पै गुल हैं कहीं पर आशिक बुलबुल हमीं तो हैं॥ किसी जगहपर शयर कहीं बेशयर में बोले हमीं तो हैं ॥ कहीं पै स्याने कहीं पर भोले भाले हमीं तो हैं ॥ कहीं पै आतिश आब कहीं पर पड़े फफोले हमीं तो हैं ॥ कही पै रत्ती कहीं पर माशे तोले हमीं तो हैं ॥

शेर-कहीं हम हैं अख्तर कहीं पर अब नैसां हैं । कहीं हिन्दू हो बुत पूजें कहीं पर मुसल्मा हैं ॥ गरज जितने ही दीन हैं कुल जहाँ में अपने ही समझो । मकां हैं लामकां हैं हम तो जांकर भी और पिनहाँ हैं ॥ कहीं बने मयखोर किसी जांपर साकी मुल हमीं तो हैं ॥ कहीं पै गुल कहीं पर आशिके बुलबुल हमीं तो हैं ॥ कहीं पै बन्दे बने कहीं पर खुदा खुदा का नूर हैं हम ॥ कहीं पै मूसा कहीं पर जलवा और कहीं

में । मये मुहब्बत पिला दे साकी उल्फत के पैमाने में ॥ यक-ताईका आलम हो और बेहदत का हो रंग भरा । बुभ गुल की हो खशबू जिस्में वोः शराब तू पिला जरा ॥ गम की होवे मिजा साथ में वह खासा हो पास धरा । और माफत का हो मीना करामात का काम करा ॥ आफताब की होवे रोशनी मेरे दिल दीवाने में । मये मोहब्बत पिलादे साकी उल्फत के पैमाने में ॥ मस्ती का हो सुरूर हरदम बादे सबाभी चलती हो । और गुलाबी मौसम हो हर गुल से महेक निकलती हो ॥ बजे बीन और बाब वो काफूरी शमां भी बलती हो । जिस महफिल को देखके हर मोहतसि सबकी छाती जलती हो ॥ भड़क उठे शोलये नूर पहेलू में मेरे शाने में । मये मुहब्बत पिलादे पाकी उलफत के पैमाने में ॥ पास हमारे दिलबर हो फिर औ.र सदा ये कुलकुल हो ॥ जोशे दिल में हो कहकहा भी हो शोरो गुल हो ॥ शीशा सागर सुराही हो और गुलिस्तान गुंचे गुल हो । हाथ में हो दिलबर का हाथ हर बात में वो जिकरे मुल हो ॥ कबाब की लज्जत हुई हासिल अपना जिगर जलाने में । मये मोहब्बत पिला दे साकी उल्फत के पैमाने में ॥ दीदार तेरा दारू शफा है जिसे मिला वोः मस्त हुआ । बद-मस्ती में बैठे बैठे कर बनारसी अलमस्त हुआ ॥ चाँदसा चेहरा देखते ही तेरा वोः सूरज अस्त हुआ ॥ दस्तगीर वोः हुआ कि जिसका तेरे दस्त में दस्त हुआ । कहा ख्याल तौहीद मजा है इश्क मार्फत गाने में । मये मोहब्बत पिला दे साकी उल्फत के पैमाने में ॥

मुफ्त मरीज को तो फिर यकदम जीने की आस न हो ॥ दर्द हमारा दिल्बर है हर वक्त इसी से यारी है । बे दर्दों से भी अपनी कुछ नहीं गिल्हे गुजारी है ॥ सूली पर मंसूर ने वो अनलहक सदा पुकारी है । जान गई तो बला से नाम तो उसका जारी है।

शैर--इश्कबाजी में अगर जान की बाजी होजाय ।
तो तबियत यह मेरी खूब सी राजी हो जाय ॥
चाह हमपर हो जफा या दगाबाजी होजाय ।
रजा में राजी हैं उसके जो वह राजी होजाय ॥

बनारसी कह अगचें मेरा मुरशद देवीदास न हो । मुफ्त मरीज को तो फिर यकदम जीने की आस न हो ॥ कहा ये मुझ से रंज ने गर्चे आशक मेरे पास न हो । तो दुनियाँ में आशकी आशक की फिर रास न हो ॥ इश्क है मेरा मकां औ मैं रहता हूं उसी के खाने में । वह नहीं आशक कि जिसके दर्द न होवे शाने में ॥ तार में क्या है लुत्फ मजा मिलजाय जो रहो निशाने में । बस्ती में नहीं गुजर आशक हैं मस्त बीराने में ॥ सूख गया मजनूं औ वह ताकत बनी रही मस्ताने में । अबतक जिसका नाम रोशन है सुनो जमाने में ॥

शैर--है कहाँ तकलीफ व तलुवों में जो चुभते हैं खार ।
हँस पड़ा मंसूर तो शरमा गई उस जांपै दार ॥
रंज ये कहता है आशक वह करै जो जां निसार ।
हर कदम पर तीर हो पर दिलमें हो वह जिक्रेयार ॥

## अपने जिस्म का मयेखाना मय तौहीद वह सभै पिलाता है--वहर घड़ी

आतिश इश्क की भड़क रही है इस दिल के मयखाने

शैर–फुरक्ते यार वह क्या क्या मजे दिखाती है।
बेकरारी ही मेरे दिल को बहुत भाती है॥
वस्ल होता है जो वो बात चली जाती है।
इन्तजारी से यह तबिअत नहीं घबराती है॥

रंगजर्द नहीं हो अपना औ चेहरा मेर उदास न हो। मुझ मरीज को फिर यकदम् जीने की आस न हो॥ जो आशिक सादिक हैं उसकी जीस्तजान को खोना है। यही खुशी है जो उस दिलवर की याद में रोना है खाक के सोने से बत्तर पन्ना औ चाँदी सोना है। वजू से बहतर हमें अश्कोंसे मुंह का धोना है॥

शैर–टपक के आँसू जो रुखसार पर ढलकते हैं।
तो मेरी आँख में जौहर हर एक चमकते हैं॥
ये मस्त दोनों है और दो जहाँ को तकते हैं।
दीहोनाछींद के हैं अब ये कब झपकते हैं॥

जोर जुल्म और जफा में अपना दुरुस्त होश हवास न हो। मुझ मरीज को तो फिर यकदम जीने की आस न हो। प्यास हमारी बुझती है इस खून जिगर के पीने से। वाकिफ हुआ हूं मैं अपनी चाह के जरा करीने से॥ काम नहीं काशी से मुझे नहीं मक्के और मदीने से। और न आरजू हमें करने की न मतलब जीने से॥

शैर–आतिशे इश्क से जलके जिगर तर होता है।
जैसे ये से शबनम के ये जवर होता है॥
औ बेखबरी से दिल हर्गिज न खबर होता है।
नफा है इश्क से येही जो जरर होता है॥

गर्चे कत्ल नहीं होवें हमतो काम इश्क का रास न हो।

भरदे ॥ करूँ घूम कुल आलम में वोः शोर ये आफाकी भरदे । मै खाने में जो कुछ अब रहा है वह बाकी भरदे ॥ रंगूं मैं अपना दिल मय से तू इसीकी रङ्गीनी भरदे । तल्ख भी भरदे तुर्श और तोफा शीरीनी भरदे ॥ लगाके दस्तरखान तू उसमें गिजा वोः मनकीनी भरदे । शोक हो दिलमें तेरे तू इसीकी शौकीनी भरदे ॥

शैर—मैं तुमसे कुछ नहीं मांगूं शराब तू भरदे । मिलाके उस्में वोः थोड़ा गुलाब तू भरदे ॥ आब जिस आब में होवे वोः आब तू भरदे । झलक हो दिल में मेरे आफताब तू भरदे ॥ बनी रहे लाली दुनियाँ में अपनी असफाकी भरदे । मैखाने में जो कुछ अब रहा है वो बाकी भरदे ॥ पास न आये गैर मेरी महफिल तू रिंदानी भरदें । मस्त रहूँ मैं सोहबते यारब मस्तानी भरदे ॥ बनारसी की जुबां में बातें हक्क तू हक्कानी भरदे । चश्म में उसकी नूर तू अपना नूरानी भरदे ॥

शैर—मय बहेदत जो तेरे पास है मुझको भरदे । जो मांगूं एक मैं प्याला तो मुझे दो भरदे ॥ फिर तीसरा जो मैं मांगूं तो खुशी हो भरदे । न देना तुझे गैर को प्यार ये मुझे तो भरदे ॥ जो कुछ मेरा निकले वो आज तू सबका बेवाकी भरदे ॥ मैखाने में० ॥

## ख्याल तौहीद मय का आफताब मुझे पिलाता है-बहेर खड़ी।

जिधर को देखूं उधर रोशनी आफताब कर दमाम है । पिऊँ न मय मैं क्योंकर जिन्दा रहूं मेरा यह कलाम है ॥ चश्म नहीं हैं हमें खुदा ने आप गुलाबी जाम दिये । मये

दीद के प्याले भर भर मुझे बरसरे आम दिये ॥ चली वह वादे सबा इस कदर हाथ हमारे थाम दिये ॥ तौभी परी पैकर न मेरे मुंह लगा वो आठों याम दिये ॥ कहे जो इसको हराम उसका खाना पीना हराम है । पिऊं न मय मैं०॥ एक तरफ आशिक भड़के और एक तरफ बारिस आब है । मेरे दिल के मय खाने में दोनों तरह का हिसाब है ॥ जिगर में शोला उठे और चश्मों से टपके शराब है । जुबां यही कहती है मेरी लज्जत उसकी लाजबाब है ॥ कुल जहान में सुना हो तुमने मस्ताना मेरा नाम है । पिऊं न मय मैं० ॥ दिल में गौर कर देखा तो फिर दौर हमारा आया है । आज हमें साकी ने दुबारा सागर आप पिलाया है॥ देख मेरी बदमस्ती को मोहतसि बन यह फर्माया है । यह जोशे बहशत कहाँ से तेरी नजरों बीच समाया है ॥ कहा ये मैंने आँख हमारी मय बहेदत का गुदाम है । पिऊं न मय मैं० ॥ सुना सखुन मोहत सिबने यह सब उसके दिल में होश हुआ । वो तो मने करता था मुझे या आपी वोः मयनोश हुआ चढ़ा नशा जब इश्क का उसको जहाँ से वोः बेहोश हुआ । कहा पिऊँगा मैं हरदम इतना कहकर खामोश हुआ ॥ बनारसी कहे हमें तो इस दारू का पीना मुदाम है । पिऊं न मय मैं० ॥

मैं आशक हूं रंजोअलम का गर ये मेरे पास न हो । मुझ मरीज को तो फिर यकदम् जीने की आस न हो । बेचैनी से उल्फत है बेकली से यारना अपना । हिज्र है अपना दोस्त औ वतन् है बीराना अपना । आह की नकदी पासमें है खाना है-गम खाना अपना । जीना यही है किसीके ऊपर जीजाना अपना

शैर–फ़ुरक्ते यार वह क्या क्या मजे दिखाती है।
बेकरारी ही मेरे दिल को बहुत भाती है॥
वस्ल होता है जो वो बात चली जाती है।
इन्तजारी से यह तबिअत नहीं घबराती है॥

रंगजर्द नहीं हो अपना औ चेहरा मेर उदास न हो। मुझ मरीज को फिर यकदम् जीने की आस न हो॥ जो आशक सादिक हैं उसकी जीस्तजान को खोना है। यही खुशी है जो उस दिलवर की याद में रोना है खाक के सोने से बत्तर पन्ना औ चाँदी सोना है। वजू से बहतर हमें अश्कों से मुंह का धोना है॥

शैर–टपक के आँसू जो रुखसार पर ढलकते हैं।
तो मेरी आँख में जौहर हर एक चमकते हैं॥
ये मस्त दोनों है और दो जहाँ को तकते हैं।
दीहोनाछीद के हैं अब ये कब झपकते हैं॥

जोर जुल्म और जफा में अपना दुरुस्त होश हवास न हो। मुझ मरीज को तो फिर यकदम जीने की आस न हो। प्यास हमारी बुझती है इस खून जिगर के पीने से। वाकिफ हुआ हूं मैं अपनी चाह के जरा करीने से॥ काम नहीं काशी से मुझे नहीं मक्के और मदीने से। और न आरजू हमें करने की न मतलब जीने से॥

शैर–आतिशे इश्क से जलके जिगर तर होता है।
जेरसाये से शवनम के ये जबर होता है॥
औ बेखबरी से दिल हर्गिज न खबर होता है।
नफा है इश्क से यही जो जरर होता है॥

गर्चे कत्ल नहीं होवें हमतो काम इश्क का रास न हो

# ख्याल मय वहेदतका जो बलियों ने पी है।

## बहेर छोटी।

बिन पिये जहां के बीच जिऊं मैं कैसे। भरदे प्याला लबरेज साकिया मै से॥ मैं वहेदत का मुश्ताक हूं यक मुद्दत से। वाकिफ हूँ मैं कुछ मस्तानों की आदत से॥ जिस वक्त नशा शरसार हुआ शिद्दत से। बेहोश हुआ इस दुनियाँ की विहत से॥ हर वक्त जबां से कहा करूँ मैं ऐसे। भरदे प्याला लबरेज साकिया मैसे॥ शौलये नूर दिल में मेरे भवके है। इशरत की मय हरदम उसमें टपके है॥ लौ लगी है और दिल उस लौ में लपके है॥ इस नशे से अब कब आंख मेरी झपके है। आती है यही आवाज हर जगह मैसे। भरदे प्याला लबरेज साकिया मैसे॥ मालूम हुआ मैं मौत किये दारू है। हर गलों की रूह है खिचीये वोः गुलरू है॥ रिन्दानों महफिल में यही महरू है। और इससे बहतर नहीं कोई खुशबू है॥ तू पिलादे मुझको यार बन पड़े जैसे। भरदे प्याला लबरेज साकिया मैसे॥ यक रोज सामने मेरे मुहतसिब आये। बोले मय पीना कौन तुझे सिखलाये॥ और देख कराबो मैके वोः घबराये। बोला मैं येः क्या खुदा ने नहीं बनाये॥ फिर कहने लगे मुहतसिब भी मुझसे ऐसे। भरदे प्याला लबरेज साकिया मैसे॥ बीनो रबाब मिरदङ्ग की तैयारी हो। मीने में मीनेकी मीनाकारी हो॥ गुल पास में बैठे हों और गुलजारी हो। कहे बनारसी उस वक्त वोः मै जारी हो॥ हर वक्त राग फिर वजा करै इस लैसे। भरदे प्याला लबरेज साकिया मैसे॥

---

## ख्याल शराब अलहूरा जो हम पीते हैं बहेर-छोटी।

मै वोह है इसे क्या पियेंगे ऐसे वैसे। वो पियेंगे जो मै होके मिले हैं मैसे ॥ मिल गया जब उसके रंग में रङ्ग गुलाबी। आगया नशा वहदतका मुझे शिताबी ॥ है जिगर यह मेरा जला औ भुना कबाबी। हुई दिल को सेरी गई वो सब बेताबी ॥ क्या जाने शेख मस्ती के हैं प्याले कैसे। वो पियेंगे जो मै होके मिले हैं मैसे ॥ यह सफेद भी और सुर्ख जाफरानी है। हो रुखपे आब पीने से ये वो पानी है ॥ मज-हब इसको रिन्दाना लासानी है। टपके है नूर चहरे पै वो पेशानी है ॥ जो बेताले हैं वाकिफ नहीं इस लैसे। वो-पियेंगे जो मै होके मिले हैं मैसे ॥ यह फकीर इसकी लौ सबसे दूनी है ॥ मै खाने में जगती जिसकी धूनी है। लड़नेमें शूरमां है और ये खूनी है ॥ है बगैर रसके जो बस्ती सूनी है। यही सदा कन्हैया ने भी बजाई मैसे। वो पियेंगे जो मै होके मिले हैं मैसे ॥ दारुये शफा है इसी से हम पीते हैं ॥ पीते हैं बहुत पर ऐसी कम पीते हैं। रम रहे हैं उसमें हम-वोः रस पीते हैं ॥ और देवीसिंह भी दमपर दम पीते हैं ॥ गाये बनारसी इसीकी ध्वनि में लैसे। वो पियेंगे जो मै होके मिलेहैं मैसे

## ख्याल शराबकेपीनेमें जो लुत्फ है वोः मुझे मिला। बहेर छोटी।

वो मजा मिला मुझको इस मै नोशी में। छुट गई ये दुनियां आपसे बेहोशी में ॥ मैंने कुछ इरादा किया न मै पीने का। वोः काम जो देखा मीने में मीने का ॥ था नक्शा उसमें खिंचा सदा जीने का। औ रङ्ग भी उसमें भरा था रङ्गी

नेका ॥ पीते ही जबाँ आई खुद खामोशी में । छुट गई ये दुनियां आपसे बेहोशी में ॥ लेते ही जामा अंजाम वो उसका पाया । गफलत ने होशियारी का मजा दिखाया जिस वक्त नशा वो मेरी आंख में आया ॥ बन्दे से खुदाने मुझको खुदा बनाया । आगया जामाना मुझे फरामोशी में ॥ छुट गई ये दुनियाँ आप से बेहोशी में ॥ मोसम तो गुलाबी से न कोई आला है । दिल इसी इश्क में मेरा मतवाला है ॥ चश्मों ने रंग अब लाली पर डाला है ॥ जामें जम से बढ़कर मैका प्याला है ॥ ये सखुन जुबां से कहा गर्म जोशी में । छुटगई ये दुनियाँ आपसे बेहोशी में ॥ आवे हैवाँ में कहाँ भला यह आव है । दो जहां में आला सबसे बनी शराब है ॥ वेद औ पुरान कुरान का यही जवाब है । आजाब न इसको कहो ये बड़ा सबाब है ॥ पी बनारसीने सनमकी आगोशी में । छुटगई ये दुनियाँ आपसे बेहोशी में ॥

## ख्याल खुदा के दीदार की शराब मैं पीता हूँ ।

### बहेर छोटी

साकिया पिला सागरे दीद उस मुलका । वहदत हो जिसमें भरा वस्ल तुम्भ गुलका । अब मये मुहब्बत आकर मुझे पिलादे ॥ और जाम तू अपने दीद का मुझे दिलादे ॥ दिलसे दिल अपने जिगर से जिगर मिलादे । दीदार की दारू से तू मुझे जिलादे ॥ गुलहो गुलशन में मचे शोर कुल कुल का । वहदत हो जिसमें भरा वस्ल तुम्भ गुलका ॥ शोके शराब का भरके पैमानाला । इश्क की सुराही हाथ में जाना-नाला ॥ मय पिला मुझे उस नूर का मैं खानाला । गुलशन

में गुलाबी रङ्ग तुशाहानाला। मालूम हाल हो नशे में आलम कुलका॥ वहेदत हो जिस्में भरा वस्ल तुम्फ गुला का। मैं तुझे पिलाऊं तू मैं मुझे पिलाये। जब लुत्फ इश्क का खूब दूबदू आये॥ मैं कहूं और दे तूभी यही फर्माये। वोः बात हो जिसकी बात न कोई पाये॥ कुदरत का करावा मेरे जमा में ढुलका। वहेदत हो जिसमें भला बस्ल तुम्फ गुलका॥ शीशे दिलमें भरदे तू मेरे अंगूरी। इस लिये कि होवे दिल की दूर कदूरी॥ वोः जलवा अपना दिखादे मुझको नूरी। कहे बनारसी कर दिलकी मुरादको पूरी॥ मैं पीके चाहकता रहे येः दिल बुलबुल का। वहेदत हो जिसमें भरा वस्ल कुम्फ गुलका।

## ख्याल जो मेरी आँखों से शराब टपकती है मस्ती में वोः मैं पीता हूं-बहेर छोटी।

चश्मों में भरा है रङ्ग गुलाबी गुल का। आश्कों को पियेंगे काम नहीं कुछ मुलका॥ ये आंख मेरी वहेदत का पैमाना है। अब इसी को हमने समझा मैखाना है॥ चश्मों से ज्यादा कोई न मस्ताना है। देखो तो सई में क्या रङ्ग शाहाना है॥ है भरा नशा आँखों में आलम कुलका। अश्कों को पियेंगे काम नहीं कुछ मुलका॥ जब चुएंगे आँसू मेरी चश्म गिरियां से॥ मैं समझके पीवेंगे इन्हें जी जांसे। मैं खोरी का नहिं लेंगे न नाम जबाँ से। रो रो के पियेंगे अश्क तबे विरियां से। हिचकियों से मेरे होगा शोर कुल कूलका॥ अश्कों को पियेंगे०॥ बादाम भी ये हैं नरगिस के प्याले हैं। देखा हमने ये पूरे मतवाले हैं॥ ये नैन हमारे गुलशन शुक्रा-

शैर—मिले उसके दहन से जब दहन मेरा तो जी जाऊँ। तमासा इश्क का तुमने न देखा हो तो दिखलाऊँ ॥ दहाने यार की लज्जत अगर्चे कुछ भी मैं पाऊँ। तो उठ लाश मेरी कब्र से जिंदा मैं कहलाऊँ ॥ यही आशकों की है दवा उस इश्क ने मुझे बताई है। लबे यार को लिखो मुर्दों की यही दवाई है॥ दिला के मुँह से मुँह मेरे और हंस के वोः कुछ बात करे। मुझ मरीज को जिलाये मौत को भी फिर मात करे ॥ क्या ताकत है कजा कि जो फिर मेरे ऊपर घात करे। अगर सामने आये बेजा अपनी औकात करे ॥

शैर—वोः उसके होठ में अमृत है पी मुर्दा भी जी जाये। जो कुश्ती इश्क की होवे तो उसमें जान फिर आये ॥ सदा ये कुम्बेजानी जब वोःअपने मुँह से फरमाये। तो उसके हुक्म से उट्ठूं वही जांबख्श कहलाये ॥ वही खुदा है मेरा औ कुछ उसी के यहाँ खुदाई है। लबे यार को लिखो मुर्दों की यही दवाई है॥ जिसके इश्क में मरा हूं मैं वोः चाहे तो फिर जिला सके। खुशी जो उसकी होवे तो जामें वस्ल भी पिला सके ॥ क्या ताकत यह लाश मेरी कोई बगैर उसके हिला सके। उसी में कुदरत ये है कि दिल से दिल को मिला सके ॥

शैर–बुलाओ उस मसीहा को मेरी अब जान जाती है। जिलाये जल्द मुझको वोः नहीं तो शान जाती है। मैं आशिक हूं उसी का इश्क की अब जान जाती है॥ मिलादे लब नहीं तो जान और पहेचान जाती है। बनारसी ने दवा आशिकों की यह अजाब बनाई है।लबे यार को लिखो मुर्दों की यही दवाई है ॥

को मरने का कहाँ खौफ खतर है। मेरी जान वो तो चाहता है जहाँ में नाम। आशिक हो सोई जाने फासिक क्या जाने यह काम॥ जिस जिसके पीछे पड़ा इश्क यह आकर मेरी जान। उसे मिट्टीमें मिलाया है॥ किसीको सूली दिया किसी का शिर कटवाया है। और किसीकी इसने तनसे खाल उतारी मेरी जान। फिर उसमें भुस भरवाया है॥ उसी खाल को उसने फिर कोड़ों से उडवाया है। लिया तख्त ताज सब लूट बादशाहों का मेरी जान। फिर उनको गदा बनाया है॥ बियाबान सेहरा में उन्हें कांटों पै घुमाया है॥

तोडा—जिसको ये रंज सहना हो वो इसमें आये। आये तो नहीं इस आफत से घबराये॥ मेरी जान तो फिर हो दुनियां ये सरनाम। आशिक हो जाने फासिक क्या जाने यह काम॥ जालिम है इश्क के और जुल्म लाखों हैं मेरी जान। सरपै आरे भी चलते हैं॥ बहर इश्क में जो डूबे वो नहीं उछलते हैं। हिंदू या मुसल्मां शेख बरहमन सारे मेरी जान। अपने हाथों मलते हैं॥ इसकी राह में जो आये वो नहीं निकलते हैं। यह वो आतिश है जिससे आग पैदा हो मेरी जान॥ जिगर में शोले बनते हैं। जैसे आपसे जले सती आशिक भी जलते हैं॥

तोडा—जो जले तो उनको हुई रोशनी आला। मशरिक से तामगरिब उनका उजियाला मेरी जान॥ पिये वो मैं बहेदत का जाम। आशिक हो सोई जाने फासिक क्या जाने यह काम॥ कह चुके अब हम अपना भी हाल कहते हैं मेरी जान। इश्क में गया मेरा सब दीन॥ मुफ्तमें उस माशूकने जबरनसे

ये लिया दिल छीन ॥ नहिं इधर के हम नहीं उधर के कहो किधर के मेरी जान । रहे जंगल के तिनके बीन ॥ दोनों जहाँ में इश्क ने मुझको कर दिया तेरह तीन । सोलहो कला जब उसने मुझे दिखाई मेरी जान ॥ हुआ फिर उसी में मैं लवलीन ॥ रंजको हम राहत समझे ये दिल से हुआ यकीन ॥

तोड़ा—कहे बनारसी राहत है रंज राहत है ॥ मुझको तो हमेशा इसी की कुछ चाहत है ॥ मेरी जान इश्क में मिला मुझे गुलफाम । आशिक हो सोई जाने फासिक क्या जाने यह काम ॥

**दवा इश्क की जिससे मुर्दा जीता है बहेर लँगड़ी ।**

मिला के लबसे लब उसने कितनों ही की लाश जिलाई है । लबे यार को लिखो मुर्दों की यही दवाई है ॥ मैं हूँ मरीजे इश्क मुझे ईसा किस तरह आराम करे । जुबाँ यार की जुबाँ से मिले तो ओः कुछ काम करे ॥ गुंचे दहन गर बोसा मेरा ले तो काम तमाम करे । मुझ मरीज को जिलाये जहाँ में अपना नाम करे ॥

शैर—बजुज इसके कहाँ जाने की अब,उम्मेद है मुझको । लबे शीरीं में बिल्कुल लज्जते तौहीद है मुझको ॥ ये ही मेरी दवा और इतनी ही फहमीद है मुझको । मिला दे लब से लब मेरे वोही फिर ईद है मुझको ॥ ये इलाज मेरा है और कुछ इसी में सफाई है । लबे यार को लिखो मुर्दों की यही दवाई है ॥ न कुछ कीमित में कीमत और न ये बात अक्सीर में है ॥ नहीं हिक्मत में नहीं कुछ हुकमा की तदबीर में है । अगर जिलाये मुझको तो ये ताकत कहाँ फकीर में है । जीस्त हमारी उस लबे यार की ओः तासीर में है ॥

शैर—मिले उसके दहन से जब दहन मेरा तो जी जाऊँ। तमासा इश्क का तुमने न देखा हो तो दिखलाऊँ ॥ दहाने यार की लज्जत अगर्चे कुछ भी मैं पाऊँ। तो उठे लाश मेरी कब्र से जिंदा मैं कहलाऊँ ॥ यही आशकों की है दवा उस इश्क ने मुझे बताई है। लबे यार को लिखो मुर्दों की यही दवाई है॥ दिला के मुँह से मुँह मेरे और हंस के वोः कुछ बात करे। मुझ मरीज को जिलाये मौत को भी फिर मात करे ॥ क्या ताकत है कजा कि जो फिर मेरे ऊपर घात करे। अगर सामने आये बेजा अपनी औकात करे ॥

शैर—वोः उसके होठ में अमृत है पी मुर्दा भी जी जाये। जो कुश्ती इश्क की होवे तो उसमें जान फिर आये ॥ सदा ये कुम्बैजानी जब वोःअपने मुँह से फरमाये। तो उसके हुक्म से उठूं वही जाँबख्श कहलाये ॥ वही खुदा है मेरा औ कुछ उसी के यहाँ खुदाई है। लबे यार को लिखो मुर्दों की यही दवाई है॥ जिसके इश्क में मरा हूं मैं वोः चाहे तो फिर जिला सके। खुशी जो उसकी होवे तो जामें वस्ल भी पिला सके॥ क्या ताकत यह लाश मेरी कोई बगैर उसके हिला सके। उसी में कुदरत ये है कि दिल से दिल को मिला सके ॥

शैर—बुलाओ उस मसीहा को मेरी अब जान जाती है। जिलाये जल्द मुझको वोः नहीं तो शान जाती है। मैं आशिक हूं उसी का इश्क की अब जान जाती है॥ मिलादे लब नहीं तो जान और पहेचान जाती है। बनारसी ने दवा आशिकों की यह अजब बनाई है। लबे यार को लिखो मुर्दों की यही दवाई है ॥

में हाथ धो बैठे ॥ अब तनहाई में आपी आप हो बैठे। कहे बनारसी उलफत की बातें भलियां। खागया समझ के कन्द जहर की डलियां ॥

## सबकाम छोड़के पाकइश्ककोकरोतोजद खुदा मिले

### ❀ बहेर लंगड़ी ❀

नेम धर्म औ कर्म दीन ईमान को दूर करो बाबा। आशिके सादिक बनो दिल इश्क में चूर करो बाबा ॥ तसबी को तोड़ो माला को छोड़ो हाथ प्यारे का गहो। गले सनम के लगो कुछ हाले दिल दिलवर से कहो ॥ टीका टुन मन क्या करना मत पढ़ नमाज रोजे न रहो। गम के भोजन करो जो गुजरे वो इस दिल पै सहो ॥ तीरथ बात सभी छोड़ो दरिया में इश्क के बीच बहो। इसी में गंगा और यमुना काशी मक्का तुरत लहो ॥ मिला चाहो उस यार से तो तुम इश्क जरूर करो बाबा। आशिके सादिक बनो दिल इश्क में चूर करो बाबा ॥ आचार का डालो अचार इस बात का जरा विचार करो। पाक मुहब्बत करो और जहां में कोई यार करो ॥ दिल से दिल औ मिला जिगर से जिगर खूब सा प्यार करो। लडा नजर से नजर उस दिलवर का दीदार करो ॥ पियो मुहब्बत की शराब दिल का कबाब तय्यार करो। बनो वैष्णव जो तुम यह मेरा कहा अख्तयार करो ॥ घोट के भंग छानो औ नशे का खूब सुरूर करो बाबा। आशिके सादिक बनो दिल इश्क में चूर करो बाबा ॥ वेद पुरान कुरान किताबों से है इश्क की बात बड़ी। ब्राह्मण सैयद की जातों से है इश्क की जात बड़ी ॥ और जहां के फन हैं जितने सबसे इश्क की घात

मैं इसमें सभी राग कहदूं । जान तक मागो तो कभी करूँ नहिं चूं ॥ तसद्दुक तनो बदन से हूं । मैं तुम परवारी हर तौर से हो जाऊं ॥ कहो सो खातिर को लाऊँ । कहा ये मैंने तो इश्क भी यों बोला तू आशिक है भोला बाला ॥ भेद सब उसने अपना मुझसे खोला । तो दो का एक हुआ चोला । कहे काशगिरी अब आगे क्या गाऊँ । कहो सो खातिर को लाऊँ ॥

## जहर को आबेहयात समझना इश्कमें मतलबतौहीद

### * बहेर छोटी *

इस कदर इश्क में हुई मुझे तलमलियां । खा गया समझ के कन्द जहर की डलियां ॥ कौसर के धोके दिया जहर का प्याला । मसनद को समझ खारों पर बिस्तर डाला ॥ काकुल पै हाथ पहुचा तो निकला काला । मन को मार के मैंने भरा आह का नाला ॥ दिल धड़का तो दरिया में तपीं मछलियाँ ॥ खागया समझके कन्द जहर की डलियां । इस्लाम समझ के दीनो मजहब को छोड़ा । और ईमां समझ के कुफर से नाता जोड़ा ॥ समझा था जिसको बहुत वो निकला थोड़ा । इस लिये ये मुँह को कुल जहान से मोड़ा । मालूम हुआ जो इश्कमें थीं छलबलियां ॥ खा गया समझ के कन्द जहर की डलियां ॥ अब खुदा समझ कर नजर बुतों पर डाली । औ अजाँ समझ के दिल ने आह निकाली ॥ समझे थे जिसको भरा वो निकला खाली ॥ जाहर करने को हुआ तो बात छिपाली । हैं मेरे इश्क की अर्श तलक झल झलियां । खागया समझ के कन्द जहर की डलियां ॥ दो समझ के पाया एक एक खो बैठे । लौलगा सनम की याद में जो जो बैठे ॥ हम हुई से इस दुनियां

है केहेर इश्ककी लहेर नहिं उतरे मेरी जान ॥ ठहरते इसमें पूरे जी । वोः आशिक नहिं मिले तुझे जो रहें अधूरे जी । एक आन में तेरी आन आन मिलती है मेरी जान ॥ तुझे जाने मनसूरे जी । कहे देवीसिंह मस्त मेरा दिल तुझको घूरे जी ॥

तोड़ा—कहे बनारसी मैं बहुत हुआ हैरान । पर और न देखा कहीं तेरा मक्कान ॥ मेरी जान तुझे इस दिल में पाया जी । नहीं दिखाई देता है नजरों में समाया जी ॥

## इश्कके खाने की दावत । बहेर डेवढी-राग सारङ्ग ।

इश्क आवोजी मैं सरपर बिठलाऊँ । कहो सो खातिर को लाऊँ ॥ जो निमकीं चाहो तो पियो हमारा खूं । चरपरा कहो तो दिल सेकूं ॥ अगर मैं मांगों तो अभी अरक भरदूं । जो तुम लैला हो तो मैं मजनूं ॥ काटदूँ बोटी दिल अपना परखाऊँ । कहो सो खातिर को लाऊँ ॥ मगर शीरीं कुछ चाहे तबीयत अब । तो मेरे मिलादो लब से अब ॥ आज आये हो फिर आओगे तुम कब । ये जी चाहता है लुटादूं सब ॥ भला मैं ढूंढूं तो कहाँ तुम्हें पाऊँ। कहो सो खातिर को लाऊँ ॥ बनादूं कपड़े सब उतार तन की खाल । तुम इनको पहेर रहो रङ्गलाल ॥ तुम्हें ख्वाहिस हो गर कुछ दुनियाँ का माल । तो दंदां बनादूं गौहर लाल ॥ मुझे गर बेचो तो अभी मैं बिक जाऊँ। कहो सो खातिर को लाऊँ ॥ जो जेवर पहरो तो मेरी उतारो खाल । मकां हाजिर है लामकां का ॥ शौक गर तुमको कुछ होवे गुलिस्तां का । मेरा तन बना बोस्तां का । मैं इसके ऊपर अब लाखों गुल खाऊँ ॥ कहो सो खातिर को लाऊँ । सुनो गर गाना तो ऐसी हिचकियाँ लूं ॥

मेहर तक से शरमाया जी। नहीं दिखाई देता है नजरों में समायाजी ॥ क्या गजब है तेरी शान जान कुरबान मेरी जान ॥ ठानकर दिलपर अपने जी ॥ सभी काम दिये छोड़ लगे अब तुझको जपने जी ॥ भरपूर नूर जहूर हूर के बेहतर मेरी जान ॥ मुझे वो आये सपने जी। मुझे ख्वाब में देख गये हम बन को तपने जी ॥

तोडा—कुछ दिनों तलक तप किया किये बहुतेरा। पर वहाँ ठिकाना हमें लगा नहिं तेरा मेरी जान ॥ मुल्क दर मुल्क फिर आया जी। नहीं दिखाई देता है नजरों में समाया जी ॥ है अजब यारकी आह दाह नहिं बुझत मेरी जान ॥ राह जो इश्क की आते जी। लाखों वजह के रंजो आलम गम सितम उठाते जी ॥ हैरां बारा मैंदां में बहुत फिरते हैं मेरी जान ॥ पास गैरों के जाते जी ॥ उन्हें नहीं तू मिले कोई घर बैठे पाते जी ॥

तोडा—हरदम दम रह रहके घबराता है। बल्लाह तेरा गम मुझे रोज खाता है। मेरी जान इश्क ने खूब सताया जी। नहीं दिखाई देता है नजरों में समाया जी ॥ हर दम तेरा गम आलम रहा करता है मेरी जान ॥ हुआ दिल पारे पारे जी। तेरे इश्क में मरा मुझे अब कोई न मारे जी ॥ दुशवार यार दीदार तेरा हरबार मेरी जान ॥ मिलें नहिं सदा नजारे जी। आह बड़ा अफसोस के तेरे जुल्म इशारे जी ॥

तोडा—क्या कसूर मेरा है तू मुझे बतलादे। यक नजर रहम की जरा हमें दिखलादे ॥ मेरी जान मेरा अब दम घबराया जी। जाहर नहीं दिखाई देता है नजरों में समाया जी ॥

मेरी जान ॥ चलें चाहे गर्दन पर आरे । इश्क किया मंसूर मारे सूली पर नज्जारे ॥

तोडा—फिर ओही शम्स तबरेज हुआ मस्ताना । है जिसके इश्क को कुल आलम ने जाना । मेरी जान किया अपने दिलको हुशियार । जिसकी झलक है फलक मलक और खलक तलक गुल्जार ॥ फिर दिलने मुझसे कहा बहुत बेकल हूं मेरी जान ॥ याद उस दिलवर की आये । रह रहके रोता हूं रातों दिन यह दिल घबराये ॥ किस तरह ताम्बुल करूँ सब्र नहिं आता मेरी जान ॥ बात नहीं किसी की अब भाये । इश्क आग लगी तन में गमसे जिगर जला जाये ॥

तोडा—दिल खाकसार कर दिया खाक में मिलके । अब जरा चैन नहिं पड़ता बिन कातिल के ॥ मेरी जान मिलेगा कब हमको दिलदार । जिसकी झलक है फलक मलक और खलक तलक गुल्जार ॥ फिर मैंने दिल से कहा बात यक सुन मेरी जान । सब्र है आशिक का खाना ॥ जो चाहे सो होवे इश्क में गमपर गम खाना ॥ कई लाख वजेह से बहुत तरह समझाया मेरी जान । कहा सब आशकों का माना । सुनके इश्कका हाल मेरा कहना दिलने माना ॥

तोडा—फिर इसे सब्र होगया मिला वोः हरदम । ये कहे देवीसिंह दूर हुआ दिलका गम ॥ मेरी जान कहे छन्द बनारसी ललकार ॥ जिसकी झलक० ॥

## खुदा के नूर को अपने दिलमें देखना । मतलब तोहीद—बहेर मेरी जान की ।

वोः झलक तेरी है फलक मलक नहिं पाये मेरी जान ॥

मेहर तक से शरमाया जी । नहीं दिखाई देता है नजरों में समायाजी ॥ क्या गजब है तेरी शान जान कुरबान मेरी जान ॥ ठानकर दिलपर अपने जी ॥ सभी काम दिये छोड़ लगे अब तुझको जपने जी ॥ भरपूर नूर जहूर हूर के बेहतर मेरी जान ॥ मुझे वो आये सपने जी । मुझे ख्वाब में देख गये हम बन को तपने जी ॥

तोड़ा—कुछ दिनों तलक तप किया किये बहुतेरा । पर वहाँ ठिकाना हमें लगा नहिं तेरा मेरी जान ॥ मुल्क दर मुल्क फिर आया जी । नहीं दिखाई देता है नजरों में समाया जी ॥ है अजब चारकी आह दाह नहिं बुझत मेरी जान ॥ राह जो इश्क की आते जी । लाखों वजह के रञ्जो आलम गम सितम उठाते जी ॥ हैरां वारा मैंदां में बहुत फिरते हैं मेरी जान ॥ पास गैरों के जाते जी ॥ उन्हें नहीं तू मिले कोई घर बैठ पाते जी ॥

तोड़ा—हरदम दम रह रहके घबराता है । बल्लाह तेरा गम मुझे रोज खाता है । मेरी जान इश्क ने खूब सताया जी । नहीं दिखाई देता है नगरों में समाया जी ॥ हर दम तेरा गम आलम रहा करता है मेरी जान ॥ हुआ दिल पारे पारे जी । तेरे इश्क में मरा मुझे अब कोई न मारे जी ॥ दुशवार यार दीदार तेरा हरबार मेरी जान ॥ मिलें नहिं सदा नजारे जी । आह बड़ा अफसोस के तेरे जुल्म इशारे जी ॥

तोड़ा—क्या कसूर मेरा है तू मुझे बतलादे । यके नजर रहम की जरा हमें दिखलादे ॥ मेरी जान मेरा अब दम घबराया जी । जाहर नहीं दिखाई देता है नजारों में समाया जी ॥

## इश्क की दावत—बहेर डेवढ़ी राग सारङ्ग ।

इश्क हजरतनी की हम पै मेहर्बानी । करूँ मैं क्या क्या मेहमानी ॥ नजर देने को दिल मैं अपना लाया । इसके बहुत पसंद आया ॥ इश्क ने मेरा जब लख्ते जिगर खाया । तो मैंने और भी बतलाया ॥ खून आशिक का ये है ताजा पानी । पीजिये इश्क मेरे जानी ॥ अश्क गोहर का जब गले हार डाला । इश्क ने कहा ये है आला ॥ चश्म में भर भर कर वो मैं गुलाला । इश्क के तईं दिया प्याला ॥ बन पड़ी मुझ से जो कुछ करी कदरदानी । इश्क की सभी बातमानी ॥ जिगर पर मेरे जो थे उल्फत के गार । दिखाया इश्क को वोः गुलजार ॥ और सीने पर गुल खाये कई हजार । दिखाई इश्क के तईं बहार ॥ माल जर सारा दे करके यही ठानी । किया तन अपना उरयानी ॥ और एक तोफा जो था सबमें भारी । जान होती सबको प्यारी ॥ इश्क के ऊपर वोः भी मैंने वारी । न जी देने से हुआ आरी ॥ कहूँ मैं इसके आगे अब क्या बानी । इश्क के हाथ है जिन्दगानी ॥ कि मैं हूँ आशिक है इश्क मेरा सरदार । हम हैं उसके फरमाबरदार ॥ बजुज आशकी के कुछ और न मेरा कार । इश्क के सिवा न कोई यार ॥ कहैं देवीसिंह हैं बनारसी ज्ञानी । हरेक छन्द जिसका हक्कानी ॥

## इश्क आने की खातिर और दाहत ।

### बहेर मेरी जान की ।

आवो आवोजी मेरे तहाराजइश्क आवोजी मेरी जान आज तुम यहीं करो आराम ॥ आजतुम्हें देखा है बहुत दिन

से था नाम सरनाम । देखा तो लिबासे नंग बदन नाजुक है मेरी जान ॥ तेरा जामा है तने उरियां । यही तौर मेरा है हमेशा रहूं लबे विरियां ॥ गरदीद ये तर है आप तो मैं रोता हूं मेरी जान । रहें हरवक्त चश्म गिरियां ॥ आप देखें हूरों को मेरी आँखों में बसें परियां ॥

तोड़ा-मेरा तेरा दो नहिं एक ही दिल है। जख्मी है जिगर तेरा तो मेरा घायल है ॥ मेरी जान दुई का मेरा न तेरा कलाम । आज तुम्हें देखा है बहुत दिन से था नाम सरनाम ॥ तू जखम जिगर खा खा के खून पीता है । मेरी जान तो मैं गम खायके जीऊं जानी ॥ प्यास अगर्चे लगे तो फिर रोरो के पीऊं पानी । तू बियावान सहेरा की सैर करता है मेरी जान ॥ तुझे भाता है वीरानी । मुझ में तुझ में कुछ भी फर्क नहीं है मेरे दिलजानी ॥

तोड़ा-तू राजनेहा है तो मैं छिपाहूं तन में । तू मेरे दिल में बसा मैं तेरे मन में ॥ मेरी जान न भूलूं तुझे मैं आठों जाम । आज तुम्हें देखा है बहुत दिन से था नाम सरनाम ॥

मालूम हुआ गर्दिश तुझको गाती है मेरी जान तो मैं खुश हूं हैरानी में । तूने गुलखाये तो दाग मुझे दिये निशानी में॥ तू मजनू की सूरत है आशके लैला मेरी जान लिखा तेरी पेशानी में । मैं भी बहुत लागा रहूं इश्क लग गया जवानी में ॥

तोड़ा-तू गदा हुआ दुनियां की खाक उड़ाई। मैंने भी खाक सारी में धूम मचाई ॥ मेरी जान हुए हम तुम दोनों बदनाम । आज तुम्हें० ॥

बे खौफ है तुझको नहीं किसी का डर है मेरी जान ।

तो मुझको भी है नहिं खटका । मेरा तेरा दोनों का दिल उसी से है अटका ॥ मंसूर है तू तो मैं भी शम्स तबरेज हूं मेरी जान ॥ आशकी का है यही लटका । खाल उतारी दार चढ़े, ये प्यार का है झटका ॥

तोडा—कहैं बनारसी नहिं किसी ने मारे । कै लाख दफा गर्दन पर फिर गये आरे । मेरी जान जिस्म से मुझे तुम्हे नहिं काम ॥ आज तुम्हें० ॥

## इश्क में सब्र करना तकलीफ में घबराना नहीं।

### मार्फत बहेर ।

### मेरी जान की ।

अय दिल तू अब लग गया तो क्यों घबराता मेरी जान । सब्र कर मिलेगा तेरा यार । जिसकी झलक है फलक मलक और खलक तलक गुल्जार । फिर दिलने मुझसे कहा कि मैं हूं आशिक मेरी जान ॥ जरा नहिं होय सब्र हममे । बेताब हुआ सीमाब से ज्यादा जालिम के गम से ॥ कोई लगादे मेरे पर तो उड़ूं इस खातर मेरी जान ॥ मिलूं मैं अपने हम दम से । बेचैन हुआ इस कद्र मेरा दम घबराया दम से ॥

तोडा—जल्दी से मुझे कोई वहां तलक पहुँचावे । यक नजर रहम की जरा मुझे दिखलादे ॥ मेरी जान मुझे दीदार सिर्फ दरकार । जिसकी झलक है फलक मलक और खलक तलक गुल्जार ॥ फिर मैंने दिलसे कहा अरे बे सब्र मेरी जान । सब्र है बड़ी चीज प्यारे । उसी को दिलबर मिले जो कि अपने दिल को मारे ॥ जो आशिक हैं वोह जरा आह नहिं करते

मेरी जान ॥ चलें चाहे गर्दन पर आरे । इश्क किया मंसूर मारे सूली पर नज्जारे ॥

तोडा—फिर ओही शम्स तबरेज हुआ मस्ताना । है जिसके इश्क को कुल आलम ने जाना । मेरी जान किया अपने दिलको हुशियार । जिसकी झलक है फलक मलक और खलक तलक गुल्जार ॥ फिर दिलने मुझसे कहा बहुत बेकल हूं मेरी जान ॥ याद उस दिलबर की आये । रह रहके रोता हूँ रातों दिन यह दिल घबराये ॥ किस तरह ताम्बुल करूँ सब्र नहिं आता मेरी जान ॥ बात नहीं किसी की अब भाये । इश्क आग लगी तन में गमसे जिगर जला जाये ॥

तोडा—दिल खाकसार कर दिया खाक में मिलके । अब जरा चैन नहिं पड़ता बिन कातिल के ॥ मेरी जान मिलेगा कब हमको दिलदार । जिसकी झलक है फलक मलक और खलक तलक गुल्जार ॥ फिर मैंने दिल से कहा बात यक सुन मेरी जान । सब्र है आशिक का खाना ॥ जो चाहे सो होवे इश्क में गमपर गम खाना ॥ कई लाख बजेह से बहुत तरह समझाया मेरी जान । कहा सब आशकों का माना । सुनके इश्कका हाल मेरा कहना दिलने माना ॥

तोडा—फिर इसे सब्र होगया मिला वोः हरदम । ये कहे देवीसिंह दूर हुआ दिलका गम ॥ मेरी जान कहे छन्द बनारसी ललकार ॥ जिसकी झलक० ॥

## खुदा के नूर को अपने दिलमें देखना । मतलब तोहीद—बहर मेरी जान की ।

वोः झलक तेरी है फलक मलक नहिं पाये मेरी जान ॥

अब मिला सनम तू हमें पट घटके ॥

## ख्याल खुदा की याद का-- बहेर छोटी।

हर जगे पै देखा कहीं नहीं तू देखा। जहाँ याद है तेरी वहीं२ तू देखा॥ गये बिहिश्त में हम वहाँ न तुमको पाया। बुतखाने में भी नहीं नजर तू आया॥ काबा किबला मक्का मस्जिद ढुंढ़वाया। काशी मथुरा में बहुत दिनों भरमाया॥ जाजाकर गङ्गासागर सिंधु नहाया। मैं तेरे इश्क में चारों तरफ उठ धाया॥ नहिं मैंने प्यारे और कहीं तू देखा। जहाँ याद है तेरी वहीं२ तू देखा॥ जङ्गल बस्ती सब उजाड़ हमने छाना। नहीं देखा तुमको देखा सभी जमाना॥ कोई मतवाला कहता है कोई मस्ताना। जो२ कुछ जिसने कहा वो हमने माना॥ कूबकू फिरा दर२ का हुआ दिवाना। नहिं पाया प्यारे तेरा कहीं ठिकाना अब याद करो तो दिल में यही तू देखा। जहाँ याद है तेरी वहीं वहीं तू देखा॥ सर पटक पटक कर पहाड़ पर दे मारा। और आह आह कर करके बहुत पुकारा॥ देखा देवल देहरा और ठाकुर द्वारा। सरतापा सबको देख देख कर हारा॥ घर बार तजा आलम से किया किनारा। जैसी कुछ गुजरी वैसे किया गुजारा॥ ये बातें हमको याद रहीं तू देखा। जहाँ याद है तेरी वहीं२ तू देखा॥ सब देखा हमने गुलशन और गुल्लाला। बन फकीर बन २ फिरा पहन बनमाला॥ देखा पत्ता२ औ डाली डाली। है सबमें तू औ सबसे रहै निराला। यह बनारसी का कलाम है रस का डाला। है अरज मेरी यह सुनो नंद के लाला॥ तुम्फ दिलवर पर आशिक हूँ नहीं तू देखा। जहाँ याद है तेरी वहीं वहीं तू देखा॥

वोः अकसीर करे और आबको वो गौहर कर दे। पत्थर को पारस कर दे और लोहे पर जौहर कर दे॥ देवीसिंह ये कहै वोः बँधुये को सबका अफसर कर दे। बनारसी वे पढ़ा है उसकी जबां पै कुल दफतर कर दे॥ अकल और तकदीर का भी बिन खुदा काम कोई सरे नहीं। मौत भी उसका कुछ न कर सके कभी वोः हरगिज मरे नहीं॥

## ख्याल खुदा के ढूँढ़ने का-बहर छोटी।

हम तेरे इश्क में यार बहुत दिन भटके। अब मिला सनम तू हमैं खुले पट घटके॥ कई बार गया सर तेरे इश्क में कटके। फिर पाया हमने नाम तुम्हारा रटके। किये रञ्ज अलम मंजूर जरा नहिं ठटके॥ दिल की दहसत सब निकल गई छट छटके। कई लाख वजह के दिये हैं तूने झटके॥ अब मिला सनम तू हमें खुले पट घटके। जिस वक्त तेरी वह जुल्फ नागिनी लटके॥ कोई इधर से हो जाय उधर उधर से चटके। गर देखे काला नाग तो सर को पटके॥ चढ़ जाय जहर जुल्फोंका वा घरको सटके। हम आशिक हैं मजबूत कहाँ जांय हटके॥ अब मिला सनम तू हमें खुले पट घटके। लैलासे लगाया दिल मजनूने डटके॥ तन बदन दिया सब काट उसीसे अटके। शूली पै चढ़ा मंशूर उसी पर मटके॥ नहीं जरा नोंक सूली की जिगर में खटके। देखा जो मुझे दिल गया जहाँ से फटके अब मिला सनम तू हमैं खुले पट घटके। जब खुले किवाड़े यार कपट के पटके। दिलमें पाये दीदार वो बंशीवट के॥ शिर मोरमुकुट कटि कसे जरीके हटके। कहे देवीसिंह हैं अजब खेल नटखटके॥ कहैं बनारसी हम आशिक नागर नटके।

कहै बनारसी के ख्याल पै कोई खयाल करे। क्या ताकत है काल की जो फिर उसका बाँका बाल करे॥ ऐसा सखुन सुनने से दिल हरचन्द किसी का भरे नहीं। चींटी पर हाथी चढ़ बैठे तो वोः चींटी मरे नहीं॥

तथा

खुदा फजल जो करे बन्दा तो किसी से मुतलक डरे नहीं। मौत भी उसका कुछ न कर सके कभी वो हरगिज मरे नहीं॥ अदना को आला कर दे वो अपनी जबां हिलाने से। लिखा हुआ तकदीर का भी मिट जाये उसके मिटाने से॥ बुतखाना कावा है बना अब उसी के देख बनाने से॥ उसके काम हैं अलाहिदा इस दुनियाँ और जमाने से॥ कुल उसका अख्तियार जहां में और कोई कुछ करे नहीं। मौत भी उसका कुछ न कर सके कभी वो हरगिज मरे नहीं॥ राई को पर्वत कर दे औ पर्वत से राई करदे। दुई हो जिस्के दिल में वोः चाहे तो यकताई करदे॥ दोस्त को वोः दुश्मन करदे औ दुश्मन को भाई करदे। बेवकूफ को अकल दे और स्याने को सौदाई कर दे॥ मेरा दम तो सिवा खुदा के किसी का भी दम भरे नहीं। मौत भी उसका कुछ न कर सके कभी वो हरगिज मरे नहीं॥ क्या जाने क्या लिखा है इस तकदीर में और क्या लिखेगा वोः। रोजे अज्लका किसे हाल मालूम इसे तुम बतला दो। जो तुम इससे नहीं हो वाकिफ तो इस पर कायम न रहो॥ जो चाहै सो करे वही हर वक्त उसी की याद करो॥ वोः सबके नजदीक भी है और कोई तो उससे परे नहीं मौत भी उसका कुछ न कर सके वोः हरगिज मरे नहीं॥ खाक को

दिल में दिलवर का इश्क समाना । वोः खुदा को देखे देखे नहीं जमाना ॥ देवीसिंह की बातें सब रुस्तमजी माने । हीरे की खान को कोई जौहरी पहचाने ॥

## ख्याल खुदा के फजल का—बहेर खड़ी ।

महर जो उसकी होवे तो वह मार मारसे डरे नहीं । चींटी पर हाथी चढ बैठे तो श्रो चींटी मरे नहीं ॥ वह चाहे तो शराब को आबेहयात का जमा करे । खुशी जो उसकी होवे तो वोः कुफ्र को भी इस्लाम करे । नवाजियों से खफा रहे रिन्दों के साथ कलाम करे । बुतखाने मस्जिद को तोड़कर मैखाना सर्नाम करे ॥ ऐसे ऐसे काम तो उसके सिवाय और कोई करे नहीं । चींटी पर हाथी चढ बैठे तो वोः चींटी मरे नहीं ॥ डाले कोई बारूद में आतिश औ वोः दारू जले नहीं । हजार मनकी चक्की हो पर एक मूंग को दले नहीं ॥ पानी पर तैरे वो बतासा लाख वर्ष तक गले नहीं ॥ उसकी कुदरत के आगे कुछ जोर किसी का चले नहीं ॥ सब उसके नजदीक हैं और कोई बात तो उससे परे नहीं । चींटी पर हाथी चढ बैठे तो वोः चींटी मरे नहीं ॥ बाँधे कच्चे सूत से जिसको वह कैदी क्यों कर छूटे । मदद जो उसकी हो तो आहन की संकल दम में टूटे ॥ बड़े बड़े रुस्तम को कायर मार के सरतापा लूटे । पत्थर पर राई दे मारे तो पहाड़ दम में फूटे ॥ सब कुछ वोः करता है पर अपने जिम्में कुछ धरे नहीं । चींटी पर हाथी चढ बैठे तो वोः चींटी मरे नहीं ॥ गलियों के पत्थर को वोः चाहे हीरे मोती लाल करे । बना दे वो कोयलों की मोहर एक दम में मालामाल करे ॥ देवीसिंह